भक्त जनों,

जै बावैरी ।

भगवान श्री रामदेवजी महाराज ने इस "रामदेव-चरित-मानस" का मुझे निमित्त बनाकर "राम-चरित-मानस" में आई इस उक्ति को चरितार्थ करने का प्रत्यक्ष परचा दिया है कि "जेहि पर कृपा करहि जनु जानी, कवि-उर-अजिर न चावहिं बानी" । मैंने तो लिपिक की भांति केवल लिखने का काम किया है । प्रारंभ करने से पूर्व प्रेरणा तथा हिम्मत बावै ने दी । कौतूहलवश बावै का स्मरण करके लिखना प्रारभ किया तो मानो अर्ध चेतनावस्था में लिखता गया । मन में बस कर बाबा बोलते गये । प्रेरणा देते गये । शब्द एवं पंक्तियाँ बनते, निकलते तथा लिखे जाते रहे । प्रत्येक चरण की समाप्ति पर मैं पुनः पढ़कर स्वयं चकित होता रहा कि यह कैसे सम्पन्न हो सका ? समाप्ति के तुरन्त बाद ही पुनरावृत्ति करने पर ऐसा लगा कि यह मेरा लिखा हुआ नहीं है ।

फिर भी भगवान की प्रेरणा से मैंने कुछ पुस्तकों का सहारा अवश्य लिया । जिनके लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करने में ही परम कर्तव्य है ।

अधिकांश कथा का आधार तो जोधपुर निवासी संत रामप्रकाशजी की पुस्तक "श्री रामदेव ब्रह्म पुराण" ही है । यत्र-तत्र श्री मूलचन्दजी प्राग की पुस्तक 'बाबा श्री रामदेव रामायण" से प्रेरणा तथा सहारा लेता रहा हूं । इसके अतिरिक्त श्री सोनाराम विश्नोई राजस्थानी विभाग जोधपुर विश्वविद्यालय की पुस्तक "बाबा रामदेव सम्बन्धी लोक-साहित्य", पर्याप्त सहारा प्राप्त किया है । विशेषकर नेतलदे को परचा, रानी-नादे को परचा, अंधे साधु को परचा, हेमीबाई को परचा, हीरानंद माली को परचा के चरणों का आधार श्री विश्नोई की पुस्तक ही हुई है । रासे खाती के परचे का विवरण अन्यत्र नहीं मिला था । जो बाबा के भक्तों की "नवरंग" नामक कलकत्ते की संस्था की सन् 1985 की वंदना-

पुस्तिका में श्री पुरुषोत्तम थानवी द्वारा संकलित "परचौ बगसै खाती नै" में मिल गया अंतिम चरणों के समय पर्याप्त प्रेरणा राधेश्याम रामायण की तर्ज में रचित मद्रास से प्रकाशित पुस्तक "अवतारी श्री रामदेवकथा' से प्राप्त हुई। सिरोही के राजा सूरे देवड़े को परचे वाले चरण तथा सारुंडे री बाई सूजों ने परचो के चरण के कथानक बीकानेर निवासी बाबै के भक्त उदारामजी हठीला ने दिये। चौबीसवें चरण के पर्याप्त भावों के प्रेरक भगवान आदि शंकराचार्य के उपदेश तथा स्वामी सोमेश्वरानंदजी महाराज एवं पं. दुर्गादत्तजी ओझा (सारस्वत) के उपदेश रहे। परन्तु चौबीसवें चरण के अधिकांश भावों की प्रेरणा स्वामी रामसुखदासजी महाराज के उपदेशों एवं गीता तथा रामचरित् मानस के अध्ययन तथा पाठों से मिली। इन सभी महानुभावों एवं सतों के प्रति मेरा हार्दिक आभार है। यद्यपि प्रधानतया यह पुस्तक तो बावा रामदेव की ही माया-रचना है।

यह पुस्तक कोई कलात्मक या साहित्यिक उत्कृष्ट रचना नहीं है। इसमें तो बाबै के नाम व गुणों के गान के साथ बाबै की प्रेरणा से उद्गमित भक्ति के सरल एवं साधारण भावो को राजस्थानी (शहरी-बीकानेरी) भाषा में छंद, गण, लय का यथासभव निर्वाह करते हुवे सतुकात कवि में लिपि-बद्ध करने का लघु प्रयास किया गया है। हिन्दी, उर्दू, संस्कृ आदि के प्रचलित शब्दों का प्रचुर समावेश जरुरी था जिनको राजस्था भाषा ने पचा लिया है।

चौपाइयों, दोहों, सोरठो आदि में लिखने की प्रेरणा स्वामीजी रा सुखदासजी महाराज की प्रेरणा से राम-चरित-मानस के पाठ करने मिली है। इसके लिए तो जितना आभार प्रदर्शित किया जाये थोड़ा है

मुझे दृढ़ विश्वास है कि :—

छमिहहि सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बाल वचन मनलाई॥
भाषा-भनिति भोरि मति मोरी। हँसिवै जोग, हँसै नहिं खोरी॥

निवेदक—बुलाकीदास भोजक (एडवोके
बीकानेर

ॐ

श्री रामदेव-चरित-मानस

राम-श्याम-रामदेव राम-श्याम-रामदेव

पोथी चरणार्पण

राम-श्याम-रामदेव

बाबा पोथी आप री, दी भक्तों रै हेत।
थोरै चरणों में करु, अर्पण विनय समेत।।

राम-श्याम-रामदेव

राम-श्याम-रामदेव राम-श्याम-रामदेव

(राजस्थानी लघु-भक्ति-काव्य)

ॐ

आरती धजाबंद री

हुवै आरती धजाबंद री, अणहद नाद हुवै भारी।
खमा धणी नै, खमा पीर नै, जै जै धजाबंद धारी ।। हुवै आरती ।।
लाछाँ-सुगना करै आरती, डाली जावै बलिहारी।
चँवर ढुळै भाटी हरजी रो गावै आरती नर-नारी ।। हुवै आरती ।।
झालर, शख, नगारा बाजे, मैक धूप री है न्यारी।
बरसावै सुर सुमन गगन सूं, हरखावै सृष्टी सारी ।। हुवै आरती ।।
अजमल घर पालणै प्रगटिया, आया माया-तन धारी।
मैणादे रा लाल लाडला, रामदेव हरि अवतारी ।। हुवै आरती ।।
केसरिया वार्गो तन सोवै, मस्तक तुरवो हद भारी।
धजाबंद भालो कर छाज, लीलूड़ै री असवारी ।। हुवै आरती ।।
घिरत-चूरमो, चढ़ै मिठाई, थाळ न मिसरी माळा री।
भगती-भीना रिख्या, न्हावण, परसादी पावै थांरी ।। हुवै आरती ।।
देश-देश रा आवै जातरी, परचा मिलै चमत्कारी।
भक्त प्रसून हुवै भगती रा मैक भक्ति री विस्तारी ।। हुवै आरती ।।
आँख्यों आधा, कर-पग पँगला, सुत पावै बध्या नारी।
निरधन रा भडार भरै, सरनै आनै नर दुखियारी ।। हुवै आरती ।।
भूमडळ री अंबर गूंजै, धजाबद-मैमा भारी।
रामरूप सुमिरै निष्कामी, देव-भक्ति दुखियो धारी ।। हुवै आरती ।।
अन धन पावै विपदा जावै, करै आरती सुख-कारी।
ज्ञानी गावै, मुगती पावै, कामी सुख रा अधिकारी ।। हुवै आरती ।।
न्यांव भँवर मे है डूलै री, कर्म-भार बोझो भारी।
नाथा हेलो आप सांभळो, नैया पार करो म्हारी ।। हुवै आरती ।।

ॐ

रामा पीर री आरती

ॐ जय रामा पीरा, हो बाबा सुगनों रा वीरा ।।
नाथ भक्त डाली रा, सुत अजमल जी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 1 ।।
लाल लाडला जननी रा, वर नेतल पतनी रा, हो बाबा नेतल पतनी रा ।।
मालक मरु धरती रा, भूखा भगती रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 2 ।।
त्रेता सरजू तीरा द्वापर तट जमना जी रा, हो बाबा तट जमना जी रा ।।
कळजुग मरु भूमी रा, पुण्य किया धीरा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 3 ।।
नाथ द्वारका जी रा, धणी रुणेचा नगरी रा, हो बाबा पच्छम धरती रा ।।
विष्णु, राम जी रा, अवतार कृष्ण जी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 4 ।।
भेद मिटाय सभी रा, मेटी दलितों री भीरा, हो बाबा दलितों री भीरा ।।
ध्यावै सब जाती रा, भक्त बाप जी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 5 ।।
सत चढ़िया सगती रा, आवै भीना भगती रा, हो बाबा भीना भगती रा ।।
पुण्य जमी रा, दरशन पाय समाधी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 6 ।।
धजाबद धारी रा सेवक मन नर-नारी रा, हो बाबा मन नर-नारी रा ।।
खम्मा धणी रा, जय-जयकार पीर जी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 7 ।
चढै चूरमा घी रा, लागै ठाठ मिठाई रा, हो बाबा ठाठ मिठाई रा ।।
ढिग नारेळ, गिरी रा, माळा, मिसरी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 8 ।।
न्हावण-नीर समाधी रा, अर चरण, मूरती रा, हो बाबा चरण मूरती रा ।।
देख्या धूप, आरती रा फळ भगती रा । ॐ जय रामा पीरा ।। 9 ।।
दे परचा सिद्धी रा, बजिया पीरों रा पीरा, हो बाबा पीरों रा पीरा ।।
तारणिया दरजी रा, परचा मिसरी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 10 ।।
तिरणिया किश्ती रा धारण किया गळै हीरा, हो बाबा किया गळै हीरा ।।
कंचन किया शरीरा, नेतल पँगळी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 11 ।।
ज्ञान-नेत्र खोल्या हरजी रा, दरशण प्रभुजी रा, हो बाबा दरशण प्रभुजी रा ।।
लाल हजारी रा, खोटा अणभागी रा ।। ॐ जय रामा पीरा ।। 12 ।।

क्रंदन सेठांणी रा, सुण झट आया वण वीरा, हो बाबा आया वण वीरा।
सिर, धड़ जुड़ दलजी रा, परचा चोटी रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१३॥
रूपादे राणीरा, संकट देख्या गम्भीरा, हो बाबा देख्या गंभीरा।
बाग लग्या थाली रा, मन खुश नृपती रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१४॥
रोग मिटे रोगी रा, खेलै पूत निपूती रा, हो बाबा पूत निपूती रा।
परचा अणगिणती रा, हुया बावड़ी रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१५॥
भैंह वधकारी रा, परचा नेजाधारी रा, हो बाबा नेजाधारी रा।
मुंआं जियावणहारी रा अवतारी रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१६॥
गंगा-जमना नीरा, धोवै चरण बापजी रा, हो बाबा चरण बापजी रा।
देव सुरेशपुरी रा, बोलै जय पीरा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१७॥
लाछां, सुगना बाई रा, कर थाल् आरती रा, हो बाबा थाल् आरती रा।
चंवर डुलै हरजी रा, दंडवत डाली रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१८॥
शंख, नगारा, झांझ, मजीरा, नाद टोकरी रा, हो बाबा नाद टोकरी रा।
धूप अगरबत्ती रा, दरश आरती रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥१९॥
गावै भजन आरती रा, सुख मिलै जिन्दगी रा, हो बाबा मिलै जिन्दगी रा।
अंत विपत्ती रा, वैभव संपत्ती रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥२०॥
गूंजे गहन गंभीरा, नभ नव-खण्डा अवनी रा, हो बाबा पूरी पृथ्वी रा।
जस मरुधर-धणी रा-रामकंवरजी रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥२१॥
हेला बूलै री बिनती रा, सुण वीरम-वीरा, हो बाबा सुण वीरम-वीरा।
दाता भगती रा, सुख, सिद्धी, मुगती रा ॥ ॐ जय रामा पीरा ॥२२॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

बाबा–चालीसौ

दोहा–गणपति, शारद, हरि सुमिरि गुरुवर पद उर धार ।
बाबा चालीसौ पढ़ूं, जो दायक फल चार ॥ १ ॥
जय कंवरों अजमाल रा, जयति द्वारकानाथ ।
गुण गाऊं कर वंदना, धर चरणों में माथ ॥ २ ॥

चौ.–जय-जय रामदेव अवतारा, द्वारकानाथ कहे जग सारा ॥ १ ॥
पर ब्रह्म, पूरण, अविनाशी, विष्णु स्वरूप रुणेचा वासी ॥ २ ॥
अजमलजो रा कंवर कृपाला, मैणांदे रा लाल दयाला ॥ ३ ॥
सुगनो रा सुखदाता वीरा, भ्राता ब्रह्मदेव भाई रा ॥ ४ ॥
नैतलदे रा प्रिय भरतारा, रोगी तन कंचन किय सारा ॥ ५ ॥
मामा अमरसिंह भाणू रा, जीवन दियो मनोरथ पूरा ॥ ६ ॥
प्रभु रो सायर मित्र सुदामा, डाली परम भक्त सरनामा ॥ ७ ॥
सायर, अजमल दृढ़ व्रत धरियो, बांझपणों दोनों रो हरियो ॥ ८ ॥
पच्छम धरा दुखी, न चलै वस, ले अवतार मारियो राखस ॥ ९ ॥
भक्त उधारण, दुष्ट संहारा, दलित जनों रा संकट टारा ॥ १० ॥
अणहुंवणी, पण परतक नैचो, रातूं-रात वस्यो रोणेचो ॥ ११ ॥
राईको समध्यों संतायो, पूगल पौच आप बचायो ॥ १२ ॥
पड़िहारों रो दंभ मिटायो, दुख कटिया सुगनो सुख पायो ॥ १३ ॥
दलजी सोढ़े रो दुख हरियो, नैतल रो तन कंचन करियो । १४ ॥
सालयो मुंई मिनी ढक मेली, उठ दौड़ी, मैमा अलबेली ॥ १५ ॥
सांप डस्यो, स्वारथियो मरियो, पीर लजाया, जीवित करियो ॥ १६ ॥
पीर पौच था, ओछो आसण, ज्यो वैठा ज्यों बढ़ियो क्षण-क्षण ॥ १७ ॥
पीरों हठ धरियो धक्कै सूं, आया ठौत्र तुरत मक्कै सूं ॥ १८ ॥
सिद्धी देख पीर हरखाया, थे पीरों रा पीर कहाया ॥ १९ ॥

सेठ बोयतो आप बुलायो, दे आदेश, विदेश पठायो ।। 20 ।।
ले धन-माल, ज्याज में टुरियो, बीच समंदर मोसम फुरियो ।। 21 ।।
बौत वड़ो तोफोन उमड़ियो, की पुकार संकट पड़ियो ।। 22 ।।
ज्याज लगायो आप किनारै, हाथ उठाय बोरखो धारै ।। 23 ।।
हरखू, बीरम इचरज करियो, देख्यो हाथ भाग सूं भरियो ।। 24 ।।
लाखो आयो, लेकर मिसरी, लूण बतायो, बुद्धी निसरी ।। 25 ।।
मिसरी करी लूंण सौ खारो, जद रोयो लाखो बणजारो ।। 26 ।।
पाछो आय, पगाँ में पड़ियो, मिसरी हुयगी, लूंण निवड़ियो ।। 27 ।।
वेद-पुराँण सनातन भाखै, प्रभु भक्तों री लिज्या राखै ।। 28 ।।
लेवण खातर आप समाधी, डाली वचन सिद्धि नै साधी ।। 29 ।।
चीज्यों जिकी बताई डाली, सै निवळी, जौंणे खुद घाली ।। 30 ।।
थी बाबै री लीला सारी, गौरव दियो भक्त नै भारी ।। 31 ।।
जिनस्यो तीन समाधी मेली, हरखू लायो अजब पहेली ।। 32 ।।
बाबै री इज्ञा नहि मौनी, खोद समाधी, करली हौनी ।। 33 ।।
कुळ री सिद्धि सान गमाई, ले सराप, नादारी पाई ।। 34 ।।
हरजी अक्षय झोळी पाई, बाबै री मैमा फैलाई ।। 35 ।।
कैद हजारो हाकम करियो, परचौ हुयो, भक्त सूं डरियो ।। 36 ।।
दळजी सेठ करण नै दरसन, गैणैचै टुरियो मन परसन ।। 37 ।।
लूंट मारियो डाकू मग मे, जौणे ओ परचो सब जग में ।। 38 ।।
सुणियो रुदन, आप प्रभु आया, प्राण पाय दरशण भी पाया ।। 39 ।।
बछड़ो मरियो, गाय रंभाई, आय, जीवाय, समाधी पाई ।। 40 ।।

बाबा चाळीसो सुखदाई, बूलै गायो, इज्ञा पाई ।।

दोहा—बाबा चाळीसो जपै, भक्त जिको चित लाय ।
तीनूं ताप मिटै, मिलै सिद्धि, परमपद पाय ।। 3 ।।

रामा, राम, रमा-पते, श्रीपते, नैतल-पते, पीर जी ।
रुक्मिणि, कुबजा प्रियपते, जदुपते, राधा-रमण, रामशा ।।
भैरु दानव अरि, तुंवर कुळ-रवि, डाली भगत रा प्रभो ।।
विष्णु, रघुपति, द्वारकाधिपति रा अवतार, माया पते ।। 1 ।।

दोहा—राम, कृष्ण अरु रामशा, विष्णु रा अवतार ।
बूली आयी शरण में, करदो बेड़ो पार ।। 2 ।।
कळजुग में अवतार थों, लियो द्वारकानाथ ।
भालो ले लीलै चढो, बूलो जोड़े हाथ ।। 3 ।।
दुख मेटै, करुणा करे, सारे सिगळा कोम ।
भक्तों रे हिड़दे बसै, रीणेचे रो श्याम ।। 4 ।।
हुई, अणहुई टाळजो, बाबा करजो मैर ।
जरा-जमारो मुधर; उर उठै भक्ति री लैर ।। 5 ।।
मिलै शरण, दरशण, मिटै मन रा सिगळा द्वंद ।
भोजक बूलै रा कटै, जनम-मरण रा फंद ।। 6 ।।

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

पहला चरण

रणसी-खींवण

विधन हरण, मगल करण, गौरी-सुत गणनाथ।
विनय करूं दो बुद्धि वर, गुरु-पद राखूं माथ ।। 1 ।।
सिवरूं माता शारदा हरिहर रा गुण गाय।
रौणेचै रे नाथ नै ध्याऊं मन-चित लाय ।। 2 ।।
शंकर-गिरिजा पौंवसी, राम-भक्ति बगसाय।
रामदेव-चरित-मानस, हिरदय में आजाय ।। 3 ।।
शिव री किरपा सूं लिखूं प्रभु रा चरित बखांण।
मंद बुद्धि, साधन रहित, हीमत शिव-पद तांण ।। 4 ।।
शिव री किरपा सूं करै, किरपा दीनानाथ।
उर बस बावो बोलसी, लिखतो जासूं साथ ।। 5 ।।
रामदेव री कथा सूं कलिमल सब धुप जाय।
बिन श्रद्धा विश्वास रै, भक्त लाभ नहिं पाय ।। 6 ।।
जीव चराचर, भक्तगण, नै सविनय सिर नाय।
करूं वंदना, बापजी, देसी ग्रंथ लिखाय ।। 7 ।।

चौ.—पाण्डव वंशज तुंअर कहाया, छत्री धर्म पाळता आया।
राज हस्तिनापुर में करता, परजा सुखी, दुष्ट सब डरता।
आज वजै वा दिल्ली नगरी, जौणै जनता सारै जग री।
हुयो अनंगपाल इक राजा, सुख वैभव रा गाजा-वाजा।
दो बेट्यों थी पुत्र न पायो, राजा रो मन चिन्त्या छायो।
नाम सुन्दरी कमला धरिया, ब्यांव हरख सूं वौरा करिया।
कमला परनाई अनूप नै, सोमेश्वर चौहान भूप नै।
थो राजा अजमेर राज रो, हाल सौंतरो राज-काज रो।

दोहा—कमला रै वेटो हुयो, नौमी पृथ्वीराज।
नौनै रै खोळै गयौ, राखो कुळ री लाज॥ 8॥
दूबी बेटी सुन्दरी, वै रौ सुत जयचन्द।
राजा थौ कन्नौज रौ, कुळद्रोही मतिमंद॥ 9॥

चौ.—राज-काज दोहीतै नै दे, रणसी भाई नै साथै ले।
दोनूं भाई तीरथ टुरिया, जनम सुधारण सारू भुरिया।
पृथ्वीराज कियो थौ शासन, दिल्ली में वै रौ सिंहासन।
दसूं दिशायों में जस छायो, तुरक मोहम्मद गोरी लायो।
वै दिल्ली पर धावो करियो, पृथ्वीराज रती नहिं डरियो।
सतरै वार हरायो वैनै, करियो माफ कुभघ करतै नै।
आ उदारता हुयगी घातक, पुण्य दीसियो थौ पण पातक।
तुरक घात कर पाछो आयो, अवकै चौहाण नै हरायो।

दोहा—कैद कियो चौहाण नै, कपटी तुरक अखीर।
मार तुरक नै तजदियो, पृथ्वीराज शरीर॥ 10॥

चौ—दोनूं भाई पाछा आया, तीरथ सूं मन में दुख पाया।
तज्यौ अनंगपाल तो तन नं, लगी चोट रणसीरै मन नै।
दिल्ली में रैणै में खतरौ, रणसी मारग छोड़्यौ सत रौ।
हुयौ धाड़वी डाका मारै, तुरकों नै लूंटै ललकारै।
काळी कफनी तन पर धारै, शमथ ऋषी रै पड़ग्यौ लारै।
तुरक समझियो रणसी लूट्यौ, शमथ ऋषी रौ धीरज छूट्यौ।
रणसी नै सराप वो दीनौ, सारे तन नै कोढ़ी कीनौ।

दोहा—पीप भरै तनसूं करै, रणसी करुण पुकार।
रग-रग में पीड़ा हुई, बं वै आंसू धार॥ 11॥

चौ.—शमथ ऋषी तो विचरण लागा करै कथा नै जागा-जागा।
दूधू गौव पोंचिया जायर, लोग हरखिया सारा घर-घर।
मेघवंश रिणिया जाती रौ, खींवण भगत उठै थौ धीरो।
शमथ रिषी रो करतो सेवा, भजन टैल रा मिलिया मेवा।
दे उपदेश ऋषी खींवण नै, सफळ कियो वैरे जीवण नै।

गुरु मंतर नै खींवण जपियो, तन नै कसियो, तप सूं तपियो।
रणसी उठै घूमतो आयो, पनघट पास बैठ सुस्तायो।
खींवण पतनी पनघट आई, साधारण सी लगी लुगाई।
दोहा—मटको भर माथै धर्यो, गुजरी रणसी पास।
बूंद घड़े री तन पड़ी, आयो सुख री सांस। 12॥
रणसी री पीड़ा घटी, थो जळ रो परभाव।
लारो कर आयो घरे, ठंडा पड़ग्या घाव॥ 13॥
चौ.—घर में खींवण सूं जब मिलियो, रणसी रो मन सुख सूं खिलियो।
करुण कथा आपरी सुणाई, हिड़दै दया भगत रै छाई।
करतो थो खींवण भी भगती, पीड़ मिटावण री नहिं संगती।
रणसी नै संग लेय सिधायो, शमप आसरम खींवण आयो।
रणसी नै बैठायो बायर, कियो प्रणाम ऋषी नै जायर।
खुद रै खप्पर में खीवण नै, दूध दियो ताजो पींवण नै।
दुखी मित्र इक साथै आयो, आश्रम सूं बायर बैठायो।
दो इज्ञा तो भीतर लाऊं, थोड़ो दूध मित्र नै पाऊं।
दोहा—गुरु-द्रोही नै छोड़कर, दूजो कोई होय।
कह्यो ऋषी आवै अठै, रोक सकै नहिं कोय॥ 14॥
ले इज्ञा खींवण गयो, रणसी नै संग लाय।
दूध पियो, आधो दियो वै रणसी नै पाय॥ 15॥
चौ.—दूध पीवते रोग निवड़ियो, तन रो कोढ़ तुरत सो झड़ियो।
कंचन सी चमकी झट काया, शमप ऋषी रै सौमैं आया।
रूप देख रणसी रो सागी, गुरु रै मन में भड़की आगी।
खींवण घोर पाप थें कीनो, गुरु-प्रसाद द्रोही नै दीनो।
कियो कपट फळ दोनूं पासो, साथ करोती कट मरजासो।
दोनूं चेत कांपिया थर-थर, रोया आंसू आंख्यां में भर।
करी वीनती, चरण पकड़िया, गुरु-चरणां पर आंसू पड़िया।
शमप ऋषी सुण विनय पिघळिया, देख दशा खींवणरो ढळिया।

दोहा—संत वचन नहिं टळ सकै, मिट नहिं सकै सराप ।
कटसी एक करोत सूं, पण कट जासी पाप ॥ 16 ॥

चौ.—मारी जव थौरै तन चलसी, खून न निकळै दूध निकळसी ।
लास हुसी ढ़िगली पुष्वों रौ, लोग समाधी पूजै थौंरी ।
जनम-मरण में नही श्रटकसी, चौरासी में नहीं भटक सी ।
कियौ श्रनुग्रह गुरु सराप री, दारुण दुख मेटियौ पाप रौ ।
सुन्दर वर दो भगतों पाया, उत्तर खौनी संत सिधाया ।
ठौड़-ठौड़ परचा दिखलाया, वै मुलतान श्रंत में श्राया ।
चमत्कार रा दीना परचा, दूर-दूर तक फैली चरचा ।
शमप समाधी जीवत पाई, शंकर शिष्य खबर पौंचाई ।

दोहा—रणसी, खीवण जब सुणी, पैली हुया उदास ।
धूणयों जो थरपो शमप, सेवै दोनूं दास ॥ 17 ॥
धूणी एक वचन में, एक नरेना थौन ।
वा सेवै खीवण करै, वै रौ रणसी मौन ॥ 18 ॥

चौ.—दोनूं भगत तपै धूणयों पर, थौंरी चरचा फैली घर-घर ।
भगत मोकळा सुणनै श्रावै, भजन सुणै, भगती रस पावै ।
यवन धरम नै धक्को लागो, मुल्लो री सब छोड़ै सागो ।
हुयो धाधको मुल्लाश्रों नै, मिलियौ मौको श्राछो वौ नै ।
कतीवशाह पीर कहलावै, वै रै खनै वादशा श्रावै ।
रणसी, खींवण सूं दुख पायौ, वादशाह नै वै भड़कायौ ।
दिल्ली पकड़ बुलाया वौनै, तंग किया पूरा दोनों नै ।
कैयो वै परचौ दिखलावौ, सिद्धी रौ सबूत बतळावौ ।

दोहा—थौंरो पीर कतीवशा, जे परचौ दिखलाय ।
म्हौं दोनों री सिद्धि भी, निश्चै सौमै श्राय ॥ 19 ॥

चौ.—वाजब वात वादशा मौनी, फुरियौ वौ कतीवशा खौनी ।
हुयगी दशा पीर री खोटी, तीनों खातर त्यार कसौटी ।
कयो वादशा क्या करनो है, वौं कैयो म्हौंनै मरनो है ।

धरौ करोती तीनों रै सिर, क्या परनौम हुवै देखौ फिर।
निकळै तन सूं दूध जिकै रै, पुसब वणै तन, दुख नहि चैरे।
हुसी सिधाई, सच्ची वै री, खून निकळियों सिद्धी कैरी।
उड़सी आधा तन दोनों रा, पूरा तन न मिल सकै म्होरा।
सुणते होश पीर रा उडिया, दोनू भगत समाधी गुडिया।

दोहा—हुकम दियौ जल्लाद नै, धरौ करोती शीस ।
तीनों नै काटौ, परख, सिद्धी बिसवा बीस ॥ 20 ॥

चौ—धरी करोती तीनों रै सिर, बात पीर री चली नहीं फिर।
कटियौ पीर खून री धारा, चली रोंवते देखै सारा ।
कटिया दोनूं भगत हरखता लोग देखता रया परखता।
आधा तन उडिया अकास में, आधा हुयग्या पुसब पास में ।
खींवण रौ बचून उडियौ तन, गयो नरेना रणसी धन, धन ।
देखणवाळा सै हरखाया, करी प्रशंसा शीस नवाया ।
वणी समाध्यों दोनू जागा, सारा भगत पूजणै लागा ।
गुरु प्रसाद सूं सिद्धि दिखाई, दोनों भगतों मुगती पाई ।

दोहा—दूध निकळियौ तनों सूं, हुयग्या दो-दो भाग।
आधा पुपब हुया, उड़या, आधा आभै लाग ॥ 21 ॥
रणसी खींवण री करै, मन सूं महिमा गान।
भगती पावै भव तिरै, टूठै श्री भगवान ॥ 22 ॥

चौ.—बैटा आठ हुता रणसी रा, शत्रु अलाउदीन खिलजी रा।
घावौ कियौ नरेना पर वै, लड़िया छव हुय गया अमर वै ।
बचिया दो धनरूप र अजमल, पकड़ न सकियौ किया खूब छल।
मरुधर खोनी दोनू भागा, वसिया जोय निचीती जागा।
बाड़मेर री तरफ वसायौ, ऊंडू काशमीर कहलायौ ।
धरम ध्यान में विरती आछी, पाई मैमा दोनों पाछी।
अभयसिंह माटी रै जाई, औंधी पंगळी धीव सुहाई।
जेसलमेर राज थो वींरो, नौम सुण्यों छत्री तुंवरों रौ।

दोहा—वडी भाग री पोरसी, था गुण तेज अनूप।
कूंण इयै नै झालसी, फिकर करै नित भूप ।। 23 ।।
सुणियो भगत शिरोमणी, अजमलजी रो नोम।
वीनै बेटी धौमियों, निश्चै बणसी कोम ।। 24 ।।
मैणादे खुद थी भगत, धरती प्रभु री ध्यौन।
निश्चै जोग मिलै, करै किरपा जब भगवौन ।। 25 ।।

चौ.—अजमलजी रै लगन भेजियो, वौमण री सनमौन वौ कियौ।
लगन लियौ हुय गई सगाई, वौटी घर-घर खूब वधाई।
जेसलमेर जौन जब आई, सबरं मंन में खुशी समाई।
वैठा चँवरी वर कन्या जब, पूजन, हवन कियौ विपरों तब।
हथलेवौ वौमणों जोड़ियौ रोगों मूंडौ तुरत मोड़ियौ।
आँख्यों में झट ज्योती आई, गई पगोंरी सा पंगळाई।
मेणादे री कंचन काया, हुयगो तुरत, देख हरखाया।
उठमैणादे फेरा खाया, व्यांव हुयौ सिगळा हरखाया।

दोहा—दियौ दायजै पोकरण, अजमलजी नै गौव।
हुयौ भटाकौ वंव री, उठै, आज सरनौव ।। 26 ।।

चौ.—दोनूं जागा राज चलायौ, रजधानी पोकरण वणायौ।
वौ धनरूप छटोडो भाई, दोनों रै मन प्रीती छाई।
कूख खुली नहि अजमलजी री, दो बेट्यों छोटै भाई री।
अजमल मैणादे रै साथै, रंवै प्रैम वड़ौ वौ माथै।
धनरूपजी सिधाया तीरथ, कियौ धरम रो धारण वौं पथ।
साधू वेश कियौ वौ धारण, वौत तीरथों में कर भरमण।
मंडो मियाली सत वेश में, वै पोंच्या मेवाड़ देश में।
उठै समाधी जींवत लीनी, जग में अमर कीर्ती कीनी।

दोहा—लाछा, सुगना डीकरयो, छोडी थी धनरूप।
पाळपोस परनावियों, वौनै अजमल भूप ।। 27 ।।
रया वौंजड़ा अंत में, की किरपा करतार।
अजमल जी रै घर लियौ, रामदेव अवतार ।। 28 ।।
पुरखों री पावन कथा, बाचै री सुख सार।
बूलै री हेलो सुणौ, रामा राजकुमार ।। 29 ।।

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

दूसरा चरण

बाबा रामदेव अवतार

दोहा—देव द्विपास्य दया करो, देवो गेरो ज्ञान ।
पाऊं विद्या-बुद्धिवर, धर सरसुत रो ध्यान ।।1।।
गुरुचरणामृत पानकर, पद-रज राखूं माथ ।
अजमलजी रे घर हुया, प्रगट द्वारकानाथ ।।2।।

सोरठा—मायापति अवतार, लियो भक्त रे कारणे ।
भू रो भार उतार, धरम थरपियो पाप हर ।।3।।
दुष्टों रो संहार, करियो जुलम निवेड़िया ।
संत जनों ने तार, दलितों रा दुख मेटिया ।।4।।

चौ.—मरुधर रे कृपकों दुख पाया, वर्षो वर्षा ने ललचाया ।।
देख अंत में बादल छाया, नाचे मोर, कृपक हरखाया ।।
ले हल बैल खेत ने टुरिया, भाग अन्त में वौरा फुरिया ।।
सौमें अजमल मिल्यो निपूतो. कुसुगन भेलें थो नहिं बूतो ।।
मन पछताया पाछा घिरिया, सोच्यो अजमल वे क्यों फिरिया ।।
मोर नाचिया मिवलो बरसे, मौसम खेती रो सब हरसे ।।
थे भायों क्यों पाछा जावो, कारण इण रो मने बतावो ।।
सात गुनाहों री दी माफी, करी किसोंणो हीमत काफी ।।

दोहा—सौमेलो है शुभ नहीं, आप बोजड़ा नाथ ।
खेती सारी उजड़सी, रैसों खाली हाथ ।।5।।
बात किसोंणों री सुणी कर मन में अफसोस ।
अजमल चुपको घर गयो. मन ने रयो मसोस ।।6।।

चौ.—नींद न भूख जातना सेवे, मन री पीड़ा कैने कैवे ॥
अजमल रो तन तर-तर थकियो, दुख रो पार पाय नहि सकियो ॥
रौणी देख्यो राजा री दुख, हुई दुखी वा विसर गई सुख ॥
पूछी बात न राजा बोलै, मन री गाढ़ो दुख नहि खोलै ॥
घणो पूछियो जणै बतायो, वांजड़लो हूं श्रो दुख छायो ॥
विश्वनाथ नै जे थे ध्यासो, पूत प्रतापी निश्चै पासो ॥
रौणी राजा नै समझायो, अजमल मन में मतो बणायो ॥
कर तैयारी भूप सिधायो, रौणी साथै काशी आयो ॥

दोहा—काशी में राजा करी, शिव सूं आ अरदास ।
या मारो, या पुत्र दो, पूरो मन री आस ॥7॥
सुपनै में भोलै कयो, जाय द्वारका धोम ।
करो द्वारकानाथ नै अरज, पूरसी कोम ॥8॥

चौ :—राजा रौणी पाछा आया, गढ़ पोकरण हिया हरखाया ॥
इंछ्या वेटो पांवण री थी, हुलस द्वारका जावण री थी ॥
राजा रौणी कर तैयारी, पुरी द्वारका जासौं धारी ॥
लियो संग वो कूच कर दियौं पंडो जल्दी पूरो करियो ॥
पुरी द्वारका पौंच्या जायर, मंदर पौंच गया वै न्हायर ॥
थाल लाडुओं रो थो कर में, पेल-पेल थी मंदर भर में ॥
धरियो ध्यौन, अरज नृप टेरी, दी मंदिर री पूरी फेरी ॥
करुण अरज नहि सुणी हरी जब नृप रै मनमें रीस भरी तब ॥

दोहा—हाँ या ना अबकै करो, मत धारो प्रभु मून ।
या सुत पाऊं, या मरूं, म्हारो हठ छोड़ं न ॥9॥

चौ. —नहीं बोलिया देर तलक जब, अजमल खोय दियो धीरज तब ॥
लेय हाथ में लाडू मार् यो, कूक-कूक कर भूप पुकार्यो ॥
पंडो समझ्यो, हुयग्यो पागल, काबू आसी करियो सूं छल ॥

पूछ्यो वो क्या वात वतावो, है हरि किठे, मने समझावो ॥
पंडा बोल्या हरि सागर में, है राधा–रुकमण रै घर में ॥
भूप कियो विसवास, सिधायो, सागर तट पर सरपट आयो ॥
खड़ो उठे राजा चिल्लायो, प्रभु रो हेलो सुणते धायो ॥
कूद्यो सागर में झट अजमल, हरि र नैचै री मन में बल ॥

दोहा— सागर तल में पोंचियो, कियो अचभो भूप ।
सोने री नगरी मिली, देख्यो हरि री रूप ॥10॥
कपड़ रो पट्टी लखी, हरि रै बंधी ललाट ।
देख दुखी अजमल हुयो, मन में हुयो उचार ॥11॥

चौ. —चोट कैण प्रभु रै पोचाई, वात भगत रै समझ न आई ।
पूछ्यो हरि नै जद प्रभु कैयो, भगत मारतो हेला रैयो ॥
देर हुई म्हें दियो न उत्तर, रोस खाय लाडू मार्‌यो सिर ॥
बात असल में म्हारी ढीठी, चोट भगत री लागी मीठी ॥
त्राहि–त्राहि, सुण, अजमल करियो, पाप कियो म्हें राजा डरियो ॥
पाप कियो वै माफी चाई, मनमें प्रभु रै करुणा छाई ॥
शरणागत प्रतिपाल आप हो, कर दो म्हारो माफ पाप ओ ॥
प्रभु उठाय चेप्यो छाती रैं, हाथ धर्‌यो माथै पर धीरै ॥

दोहा —थारो दोप रती नही, थो साचो विसवास ।
म्हें आशा पूरी नही, थी गलती आ खास ॥12॥
मन चायो वर मांग तूं, राखे मत संकोच ।
अंतरजामी आप हो, जाणो मन री सोच ॥13॥

चौ.:— आप जिसो सुत पाऊं सांमी, मिटै बांजड़पण री खामी ॥
सायर भगत आय नहि पायो वैरै भी बांजड़पण छायो ॥
करो कामना पूरी म्हांरी, सफल जिन्दगी कर दोनों री ॥
म्हारै जिसो किठै सूं लासूं, थारै घर में हूं खुद आसूं ॥
नहीं बांजड़ा दोनूं रैवो, दोन वचन अब कदैन कैवो ॥

प्रभु वरदान दियौ दोनों नै, मनसा पूर दिया सुख वोंनै ।।
प्रभु ग्रासो, हूं कोंकर जोंणूं, दो प्रमाण तो हियौ पतीणूं ।।
दुनिया म्हारी बात न मौनैं, कलजुग में मत प्रगट्या छोंनै ।।

दोहा— वीर गेडियौ, साथ में, रतन कटोरो देय ।
अभय अंचलो भी दियौ, भक्त लिया वै लेय ।।14।।
खालो भोंडा वाजसी, नीर वणै जब खीर ।
कूंकूं रा पगला मंडै, समझै धर्यो शरीर ।।15।।

चौ.— चरण पकड़ अजमल सुख पायौ, तुरत बार सागर सूं ग्रायौ ।।
दुखी उडीकै संग किनारै, दीख्यौ भगत ग्रायग्यौ बारै ।।
सिगलो लोकों हरख मनाया, टुरिया सैन पोकरण ग्राया ।।
दिन वीत्या, बिसवास ग्रटल थौ, रौणी सहित सुखी ग्रजमल थौ ।।
मौरत ग्रायौ, नृप सुत पायौ, वीरमदेव नौम रखवायौ ।।
सुदी दूज भादूड़ो ग्रायौ, सुतनै झूलै में पौढ़ायौ ।।
सूतौ थौ वीरम झूलै पर, दूध चढायोड़ो चूलै पर ।।
प्रभु पालणै तुरन्त प्रगटिया, बीरम रै फाड़िया चूंटिया ।।

दोहा— रौयौ बीरम, सुण रुदन, मा झट पौची ग्राय ।
देख्या दो वालक उठै, डरी, समझ नहिं पाय ।।16।।
राजा नै हेलो कियौ. ग्राया ग्रजमल भूप ।
दूजो वालक देखियौ, दीस्यो रूप ग्रनूप ।।17।।

चौ.— वरतण बाजै गया पलीडै, पौणी सौन दूध सो डोठै ।।
ग्रोगण में कूंकूंरा पगला, प्रभुरा बोल सुमरिया ग्रगला ।।
राजा के रौणी वडभागण बात प्रभू री मिलगी सागण ।।
दूजो वालक नारायण है, थारै मन में क्यों गण–तण है ।।
मौनै नहिं मन मैणदे रौ, भैरूं कदास करियौ हेरौ ।।
मैणदे रौ भरम मिटायौ, बालक तपतो ठौव उठायौ ।।
खुलिया थण दोनूं मातारा, दोनौ रै मुख पौची धारा ।।
माता नै झट नैचो ग्रायौ, बालक ले छाती चिपकायौ ।।

दोहा—कळ में भक्ति अलोप हुय, हुवै अधर्म प्रचार ।
हुवै धरम री थापना, भगती रै विस्तार ।।18।।

कलजुग में मूरख घणा, भगती करै सकाम ।
भक्ति वढ़ावण कारणै, रामदेव है नाम ।।19।।

रामरूप सुमिरै जिको, भगती, मुगती पाय ।
देव मौन ध्यावै, मनोकीम सफल हुय जाय ।।20।।

प्रगट पालणै में हुया, माता हुई निहाल ।
वूलै रो हेलो सुणो, अजमल जी रा लाल ।।21।।

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

तीसरा चरण

भैरव-वध

दोहा—एकदंत बलवंत नै सबसूं पैली घ्याय ।
सरसुत री सुमिरन करूं, श्री हरि रा गुण गाय ।। 1 ।।
गुरु-चरणों में सिर धरूं, दो वर करूं वखांण ।
बावै भैरव-वध कियो, भार भोम पर जोण ।। 2 ।।

सोरठा—पच्छम धर री भार, ले अवतार उतारियो ।
भैरूं राखस मार, दुखियों नै निर्भय किया ।। 3 ।।

चौ.—भोम आर्य लोगों री जोणीं, नामी आर्यावत वखांणी ।
भारतवर्ष आज कहलावै, मरुधर पच्छम भाग कहावै ।
तुंअर वंश री छत्री राजा, अजमल साज भक्ति रा साजा ।
करी पोकरण नै रजधानी, मैणादे थी वांरी रानी ।
थोड़ी दूर ठांव आश्रम री, गुरु थी वालीनाथ धरम री ।
चेला-चेल्यों साथै रैवै, करड़ो ब्रह्मचर्य पाळै वै ।
आश्रम रै थी च्यारूं पासी, गैरो जंगळ, शोभा खासी ।
पंखी घणा जिनावर सारा, जंगळ में विच रै वेचारा ।

दोहा—आश्रम खनै तलाव थी, शांति रमै चौफेर ।
इसी जगा में तप कियो, ज्ञान मिलै नहिं देर ।। 4 ।।

चौ.—भैरवदास वैश्य धनवाळो, मन नै जोण पाप सूं काळो ।
भगती री जागी लो मन में, ममता वैरो रही न धन में ।
ले धन आश्रम भैरव आयो, गुरु-चरणों में सौन चढ़ायो ।
की अरदास मनै दो दीक्षा, गुरु कैयो लू पैल परीक्षा ।
दो बरसों तक करनी पड़सी, सेवा, तो गुण-दोष उगड़सी ।

हुयग्यौ राजी भैरव जाचक, करसूं सेवा दो सालों तक।
रीझौ जे लख म्हारी सेवा, तौ भगती रा देवौ मेवा।
ब्रह्मचर्य-व्रत पाळन लागौ, गुरु-भायों रौ मिलग्यौ सागौ।
दोहा—कड़ी तपस्या वै करी, ब्रह्मचर्य व्रत पाळ ।
मन निर्मल कर तन कस्यौ, सेवाव्रत में ढाल ॥ 5॥
चौ.—नेम और इज्ञा रौ पालन, देख पिघळियौ गुरुजी रौ मन।
दिवस परीक्षा रौ जब आयौ, गुरु भैरव नै तुरत बुलायौ।
ब्रह्म-मूर्त रौ समय देखकर, गुरु कयौ जा आव स्नान कर।
न्हावण खातर जब तलाब में, पोंच्यौ भैरव भक्ति-भाव में।
उठै न्हावती थी इक जुवती, बिना वस्त्र वै बेळा हुँवती।
निरखी जुवती रति सी सुन्दर, मन भैरव रौ डिगियौ तरतर।
संयम हार वासना जीती, हुँवणहार हुय गई अचीती।
भभकी काम-वासना सीनै, काबू करली वै जुवती नै।
दोहा—कर परवस वै शात की, काम-वासना घोर।
दोनों रा तप क्षय हुया, कियौ साधिका शोर ॥ 6 ॥
चौ—तड़प साधिका कळपण लागी, गुरु रै आश्रम में वा भागी।
पश्चाताप हुयौ भैरव नै, पापी हुयग्यौ कँवै कँनै ।
जाय गुरु नै वाळका कयौ, क्वांरपणौ सौ नष्ट हुय गयौ।
गुरुजी पाप प्रगटिया म्हारा, जप-तप क्षीण हुय गया सारा।
खुद भी डूब्यौ मनै डुबोई, हुई पापणी चेली रोई।
बालीनाथ कयौ कै बेटी, कैण साधना थारी मेटी।
आश्रम कैण बिगाड़्यौ आयर, पाप कर दियौ कँनै कायर।
निश्चै फळ वौ पापी पासी, दुराशीस थारी लग जासी।
सोरठा—कोप्या बालीनाथ, देखणवाळा धूजिया ।
चेलो जोड़्या हाथ, बात रोंवतै वै कही ॥ 7 ॥
चौ.—भैरवदास वैश्य रा किरतब, आयौ आज न्हावती हूं जब।
जोरामरदी वै काबू कर, क्वांरपणौ लीनौ म्हारौ हर।

नर तौ लै लुकाय पापों नै, कन्या रौ न गरभ रै छोनै।
देख रोंवती वै नै झळ-झळ, गर्भ गमायौ सिद्धि रै बळ।
बालीनाथ कोप तव करियौ, डर भैरव भीड़ सूं निसरियौ।
भैरव पाप कबूल कर लियौ, गुस्सौ वै पर गुरुजी करियौ।
हाथ कमंडळ रौ जल लेकर, फेंक्यौ गुरु भैरव रै ऊपर।
देऊं शाप तनै गुस्सौ कर, राखस हुयजा, तुरत दुष्ट नर।

दोहा—भैरव रौ तन बदळियौ हुयग्यौ दैत्य शरीर।
देख भयानक देह नै, भैरव खोयौ धीर ॥ 8 ॥

चौ—हुसी छटेपौ कोंकर म्हारौ, गुरु चेलै पर दया विचारौ।
रोयौ भैरव पैर पकड़िया, गुरु–चरणों पर आंसू पड़िया।
हिड़दौ तब गुरु रौ पसीजियौ, भैरव नै वरदान औ दियौ।
म्हारौ चेलौ तनै तारसी, इयै जूंण सूं वौ उवारसी।
देख भयंकर काळी काया, आश्रम-वासी सब घबराया।
गुरु री आंख्यों लाल देखकर, भैरव भाग गयौ मन में डर।
छोड़ गया आश्रम सब डरता, ज्यौन बचाणी थी क्या करता।

दोहा—भैरव नर–संहार कर कियौ इलाकौ सून।
मिलै जिकै नै मारदै, भख करलै पी खून ॥ 9 ॥

चौ.—इक जोजन तक धरती सारी, दैत्य उजाड़ी आफत भारी।
छोड़्या नहिं पंखी र जिनावर, आवै डरता नहिं कोई नर।
सांतळमेर खनै थी वस्ती, सान उजाड़ी धरती धस्ती।
कोई जीव उठै नहिं बचियौ, दूर-दूर तक रोळौ मचियौ।
डरै मौनखौ बस नहिं चालै, कौकर जुलम दैत्य रा झालै।
अजमलजी कुछ कर नहिं पावै, परजा मैं धीरज बंधावै।
धरम लोप थौ जुलम फैलियौ, याद द्वारकानाथ नै कियौ।
जाय द्वारका अजमल अड़ियौ, परभू नै सुणनौई पड़ियौ।

दोहा—अजमलजी रै घर लियौ, रामदेव अवतार।
प्रगट्या परभू पालणै, भगतों रा सुख-सार ॥ 10 ॥

चौ.—गरम दूध री ठौंव उठायी, मैणादे री भरम मिटायो ।
बड़ा दिनोंदिन चन्द्रकळा ज्यों, हुया न निजरै सुन्दरता क्यों ।
तीन वरस री ऊमर पाई, तुतळी बोली मा नै भाई ।
इक दिन घोड़ो एक देखियो, घोड़ो लेवण री हठ करियो ।
मा समझाया घोत मनाया, हठ न तज्यो तावै नहिं आया ।
हारी माता तुरत बुलायो, रूपो दरजी मैलों आयो ।
कपड़ो दे कैयो समझायर, सुन्दर घोड़ो लाव वणायर ।
दरजी कपड़ो लेय सिधायो, कौतक कर मन में घर आयो ।

दोहा—दरजी बोदा चीथडा, भीतर भऱ्या लुकाय ।
खोळ चढायो फूटरो, ऊपर, मन मुस्काय ॥ 11 ॥

सोरठा—करियो घोड़ो त्यार, सुन्दर लायो मैल में ।
समझ्यो हू हुशियार, मात नै ठग हरखियो ॥ 12 ॥

चौ.—बाबो घोड़ो देख मुळकिया, दूजा माया समझ न सकिया ।
बैठ गया बाबो घोड़ै पर, हुया खुशी सब बैठा देखर ।
घोड़ो झट उड़ियो अकास में, रया ताकता सैन पास में ।
रामदेव घोड़ै रै माथै, लोप हुया आभै में साथै ।
मैणादे, घर रा घबराया, वात सुणी अजमलजी आया ।
माता बुलवायो दरजी नै, उठी हूक रूपै रै सीनै ।
क्या जादू घोड़ै में करियो, दरजी धूजै मन में डरियो ।
धमकावै, नहिं समझै दरजी, की अरदास प्रभू क्या मरजी ।

दोहा—अबकै माफ करो प्रभू, गळती करूं न फेर ।
मनै उवारो बापजी, सुण गरीब री टेर ॥ 13 ॥

चौ.—मात-पिता नै गुस्सो आयो, रूपै नै झट कैद करायो ।
जे नहिं आवै दुख रो छेड़ो, इयै दुष्ट री खाल उधेड़ो ।
हुयो कैद दरजी बिरलावै, जितै कँवर कुशळ नहिं आवै ।
कष्ट कूण काटै रूपै रो, दोष बतावै सिगळा बैरी ।

नाची सिर पर मौत भयंकर, विलपै दरजी धूजे थर–थर।
सारा घर रा कळपै रोवै, बस नहिं चालै, ओंस्यों धोवै।
माता खनै दौड़ती आई, दासी खबर खुशी री लाई।
घोड़ै सहित उतरिया क्षण में, रामदेव खेलै ओंगण में।

दोहा—मात-पिता, घर रा सभी, उठे पोंचिया जाय।
खेमे-कुशळे कँवर नै, देख उठ्या हरखाय॥ 14॥
बावै तुरत बुलावियौ, रूपौ पोंच्यौ आय।
मौत टळी, वौ रोंवते, पड्यौ चरण लपटाय॥ 15॥

चौ.– बावै दरजी नै समझायौ, कियौ पाप, वैरो फळ पायौ।
बढ़िया कपड़ौ चोर लुकायौ, घोड़ौ भर चींथड़ा बणायौ।
दरजी कपट कियौ माता सूं, कैयौ हूँ ऊमर पछतासूं।
अबे कदेन बणाऊं घोड़ौ, मनै बापजी अबकै छोड़ौ।
मुळक कयौ बावै रूपै नै दे वरदौन कियौ खुश वैनै।
जिसौ बणायौ थें घोड़ै नै, म्हारा भगत पूजसी वैनै।
हुयौ लोप घोड़ौ कपड़ै रौ, लख लीलूड़ौ इचरज गैरौ।
चढ़िया बावौ लीलूड़ै पर, सैन हरखिया शोभा देखर।

दोहा—वचन गरुड़ नै थौ दियौ, आप द्वारकानाथ।
लीलूड़ौ हुय प्रगटियौ, करनी लीला साथ॥ 16॥

चौ.—करी अनूठी बाळक लीला, पापी तर-तर पडिया ढीला।
अस्त्र-शस्त्र री विद्या पाई, अश्व सवारी वौनै आई।
छोटी ऊमर जोधा हुयग्या, तेज अपार बखौण सकै क्या।
भैरव तणौ देख दुख सब रौ, ताक रया था मौको दब रौ।
एक दिवस संज्या री वेळा, सारा साथी करिया भेळा।
दड़ी लेय चौगौन में गया, डरता साथी देखता रया।
दूर दड़ी नै जिकौ वगासी, वोई जाय दड़ी नै लासी।
इयै वचन सूं सैन बंधिया, खेल खेलणा सरू वौ किया।

दोहा—इयौं खेलते खेलते, कर त्यागत भरपूर।
भैरव जंगल में दड़ी, बावै वाई दूर॥ 17॥

चौ.—दड़ी दूर खुद वावै वाई, खुद न्हावण री बारी आई।
अंधारो जंगळ नहिं दिन थो, दड़ी लावणो कोम कठिन थो।
साथ्यों नै घर भेज्या पाछा, उठै रालणा था नहिं आछा।
आप दूर गया जंगल खोनी, सीख नहीं साथ्यों री मीनी।
दडी न दीसै अंधकार थो, गैरे जगळ रो न पार थो।
एकेला पण नहिं घबरावै, आगै इयों चालता जावै।
दडी न पाई आश्रम आयो, भीतर गुरु नै बैठो पायो।
शांत मूर्ति सा करै तपस्या, वालीनाथ प्रभू नै दीस्या।
दोहा—काळी आधी रात में, सुन्दर बाळक देख।
गुरु रै चैरै पर बणी, घोर फिकर री रेख ॥ 18 ॥
चौ—बाळक कुण ? अठै क्यो आयो, गुरु रै हिड़दै में डर छायो।
इकटक र्‌या ताकता चैरो, मन नहिं भरै रूप लख वैरो।
चेतो हुयो गुरु झट बोल्या, मन री चिन्त्या रा पट खोल्या।
ठैर न तुरत भागजा पाछो, अठै रैवणो रती न आछो।
भैरव राखस भूखो आसी, तनै पलक में चट कर जासी।
बावै डर रो नाटक करियो, जोणै मन वीरो भय भरियो।
जगळ सूनो रात अंधारी, नहिं जावण री हीमत म्हारी।
गुरुजी देवो रात बसेरो, बखत भयानक मनै न फैरो।
दोहा—असमंजस में गुरु पड़्या, पूछ्यो कैरो लाल।
अजमलजी रो कँवर हूं, गुरु जोण्यो तत्काल ॥ 19 ॥
चौ.—शोर इतैनै सुणियो भारी, राखस रै पौचण री त्यारी।
झट बावै नै मौंय सुवायो, गुदड़ा दी ओढाय लुकायो।
कैयो बाळक तूं मत बोले, मती रात भर मूंडो खोले।
बैठा बालीनाथ ध्यान में, खड़को पड़ियो तुरत कान में।
बड़ियो भैरव जब आश्रम में, डूब गयो गुरु रो मन गम में।
सूंघै वो नास्यो फूलावै, गरजै पण न देख कुछ पावै।
मनै गंध मीणसे री आवै, कै भैरव गुरु क्यो न बतावै।

गंध तरोतर भंधती जावै, भूख भयंकर क्यों संतावै।
दोहा—म्हारो खाधं बताय दे, कड़क भूख गइ लाग।
मिनख अठै आवै जिको, जाय सकै नहि भाग ।। 20 ।।
चौ.—बालीनाथ कयौ सुण राखस, भरे कूं ण थारो अब भरखस।
जोजन भर रो सौन इलाको, भक्षण कियौ आयग्यौ नाको।
मीणस तो क्या? नहीं जिनावर, खतम कर दिया थें सब खायर।
अठै गंध मीणस री कौंकर, म्हैं सिवाय है अठै नहीं नर।
बढ़ती गई गंध मौणस री, बात न रही दैत्य रै बस री।
भैरव झट भूख सूं भड़क्यिौ, गुरु पर करियौ क्रोध कड़कियौ।
खाध न म्हारो तुरत बतासी, तो अब चेलौ गुरु नै खासी।
मरजादाअब निभ नहि पावै, मरतौ चेलौ गुरु नै खावै।
दोहा—बाबौ सुणता सौन था, तुरत हिलाई टौंग।
देखो राखस, बोलियौ, कै गुरु औ कइं सौग ।। 21 ।।
चौ.—थौ तौ गुरु चावै न बतायौ, म्हारै मिनख ध्यौन में आयौ।
गुरु चुप था, भैरव हरखायौ, गुदड़ो खनै तुरत वो आयौ।
खींची गुदड़ी झट वै राखस, रयौ खीचतौ, चलै नही बस।
खीच खींच वै ढेर लगायौ, अंत न वै गुदड़ी रौ आयौ।
चीर द्रोपदी रौ बण बाढी, राखस मैनत करली गाढी।
उगड़ न सकी गूदड़ी वैसूं, टपकै परसीनो चैरै मूं।
देख हाल राखस घबरायौ, भूखौ थकियौ समझ न पायौ।
छोड गूदड़ी राखस भागौ, वै नै डर मरनै रौ लागौ।
दोहा—बोल्या बालीनाथ तब, उठ रामा झट जाय।
मार दैत्य नै पौचियौ, अंत जुलम रौ आय ।। 22 ।।
लीलूड़ी भालौ लियौ, आय पौचिया मित्र।
गुरु इशा माथै धरी, अद्भुत किया चरित्र ।। 23 ।।
चौ.—ले भालौ बाबौ चढ घोड़े, दौड़्या नहि राखस नै छोड़।
जाय पौचिया राखस लारै, डरियौ दैत्य मनै नहि मारै।

नाची मौत दैत्य घबरायौ, हाथ जोड़ वौ नैड़ौ आयौ।
मौगी भीख जिन्दगी री वै, पड़ पैरों बावै नै कैवै।
गुरु भाई री लिज्या राखौ, करसूं सौन मनै जो भाखौ।
थौरी धरती में लोगो नै, कदे नही संताऊं वौ नै।
थौरौ राज छोडकर जासूं, अठै कदे नहिं पाछौ आसू।
ज्यौन बगस दौ बाबा म्हारी, याद सदा रैं नेजा-धारी।

दोहा- म्हारी धरती रौ नही, मिलसी भैरु पार।
म्हारी सीमा में बसै, औ सारौ संसार ॥ 24 ॥

चौ.—ताकैं भैरु नहीं समझियौ, भाले पर रख ऊंचौ करियौ।
चौतरफौ वैनें घूमायौ, बाबै खुद रौ राज्य दिखायौ।
भैरू देखी सारी सृष्टी, चकाचौंध थी वैरी दृष्टी।
चौतरफी सारो पृथ्वी पर, धौळी धजा फरूकै घर-घर।
भैरूं नै धरतो पर धरियौ, आगै वै सवाल नहिं करियौ।
चाल गुफा में बावै कैयौ, वेंबस राखस चलतौ रैयौ।
बड़्यौ गुफा मे राखस धूम्यौ वार कियौ बाबै पर झूम्यौ।
भालौ गयौ पेट मे वैरैं, बोल निकळिया ऐ मरतं रैं।

दोहा—मती गुफा मे थे ढवौ, भूखौ मरसी जीव।
थारी भूखी आतमा, करसी जुलम अतीव ॥ 25 ॥
ठैर गुफा मे एक दिन, रौ म्हारौ परसाद।
पासी थारी आतमा, रैसी नही विपाद ॥ 26 ॥

चौ.— बद गुफा में करदी काया, भैरू रो, वै पाछा आया।
बाबै गुरु सूं दीक्षा लेली, गुरु री इज्ञा माथै मेली।
बालोनाथ कयौ गुरु-दखणा, मनै लेवणी, तकै सैजणा।
दैत्य उजाड़्यौ सौन इलाको, कियौ वौत जुलमौ रौ साकौ।
तूं वसाय दे पाछी नगरी, मैमा गासी जनता जगरी।
बाबै वचन दियौ सब टुरिया, सैन पोकरण पौचण झुरिया।

माता-पिता उडीके घर में, रातूं रोया, डूब्या डर में।
तड़कै रामदेव जब आया, सारा मित्र साथ में लाया।
दोहा—रामदेव नै देखियो, गयो काळजो ठैर।
मात-पिता रै मन उठी, ऊंची सुख री लैर ।। 27 ।।
चौ—बीत्यो बखत भूलसी छाई, याद गुरू री इक दिन आई।
रातूं-रात बसाई नगरी, जौंणै जनता सारै जगरी।
नाम रुणेचो, रामदेवरो, तीरथ भगतों रो सनेव रो।
बचन दियोड़ो थो अजमल, नै पाळयो, मार्‌यो भैरव खलनै।
पच्छम धर रै दुख रो आयो, छेड़ो पाछो नगर बसायो।
गुरु रा बचन प्रमाणित करिया, दुखियों रा दुख यावै हरिया।
दियो पवित्र तीर्थ मरुधर नै, वैरै मातम नै कुण बरनै।
भार उतारण पच्छम धर रो, माया-तन वो धरियो नर रो।
दोहा—पच्छम धर रा बादशा, कियो दैत्य संहार।
बूलै रो हेलो सुणो, रामा राजकुमार ।। 28 ।।

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

चौथा चरण

सेठ बोयतै नै परचौ

दोहा—गिरिजा-सुत गणनाथ नै सुमिरूं वारंबार।
सरसुत री सुमिरन करूं, उर में भगती भगती धार ॥1॥
परमेश्वर गुरुदेव री, पद-रज राखूं माथ।
परचौ दोनो सेठ नै, रौणेचै रै नाथ ॥2॥

चौ — लोहागढ़ सूं आयर बसियौ, रौणेचै री हुयग्यौ रसियौ
रौणेचै में विणज करै वौ, पाल कुटम नै पेट भरै वौ
नौम बोयतौ तेला-लूणी, छोटौ विणज करै परचूणी
हुयौ संजोग पोकरण जावै, बावौ, सेठ सौमनै आवै
सेठ बोयतै शीस नवायौ, दुख सूं मुख उदास वौ पायौ
हाल पूछिया बावै वैरा, सेठ कया खुद रा दुख गैरा
बौत गरीबी में दुख पाऊं, मुश्कल सूं हूं कौम चलाऊं
दियौ सेठ नै ढाढस बावै, अठै कमाई आय न तावै।

दोहा—जावौ दूर विदेश में, करो उठै वौपार।
लाभ हुसी ठाढौ, कयौं, रामा राजकुमार ॥3॥
छोड़ कैरै आसरै, है दरिद्र परिवार।
लारै सै भूखो मरै, कौकर पड़सी पार ॥4॥

चौ.— घर री चिंत्या छोड़ी सारी, करौ जातरा री तैयारी।
बार जितै विदेश मे रैसौ, इन्तजौम कर देसूं ऐसौ।

मिले खजौनै सूं धन वौनै, कमी न रै थौंरै घर रौ नै ।।
घन कमाय पाछा झट आया, म्हारै लिये निसौंणी लाया ।
जे दुख पावौ थे विपदा सूं, याद कर लिया निश्चै आसूं ।
सेठ हरखतौ घर में आयौ, सेठौंणी ने हाल सुणायौ ।
करली त्यारी सेठ सिधायौ, दूर देश में जाय कमायौ ।
विणज कियौ, धन वेहद जोड़्यौ, नादारी सूं नातौ तोड़्यौ ।

दोहा—कियौ सेठ परदेश में झँवरायत रौ कार ।
वाबै मैर करी, हुयौ, वैनै लाभ अपार ।।5।।
नगर-सेठ हुयग्यौ उठै, भरयौ खूब भंडार ।
हीरा, पन्ना, लाल, मणि, मोत्यौं री भरमार ।।6।।

चौ.— बरस वीतियौ, ममता जागी, घरवालौ री चिंत्या लागी ।
रौंणेचै जांवण री त्यारी, सेठ करी जल्दी सूं सारी ।
पेट्यौ और पिटार्‌यौ लायौ, धन समौन वौमें भरवायौ ।
करी याद बाबै री वांणी, साथै लेजावणी निसौणी ।
वे हीरों रौ हार करायौ, पेटी में कर ध्यौन धरायौ ।
चोखौ एक ज्याज मंगवायौ, वै पर धन समौन लदवायौ ।
जै गणेश कै, इष्ट मनायौ, सेठ ज्याज चढ़ घरै सिधायौ ।
सुन्दर मौसम देख हुलसियौ, माया रो मद मन में बसियौ ।

दोहा—डौड चलावै था खुशी, मन में सब मल्लाह ।
चित में उपजी सेठ रै, सुख वैभव री चाह ।।7।।
रौणेचौ छोटी जगह, सुख रा साधन नाय ।
वड़ै सैर में जायकर, बससूं भवन बणाय ।।8।।

चौ.— धन रौ नसौ सेठ रै छायौ, रामदेव नै वै विसरायौ ।
रौणेचौ अब छोटौ लागै, वड़ै सैर रा सुपना जागै ।

नादारी में थौ कुण सीरो, हालत भूल गयौ पैलो री।
मिनखाचारौ जी सूं तजियौ, मन सूं पाप हुयौ न समझियौ।
प्रभु अंतरजामी अघ हारी, मन री बात जौणग्या सारी।
करमौ रौ फल कदेन टलियौ, मौसम उठै तुरन्त बदलियौ।
बौत बड़ौ तोफौन उमड़ियौ, चलै न ज्याज भंवर में पड़ियौ।
मांझी जोर लगायर थकिया, ज्याज भंवर सूं काढ़ न सकिया।

सोरठा—हुयग्या वै लाचार, मांझी कैवै सेठ नै।
जल्दी करौ पुकार, आप आपरै इष्ट नै ।।9।।
माथै नाचो मौत, मांझ्यौ में भगदड़ मची।
रोया सारा बौत, अंत न आफत रौ लख्यौ ।।10।।

दोहा—देवी-देव मनाविया, सारा, पड़ी न पार।
मांझी सेठ सभी डरै, मरता करै पुकार ।।11।।
याद किये हूं पौंचसूं, विपदा में तत्काल।
बचन दियौ थौ सेठ नै, अजमलजी रै लाल ।।12।।

चौ.— करी पुकार बचन रौ नैचो, ज्याज बापजी म्हारौ खेंचो।
धन समेत सागर में मरसूं, थौरा दरशन कौंकर करसूं।
हूं तौ पापी औगणगारो, करदौ माफ भगत नै तारौ।
रौणेचै रा नाथ पधारौ, वचन दियौ क्यों आप बिसारौ।
माथै मौत बचावौ सौमी, मनरी जौणौ अंतरजौमी।
हरवू बीरम साथै खेलै, टेर सुणी बावै इक हेलै।
पासा लियों हाथ फैलायौ, ज्याज किनारै खीच लगायौ।
झाग हाथ पर, पासा गीला, हरवू बीरम लखी न लीला।

दोहा—ज्याज किनारै लागियौ, शांत हुयौ तोफौन।
मांझी सेठ न समझियां, कैंण बचाई ज्यौन ।।13।।

चौ.— धन, समोन ज्याज सूं उतारे, गाडा ऊंठ मंगाय किनारे ।
सो धन-माल लादियो वींपर, खेमे-कुशळे पोच गयो घर ।
मांझ्यों ने सब हाल सुणायो, बावे रो परताप बतायो ।
कच्छ देश रा मांझी था वे, कियो प्रचार, उठे रा घ्यावे ।
आज तलक रोणेंचे आवे, कच्छी-गुजराती गुण गावे ।
घर रो नै रोणेंचे रो नै, परचो सेठ बतायो वींने ।
बाबे री लीला वो गाई, रामदेव री भगती पाई ।
रोणेचे रा लोक-लुगाई, सबरे मन में खुशी समाई ।

दोहा—हार उठायो रामशा, ज्याज खींचते पार ।
परचो थो देखावणो, लियो गलं मे धार ।।14।।
सबसूं मिलियो बोयतो, खुशी हुयो भरपूर ।
सुख सूं कुछ दिन बीतिया, आई याद जरूर ।।15।।

चौ.— नजर करूं बावे रे आगे, लायो जिको निसोणी सागे ।
हार वीत पेटी में जोयो, मिलियो नहीं जणे सुख खोयो ।
हार घ्योन सूं म्हें थो धरियो, मिले क्यों नहीं किठे बिसरियो ।
मन में उपजी चिन्त्या भारी, बोली सेठोणी बेचारी ।
हीरा-मोती थे ले जावो, जल्दी सूं बाबे रे जावो ।
गमियो हार करो पछतावो, वो ने सच्ची बात बतावो ।
वो सूं कोई बात न छोनै, सच्ची भाव-भक्ति वे मोनै ।
करसी माफ रामशा थोने, देवे शरण सदा भगतों नै ।

दोहा—सेठ बोयतो पोचियो, सभा-भवन में जाय ।
दरसन कर परसन हुयो, बैठो माथो नाय ।।16।।

चौ.— कुशल-खेम वो पूछो वेनै, हाल बताया वे बावे नै ।
ज्योन बचाई निश्चे म्हारी, विपदा विकट टालदी सारी ।

बचन दियोड़ा क्यों विसराया, हेलो कियो ग्राप नहिं ग्राया ।
हीरों मोत्यों रो बणवायो, हार नजर करनै नै लायो ।
खूब खोजियो मिल नहिं पायो, समझ पड़ै नहिं किठै गमायो ।
दूजी भेट जिकैसूं लायो, बावै मुण वैनैं समझायो ।
बागे रो पट तुरत हटायो, हार गलै में वीं दिखलायो ।
सागी हार किठै सूं ग्रायो, सेठ बोयतो समझ न पायो ।

दोहा—हुयग्यो नैचो सेठ नै, बावो ग्राया ग्राप ।
मन मे भरम हुयो मनै, कियो घोर म्हैं पाप ॥17॥

चौ.—हुयो ग्रचंभो दरबार्यों नै, परचो परतक दीस्यो वांनै ।
जय-जयकार करी बाबैरी, माया कूंण लख सकै वैरी ।
रोंणेचो मोमूली, जागा, वड़ै सैर कद बससो ग्रागा ।
मन रो भेद सौमने ग्रायो, चरणां में पड़ सेठ लजायो ।
छोड़ शरण ग्रब कदे न जाऊं, वसूं ग्रठै थोरा गुण गाऊं ।
वै बाबैरो इशा पाई, नींव धरम री सेठ लगाई ।
धरमशाला बावड़ी बणाई, छेतर ग्रसपताल् खुलवाई ।
दौन-पुण्य भगती में सारो, कियो बोयतै धन्य जमारो ।

दोहा—भगतों रा प्रतिपाळ हो, रैवो वोरे साथ ।
बूलै रो हेलो सुणो, रोणेचै रा नाथ ॥18॥

□□

ॐ

।। श्री रामदेवाय नमः ।।

श्री रामदेव-चरित-मानस.

पांचवां चरण

जौंभंजो नै परचो

दोहा—गज-मुख गिरिजा तनय नै, सुमिरूं ध्यान लगाय।
ध्याऊं शारद दायनी विद्या, गुरु-पद नाय ।। 1 ।।
भाप-फळौदी बीच में, थौ जौभासर ठौंव।
सिद्ध पुरुष बसता उठै, जौंभौजी थौ नौंव ।। 2 ।।
रामदेव पर-ब्रह्म है, जौंभोजी था संत।
सिद्ध हुया पण ना हुयौ अहंकार रौ अंत ।। 3 ।।
सोरठा-जौंभै जौंणो नांय, माया थी प्रभु री प्रबल ।
अहंकार नहिं जाय, रामदेव सूं धाधकौ ।। 4 ।।
चौ.—जौंभै जौभोलाव खुदायौ, मन में दंभ मोकळौ छायौ।
एक भाट मेवाड़ी आयौ, रौणंचै जावै सुस्तायौ।
सुणी सिधाई जौंभंजी री, लो तौ बाबै री भगती री।
सोच्यौ सिद्धौ रै भी जाऊं, थोड़ी मैंमा गाय सुणाऊं।
जस गाऊं वौनै रीझाऊं, तौ शायद इनौम भी पाऊं।
जौभंजी रै पौंच्यौ सौमैं, सिद्धौ दीसी निश्चै वौं मैं।
कुण भगत? क्यों? कित सूं आयौ?, जाणौ किठै? भाट सकुचायौ।
हूं मेवाड़ी भाट बतायौ, रौणंचै जांवण नै आयौ।
दोहा—सिद्ध रामशा पीर है, ध्याऊं मन चित लाय।
बाबै रा दरशण करूं, रौणंचै में जाय ।। 5 ।।
जौंभौजी हँसिया, कह्यौ, कैण दियौ भरमाय ।
रामदेव नहिं सिद्ध है, बिरथा आगै जाय ।। 6 ।।
चौ.—रामदेव नै सिद्ध बतावै, वौ क्यों नहिं तळाव खुदवावै।
है नहिं साधन, नहीं सिधाई, वै री मौमूली ठकुराई ।

जोभै हलकारो बुलवायो, वैरै हाथे पत्र पठायो।
पत्र पाय बाबो झट आया, आदर कर वोनै बैठाया।
कुशळ पूछ जोभै बतळायो, म्हें सुन्दर तळाव खुदवायो।
चालो उठै तळाव दिखाऊं, अमृत जैसो पौणी पाऊं।
बाबै दंभ समझियो सारो, मन में बड़ो धाधको म्हारो।
सिद्धाई री हुसो परीक्षा, देणी पण जोभै नै शिक्षा।

दोहा—बाबो उठ साथै गया, देख्यो जाय तळाव ।
जोभै दिखळायो कह्यो, औ है जोभोळाव ॥ 7 ॥

चौ.—बाबै देख नाक सळ घाल्यो, जोभै रै मन खुटको चाल्यो।
जोभै देख्यो बाबै खोनी, चुप क्यों हुया? बोलिया क्योंनी ?
मैनत खरचो बिरथा जासी, कोई लाभ न इण सूं पासी।
बाबै कैयो है जळ खारो, भलो न रत्ती हुसी जनता रो।
पान-स्नान लायक नहिं पौणी, कपड़ा धोवण में भी होणी।
नर तो क्या पशु-पक्षी सारा, लाभ न पाय सकै बेचारा।
खिलखिलाय जोभोजी हँसिया, सोच्यो बाबो निश्चै फसिया।
सारो गोव पियै औ पौणी, बिना पियो थो कोकर जोणी।

दोहा—पौणी है उत्तम कह्यो, जोभैजी गरमाय ।
बाबो कै मोनूं नहीं, जळ खारो दिखलाय ॥ 8 ॥

चौ.—जोभै झारी तुरत मँगाई, चाँदी री झारी झट आई।
चाकर नै कैयो भरलावै, रामदेव नै लाय चखावै ।
झारी जळ सूं भरी निकाळी, चौदी पड़गी सारी काळी।
नौकर रा पग बायर आया, दोनूं पग काळा वौं पाया।
इचरज देख हुयो सारो नै, चमत्कार थो दीस्यो वौनै ।
जळ चाखण रो जोभै कैयो, चाकर नै, वो तकतो रैयो ।
दो टोपा वै डरतै धरिया, तुरत थूकियो, थू-थू करिया।
जैर जिसो जळ खारो लागो, झारी राख, दूर वो भागो।

दोहा—जोभोजी हैरोन था, मन में नेचो नांय ।
जळ खारो नहिं हुय सके, पण न समझ में आय ॥ 9 ॥
दूजों लोकों चाखियो, वो थूक्यो तत्काल ।
है किसोक ? जद पूछियो, अजमलजी रे लाल ॥ 10 ॥

चौ—चाखणवाळा सैन बतावे, ओ खारो जळ कौम न आवे ।
सिद्धाई तो निश्चै जोणी, जोभे मन में उल्टी ठोंणी ।
जळ चावै वेकार इयै में, पण तळाव नहिं रोणेचे में ।
मन में जोभे ढाढस धारी, बावे बात जोणली सारो ।
कैयो अगले एक मास में, रोणेचे रे ठीक पास में ।
एक बड़ो तळाव बणवासूं, त्यार हुयों आप नै बुलासूं ।
चढ़ घोड़े रामशा सिधाया, रोणेचे में पाछा आया ।
तुरत तळाव उठै खुदवायो, रोम सरोवर नोम रखायो ।

दोहा—त्यार हुयों, भेजी खबर, जोंभो पोंच्या आय ।
आदर करियो लेयग्या, दियो तळाव दिखाय ॥ 11 ॥
जोंभे पोंणी चाखियो, शीतळ, अमृत नीर ।
मन में उठियो धाधको, जोंभो हुयो अधीर ॥ 12 ॥

चौ.—सुन्दर ताळ, नोर भी चोखो, जोभे कह्यो हुयो पण धोखो ।
भरियो बोत रेत सूं पोंणी, आ देखी म्हें मन में जोणी ।
मैळौ आसी लोक भाव में, पोणी कम रैसी तळाव मे ।
आ मैनत तो बिरथा जासी, लाभ न लोक इयै रो पासी ।
ओ तळाव रैसी रेतीलो, जळ भी रैसी कुछ रोगीलो ।
जोभे पाई थी सिद्धाई, बात समझ बाबे रै आई ।
प्रण प्रभु रो पत जन रो राखै, वे भक्तों रै बस सै भाखै ।
जोभे बात कही नहिं टळसी, बात भगत री साची फळसी ।

दोहा—वात्यों करता भक्त सूं, आया थोड़ी दूर ।
कैयो बाबे आपरी, फळसी बात जरुर ॥ 13 ॥

मार्यो भालो पास में, ऊंडो दियो धसाय ।
पाछो काढ़्यो, निकळो जळ री धारा आय ॥ 14 ॥

चौ.—कह्यो धार आ चलती रैसी, कदेन रुकसी हरदम बैसी ।
तोडो कदेन जळ री आवै, झारी भर भक्त नै चखावै ।
जोंभै जळ चाखियो, सरावै, गाय ऊजला मन में आवै ।
मन रा दोष गया जोंभै रा, खुलिया ज्ञान-नेत्र झट वेरा ।
अठै बावडी सेठ बणांसी, वावो कैवै मैं जो न्हासी ।
तन रा रोग सैन मिट जासी, आ परचा बावड़ी कहासी ।
दो झारी भर थे ले जावो, जल तलाव में जाय मिलावो ।
जोंभासर रो नीर सुधरसो, आगे सूं मीठो जल भरसी ।

दोहा—ले भारी जोंभो गयो, वो जल दियो मिलाय ।
जोंभासर मीठो हुयो, सब पीवै हरखाय ॥ 15 ॥
जोंभै री ओख्यों खुली, समझ लियो परताप ।
मन रा गया विकार सव, धुपग्या सारा पाप ॥ 16 ॥
भक्तां री प्रभु नै फिकर, खोवै झट अभमोन ।
बूलै री हेलो सुणो, रामदेव भगवोन ॥ 17 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

छठा चरण

लाखै बणजारै नै परचौ

दोहा—गजानन्द आनंद दो, निर्मल बुद्धी देय ।
शारद नै सुमिरू सदा, गुरु-पद-रज- सिर लेय ।।1।।
भव-सागर में डूबियौ, माया मोयौ जीव ।
आखड़ते प्रभु सौंभलै, तारै करुणा-सीव ।।2।।
देश मालवै में हुंती, विणजारों री जात ।
दूर-दूर करतां विणज, नौमी बड़ी जमात ।।3।।

सोरठा—थौ बिणजारौ एक, लाखौ नौम बड़ौ चतर ।
केवट कूड़ अनेक, रिजक जोड़तौ विणज कर ।।4।।

चौ.— एक लाख बोर्यों गिणती री, लाद लेय बालध मिसरी री ।
देश मालवै सूं वौ आयौ, रौंणेचै में कुछ सुस्तायौ ।
जिकौ जिनस बार सूं लावंतौं, दौंण रूणेचै में चुकावंतौ ।
छूट दौण री हुंती नमक पर, दौंण मार लाखौ भरतौं घर ।
कूड़-कपट री बिरती वेरी, नीवत नहिं सुधरै लाखै री ।
बदनीवत वाबै सा जौणी, वैनै शिक्षा देणी ठौणी ।
सुन्दर बालक रूप वौं कियौ, लाखै नै झट जाय पूछियौ ।
बोर्यों में सेठों क्या लाया, लाखै लखी न प्रभु री माया ।

मार्यौ भालौ पास में, ऊंडौ दियौ धसाय।
पाछौ काढ़्यौ, निकळो जळ री धारा आय ॥ 14 ॥

चौ.—कह्यौ धार आ चलती रैसी, कदेन रुकसी हरदम बंसी।
तोड़ी कदेन जळ रौ आवै, झारी भर भक्त नैं चखावै।
जौभै जळ चाखियौ, सरावै, भाव ऊजला मन में आवै।
मन रा दोष गया जौभैं रा, खुलिया ज्ञान-नेत्र झट वैरा।
अठै बावडी सेठ बणांसी, बावौ कैवै में जो न्हासी।
तन रा रोग सैन मिट जासी, आ परचा बावड़ी कहासी।
दो झारी भर थे ले जावौ, जल तलाव में जाय मिलावौ।
जौभासर रौ नीर सुधरसो, आगे सूं मीठौ जल भरसी।

दोहा—ले झारी जौभौ गयौ, वौ जल दियौ मिलाय।
जौभासर मीठौ हुयौ, सब पीवै हरखाय ॥ 15 ॥
जौभै री आंख्यां खुली, समझ लियौ परताप।
मन रा गया विकार सब, धुपग्या सारा पाप ॥ 16 ॥
भक्तां रौ प्रभु नैं फिकर, खोवैं झट अभमौन।
बूलै रौ हेलौ सुणी, रामदेव भगवौन ॥ 17 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

छठा चरण

लाखै वणजारै नै परचौ

दोहा—गजानन्द आनंद दौ, निर्मल बुद्धी देय।
शारद नै सुमिरू सदा, गुरु-पद-रज- सिर लेय ॥1॥
भव-सागर में डूबियौ, माया मोयौ जीव।
आखड़ते प्रभु सौंभलै, तारै करुणा-सीव ॥2॥
देश मालवै में हुंतौ, विणजारों री जात।
दूर-दूर करतो विणज, नौमी बड़ी जमात ॥3॥

सोरठा—थौ विणजारौ एक, लाखौ नौम बड़ौ चतर।
केवट कूड़ अनेक, रिजक जोड़तौ विणज कर ॥4॥

चौ.— एक लाख बोर्‌यों गिणती री, लाद लेय बालध मिसरी री।
देश मालवै सूं वौ आयौ, रौणेचै में कुछ सुस्तायौ।
जिकौ जिनस बार सूं लावंतौं, दौंण रूणेचै में चुकावंतौ।
छूट दौण री हुंती नमक पर, दौण मार लाखौ भरतौ घर।
कूड़-कपट री विरती वेरी.. नीयत नहिं सुधरै लाखै री।
बदनीयत बाबै सा जौणी, वैनै शिक्षा देणी ठौणी।
सुन्दर बालक रूप वौं कियौ, लाखै नै झट जाय पूछियौ।
बोर्‌यों में सेठों क्या लाया, लाखै लखी न प्रभु री माया।

दोहा—साच बतायों, सोचियौ, लाखे, लगसी दौण ।
दौण मारनी कपट-कर, ली मन में वै ठौंण ॥5॥
बालक नैं मिसरी कह्यों, फैले बात कदास ।
देश विगोंणे में पड़ै, निगै राखणी खास ॥6॥

चौ.— बालक नै वैं लूंण बतायो, सीधो हूं सौंभर सूं लायो।
बालक खड़ो, मुलकतो रैयो, बोली फलसी वै झट कैयो।
रमतो बालक दूर भागियो, लाखो गाफल, नहीं जागियो।
लाखो टुरियो बालध सागै, दूजे नगर पौंचियो आगै।
नगर-सेठ नै जाय पटायो, लेवो तो मिसरी हूं लायो।
मौंग्यो सेठ नमूनो लाखै, दियो, राख मूंडै में चाखै।
मूंडो खारो हुयो, भड़कियो, लाखे नै वै सेठ तड़कियो।
साख जमायोड़ी क्यों धोवै, कूड़ बोल थारो पत खोवै।

दोहा—लूंण दियो, मूंडो कियो, खारो सौंपरतेक ।
चवड़ै कूड़-कपट कियो, थारी बचै न टेक ॥7॥
सारी बोर्यों सोधियों, लाखे झट घवड़ाय ॥
सब में पायो लूण वै, बात समझ नही आय ॥8॥

चौ.— लाखै बीजक काढ़ दिखायो, बीजक तो मिसरी रो पायो।
सेठ कह्यो किण मारग आयो ?, थें कैनैई लूंण बतायो।
बुद्धी हुयगी ठस लाखे री, याद बिसरगी सिगली वैरी।
माथै हाथ देय वो बैठो, फिकर भरगयो मनमें सैंठो।
आयो याद सेठ नै कैयो, तड़कै आज रूणेचे रैयो।
उठै एक बालक वो आयो, वे पूछ्यो म्हैं लूण बतायो।
नोम रूणेचो सुणते जाग्यो, सेठ बतावण वैने लाग्यो।
भोला वा धरती सिद्धों री, माया कूंण लख सकै वौंरी।

ाहा—सेठ कह्यौ, बालक नहीं, वे था बावौ आप ।
वौसूं कूड़-कपट कियौ, कियौ घोर थें पाप ॥9॥

ौ.— कोई वात न वौसूं छौनै, नहीं पढौण सक्यौ तूं वौने ।
वौसूं कपट कियौ, फल पायौ, वौ मिसरी नैं लूंण बणायौ ।
एक उपाव अबै है आछो, सीधौ भाग उठै तूं पाछौ ।
चरण पकड़ मौगे तूं माफी, बावै रै मन करुणा काफी ।
पछतायौ, रोयौं, घिरलायौ, वौनै साची बात बतायौ ।
वौनै थेंपर करुणा आसी, वै मिसरी लूंण नै बणासी ।
सुणते वौ रौंणेचै पासौ, भागौ, रौवै, चिन्त्या खासी ।
मिलिया बावौ वैनै सौमै, लाखौ रोय पड़्यौ चरणौ में ।

दोहा—लाखै बिलख, रुदन कियौ, पछतायौ भरपूर ।
म्हें न लखो माया प्रभू, करियौ पाप जरूर ॥10॥
कपट कियौ, फल पावियौ, झेलौ म्हारी हाथ ।
माफ करौ अबकै मनै, रौणेंचै रा नाथ ॥11॥

चौ.— कपट कियौ, ऊमर पछतासूं, अब न करूं, थौरा गुण गासूं ।
इयै कार में जितौ कमासूं, आधौ धन दौन में लगासूं ।
कूड़-कपट सूं नातौ तोड़ूं, पाप कमाई कदे न जोड़ूं ।
करदौ मिसरी पाछी म्हारी, खुलसी आंख्यौ सब दुनिया री ।
बावै बिरती सुधरी पाई, पछतावौ लख करुणा आई ।
सुणियौ परभू पण लाखै रौ, वौ निस्तार कर दियौ वैरौ ।
कैयौ जा मिसरी हुय जासी, कदे न तूं अब कूड़ कमासी ।
लाखै री चिंत्या सा बिसरी, आयौ नमक हुयगयौ मिसरी ।

दोहा—पाछी जो मिसरी बणी, थी वा अफलातून ।
दुगणौ नफौ हुयौ, कह्यौ, लाखै हूं राखू न ॥12॥

चौ.— देश मालवै पाछौ आयौ, लाखे सारो गाँव जीमायो।
बणजारों में फैली चरचा, सुणिया बौ बावे रा परचा।
लोग मालवै रा सैं ध्यावे, साल-साल वे मेलै आवै।
लाखै धन दौन में लगायो, मिनख जमारौ सफल बणायौ।
खास तौर सूं बिणजारों में, भाव-भक्ति बाबै री वौंमें।
लाखै कूड़-कपट तज दीनो, आगैं बिणज साच रौ कीनो।
मंदर वणिया जागा-जागा, सरब जात रा धोकण लागा।
मिसरी री परचौ सब जाणैं, सब लाखै रा भाग बखाणैं।

दोहा—बावै भगत उबारियो, लाखौ हुयग्यौ न्याल।
बूलै री हेलौ सुणौ, अजमलजी रा लाल ॥13॥

ॐ

।। श्री रामदेवाय नमः ।।

श्री रामदेव-चरित-मानस

सातवां चरण

पीरों नै परचा

दोहा—सूंडाळे गज-वदन रो, धरूं ध्यान चित लाय।
ज्ञान, बुद्धि, वाणी विमल, पाऊं सरसुत ध्याय ।। 1 ।।
गुरु-पद-रज मौजूं करूं, काच काळजो साफ।
मंद-बुद्धि हरि-गुण लिखुं, करो दिठाई माफ ।। 2 ।।

सोरठा—धरियौ मनुज शरीर, पीरां ने परचा दिया।
वज पीरों रा पीर, पंथ-भेद सब मेटिया ।। 3 ।।

चौ.—मुसळमान भारत में आया, पंथ-भेद रा दुख फैलाया।
जुलम फैलिया भारत भर में, गउ, ब्राह्मण कळपे घर-घर में।
संकट में थौ धर्म सनातन, वेद अलोप, डिग्यौ सबरौ मन।
रामदेव माया-तन धार्‌यो, देश-विदेश सुजश विस्तार्‌यौ।
दूर-दूर तक फैली चरचा, रामदेव रा अद्‌भुत परचा।
बात पौनगी मक्के तौई, कुबध घड़ी पीरों सारोंई।
पौच पीर भारत में जावे, वायं नै नीचो दिखलावे।
पीरों मिल घड़ियौ औ कौतक, चैन न, पार पड़े आ जब तक।

दोहा—आय रुणेचे पौचिया, पौंचूं पक्का पीर।
लंबी अलफ्यौ धारियौ, वौरा विकट शरीर ।। 4 ।।

चौ.—रौणेचे रै नैड़ा आया, दोय जणा रोई में पाया।
एक दीसियौ सीधौ थोड़ौ, दूजौ आप चरावे घोड़ौ।
सीधे चाकर देख्या वाने, डरियौ देख पौच पीरों नै।
बिना कयौं कुछ वौ घर भागौ, घर में मा नै कैंवण लागौ।
आप चरावे रामा घोड़ौ, एकेला है वौं पर फोड़ौ।
पांच अजीब मिनख आया है, बावै पर संकट छाया है।

स्वारथियौ तो धूजे थर-थर, मा रै मन में नहीं रती डर।
मा कैयो रामा समरथ सुण, रामदेव नै जीत सकै कुण।
दोहा—लुकजा कमरै में तुरत जे डर तनै कदास।
बावै री मत कर फिकर, वौ रै डर नहिं पास ॥ 5 ॥

चौ.— स्वारथियौ कमरै में वड़ियौ, काळौ सरप नजर में पड़ियौ।
सक्यौ न दौड़ इतौ घबरायौ, सरप इतैनै नैड़ौ आयौ।
सांप डस्यौ स्वारथियै नै झट, कूक्यौ मीच्या आंख्यौ रा पट।
कूक सुणी, मा भीतर आई, देख दशा वैरी घबराई।
वड़तौ बिल में नाग दीसियौ, सुत रै मुख में झाग दीसियौ।
स्वारथियै री लौथ पड़ी थी, मात रोंवती खनै खड़ी थी।
प्राण दिया वेटै, कै कैनै कूण वँधावे धीरज बँनै।
करै विलाप सुणै नहिं कोई, छाती-माथौ पीटै रोई।
दोहा—पाड़ोसी भेळा हुया, भीड़ लागगी वार।
देखै मारग वंवता, रोवै धाड़ा मार ॥ 6 ॥

चौ.— उठै पीर नैड़ा पौच्या जब, बावै नै मारग पूछ्यौ तब।
नगर रुणेंचौ पूछौ थौनै, रामदेव सूं मिलणौ म्हौनै।
बावै कयौ दास है सौमै, नही बोलियौ कोई पौंचौ में।
राजकुमार चरावै घोड़ौ, कियौ अचंभौ वौं नहिं थोड़ौ।
सोच्यौ ठाठ दीखसी जबरा, ठगिया मन बावै वौ सबरा।
राजा घोड़ौ आप चरावै, पीरों कयौ, समझ नहिं आवै।
म्हारौ कौम करूं खुद हूं जे, बात लाज री है क्या कौ थे।
वड़ौ असर पीरों पर पड़ियौ, पण मन में वौ कोतक घड़ियौ।
दोहा—पीचौं रै या हाथ में, दौंतण तिणखा पौंच।
कियौ मतौ, वौं फेंकिया, तिणखा पौंचूं खौंच ॥ 7 ॥

चौ.— एक लैण मे तिणखा पड़िया, दरखत पौच तुरन्त उपड़िया।
ऊंचा हुयग्या, पल में बधिया, चमत्कार पीरों रा सधिया।
रतो अचंभौ कियौ न बावै, पीरों रै नहिं आया तावै।

आया अतिथि पधारो घर पर, भोजन करो पवित्र करो घर।
पीरों नैं बावो संग लाया, स्वारथियै रै घर तक आया।
उठै भीड़ लागी थी भारी, रुदन अवाज सुणी माता री।
उजड़ गयो है जीवण सारो, वेटो आप जिआवो म्हारो।
पड़गी पगौं, इयौं वै कैयो, बावै सूं दुख गयो न सैयो।

दोहा—ओ तो म्हारै साथ थो, आयो घरे अवार।
इतो देर में क्या हुयो, पड़ी काळ री मार।। 8।।
माता री देखी दशा, पीरों खोनी जोय।
म्हारों मित्र जियो बिना, माता सुखी न होय।। 9।।
आप पौचिया पीर हो, देवो मित्र जिवाय।
अठै आपरी आंवणो, म्होंनै भी फळ जाय।। 10।।

सोरठा–पीर हुया लाचार, मरियोड़ो कौकर जियै।
नहीं मौनणी हार, मन में कोतक सोचियो।। 11।।
मक्कै में तावीज, म्होंरा है, लाया न म्हें।
मन तो रयो पसीज, हुवणहार ओ कौम नहिं।। 12।।

चौ.— नहीं असंभव है जियावणो, कौम मगर तावीज रै तणो।
सिद्ध आपनै भी सब कैवै, कोम हुयौं बिन फिर क्यों रैवै।
मृतक सखा नै आप जियावो, माता रो दुख क्यों न मिटावो?।
स्वारथियै रो हाथ झालियो, पीरों रो दिल, देख हालियो।
हेलो दियो, सूंयग्यो कौंकर, जाग, खातरी पीरों री कर।
हड़बड़ाय स्वारथियो उठियो, पीरों रो मन विस्मय गुडियो।
देखै वै स्वारथियै खोनी, लज्जित हुया, हार वो मौनी।
सफळ हुय गयो अठै आंवणो, म्होनै मक्कै तुरत जांवणो।

दोहा—आया बण मैमौन जे, भूखा जावो आप।
सेवा कियो बिना जदी, जांवण दूं तो पाप।। 13।।
स्वारथियै नै साथ ले, घर पीरों नै लाय।
एक जणो बैठे जितो, आसण दियो बिछाय।। 14।।

स्वारथियौ तौ धूजै थर-थर, मा रै मन में नहीं रती डर।
मा कैयौ रामा समरथ सुण, रामदेव नै जीत सकै कुण।

दोहा—लुकजा कमरै में तुरत जे डर तनै कदास।
बावै रौ मत कर फिकर, वौ रै डर नहिं पास ॥ 5 ॥

चौ.— स्वारथियौ कमरै में बड़ियौ, काळौ सरप नजर में पड़ियौ।
सक्यौ न दौड़ इतौ घबरायौ, सरप इतैनै नैड़ौ आयौ।
सांप डस्यौ स्वारथियै नै झट, कूक्यौ मीच्या ओख्यौ रा पट।
कूक सुणी, मा भीतर आई, देख दशा वैरी घबराई।
बड़तौ बिल में नाग दीसियौ, सुत रै मुख में झाग दीसियौ।
स्वारथियै री लोथ पड़ी थी, मात रोवती खनै खड़ी थी।
प्राण दिया बेटै, कै कैनै कूण बँधावे धीरज वैनै।
करै विलाप सुणै नहिं कोई, छाती-माथौ पीटै रोई।

दोहा—पाडोसी भेळा हुया, भीड़ लागगी बार।
देखै मारग वंवता, रोवै धाड़ा मार ॥ 6 ॥

चौ.— उठै पीर नैड़ा पोच्या जब, बावै नै मारग पूछ्यौ तब।
नगर रुणैचौ पूछौ थौनै, रामदेव सूं मिलणौं म्हौनै।
बावै कयौ दास है सौमै, नहीं बोलियौ कोई पोंचो में।
राजकुमार चरावै घोड़ौ, कियौ अचंभौ वौं नहिं थोड़ौ।
सोच्यौ ठाठ दीखसी जबरा, ठगिया मन बावै वौ सबरा।
राजा घोड़ौ आप चरावै, पीरो कयौ, समझ नहिं आवै।
म्हारौ कौम करूं खुद हूँ जे, बात लाज री है क्या कौ थे।
बड़ौ असर पीरों पर पड़ियौ, पण मन में वौ कोतक घ...
दोहा—पोचों रै था हाथ में, दौतण तिणखा ...
कियौ मतौ, वौ फेंकिया, तिणखा पोंचूं ...
चौ.— एक लैण में तिणखा पड़िया, दरखत पौंच पु...
ऊंचा हुयग्या, पल में बधिया, चमत्कार पीरों ...
रतौ अचंभौ कियौ न बावै, पीरों रै नहिं

आया अतिथि पधारो घर पर, भोजन करो पवित्र करो घर।
पीरों ने बावो संग लाया, स्वारथियै रै घर तक आया।
उठै भीड़ लागी थी भारी, रुदन अवाज सुणी माता री।
उजड़ गयो है जीवण सारो, बेटो आप जिमावो म्हारो।
पड़गी पगाँ, इयो वै कैयो, बावै सूं दुख गयो न सैयो।

दोहा—ओ तो म्हारै साथ थो, आयो घरे अवार।
इती देर में क्या हुयो, पड़ी काळ री मार।। 8।।
माता री देखी दशा, पीरों खोनी जोय।
म्हारों मित्र जियौं बिना, माता सुखी न होय।। 9।।
आप पौंचिया पीर हो, देवो मित्र जिंवाय।
अठै आपरो आंवणो, म्होंनै भी फळ जाय।। 10।।

सोरठा—पीर हुया लाचार, मरियोड़ो कोकर जियै।
नही मोनणी हार, मन में कोतक सोचियो।। 11।।
मक्कै में ताबीज, म्होंरा है, लाया न म्हें।
मन तो रयो पसीज, हुवणहार ओ कोम नहि।। 12।।

चौ.— नहीं असंभव है जियावणो, कोम मगर ताबीज रै तणो।
सिद्ध आपनै भी सब कैवे, कोम हुयौं बिन फिर क्यों रैवे।
मृतक सखा नै आप जियावो, माता रो दुख क्यों न मिटावो?।
स्वारथियै रो हाथ झालियो, पीरों रो दिल, देख हालियो।
हेलो दियो, सूंयग्यो कोंकर, जाग, खातरी पीरों री कर।
हड़बड़ाय स्वारथियो उठियो, पीरों रो मन विस्मय गुडियो।
देखै वे स्वारथियै खोनी, लज्जित हुया, हार वो मोनी।
सफळ हुय गयो अठै आंवणो, म्होनै मक्कै तुरत जांवणो।

दोहा—आया बण मैमोन जे, भूखा जासो आप।
सेवा कियो बिना जदी, जांवण दूं तो पाप।। 13।।
स्वारथियै नै साथ ले, घर पीरो नै लाय।
एक जणो बैठे जितो, आसण दियो बिछाय।। 14।।

चौ.— ताकै पीर न बैठे कोई, रामदेव वौरी मति मोई।
श्रो अपमान गयो नहि सैयो, गुस्सो कर सब पीरों कैयो।
बैठे इक आसण रै माथै, बैठां च्यार जमी पर साथै।
क्या आ वात फूटरी लागै, बावो तुरत बोलिया आगै।
बिना बैठियां ओगण काढ़ो, दोष बतावो म्हारो गाढ़ो।
वाजब क्यों आ बात बतावो, बिना बात मन में दुख लावो।
कौंकर बैठे, शंके सारा, मन ठगिया, ताकै बेचारा।
बैठो एक, बढ़्यो आसण तब, बढ़तो गयो, बैठग्या वे सब।

दोहा—चमत्कार ओ देखियो, लाजो मरग्या पीर।
कडो परीक्षा लेवणं, खातर हुया अधीर॥ 15॥

चौ— पीचूं बैठ गया जब आसण तुरत बतायो बावै नै पण।
भूल गया मक्के में बरतण, आवै नहि, जावै कुण लेवण।
खुद रै ठौवो में म्हे खावो, वै नहि आयो भूखा जावों।
बात इती बावै कैयो हँस, आप हुय गया क्यों चिन्त्या बस।
पीरों हठ धरियो धक्कै सूं, आया ठौव तुरत मक्कै सूं।
बरतण देख पीर शरमाया, समझ न सकिया कौंकर आया।
रोंधो म्हारै एकै बरतण, भोजन, तो जीमो, ओ भी पण।
बावै वौं रो ठौंव मगायो, तुरत ठौव मक्कै सूं आयो।

दोहा—इन्छया भोजन जे मिले, तोई जीमै पीर।
मिलै जिसो भोजन करै, वो नै गिणै फकीर॥ 16॥
एकै बरतण नहि मिलै, इन्छया भोजन आज।
म्हानैं भूखो जांवणो, आप न मोनो लाज॥ 17॥

चौ.— बावै कयो बात मौमूली, और बतावो जे कोई भूली।
मन इन्छया माफक दूं व्यंजन, मांगो जो चावै थांरो मन।
तरै तरै रा नाम बताया, एकै बरतण सब वो पाया।
भोजन कियो पीर शरमाया, इन्छया भोजन कियो अघाया।
भोजन सूं जब पीर निमटिया, चमत्कार लख सैन सिमटिया।

मक्कै ठौंब गया झट पाछा, मन में भाव उमड़िया आछा।
जैसा समरथ सुण कर आया, वैसूं बड़ा सिद्ध वौं पाया।
तुच्छ आपनै समझ लजाया, बावै रा गुण पीरौं गाया।
दोहा— म्हे तौ कोरा पीर हौ, थे पीरौ रा पीर।
माफ करौ, म्हों हठ कियौ, मौनी हार अखीर ॥ 18 ॥
मुसळमौन था, था मगर, बावै रा मैमौन।
पीरों पदवी दी, जिको, रौ बावै नै ध्यौन ॥ 19 ॥
चौ.— बात राखणी मैमौनौ री, काली बात पड़ै नहिं वौरी।
बावै लेय समाधी जीवत, पीरों री राखी पूरी पत।
पीर रामशा रा गुण गावै, सै पंथों रा वौनै ध्यावै।
सै पंथो रा भेद मिटाया, बाबौ हिन्दू पीर कहाया।
बावै छूत अछूत मिटाई, दलित जनों री करी भलाई।
ऊँच-नीच रा पथ जात रा, भेद फैलिया बात-बात रा।
बावै अंतर सौन मिटायौ, सुख रौ पथ जग नै दिखलायौ।
भगत सैन रौणेचै जावे, मंदर में मरजाद निभावै।
दोहा—समता रौ उपदेश है, बावै रौ उपकार।
वौरै मारग जे चलै, सुखी हुवै संसार ॥ 20 ॥
जिकी समस्या देश री, नेता है लाचार।
साल पौंच सौ सूं निभै, मंदर में वौ कार ॥ 21 ॥
भेद-हरण, समता करण, धरियौ मनुष शरीर।
बूलै रौ हेलौ सुणौ, आप रामशा पीर ॥ 22 ॥

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

आठवां चरण

सुगनो रा सुखदाता वीरा

दोहा—लंबोदर दो बुद्धिवर, सरसुत श्रो वरदान ।
गुरुवर-पद उर धर करूं, रामदेव गुणगान ॥ 1 ॥
सुगनों पीवर में नहीं, प्रभु रो रचियो ब्यांव ।
माता नैं देखो दुखो, दिखळायो परभाव ॥ 2 ॥

चौ.—वैठा पाट उतारै पीठी, मात दुखी बावे नै दीठी।
शुभ वेळा ओख्यों में पौणी, मन री दशा रामशा जोणी।
कैण दियो दुख ? मा क्यों रोवै, आँसू सूं ओख्यों क्यों धोवै ।
मैणादे चुप, शंको करियो, हाल अंत में कैयो सरियो ।
गई सासरै, जब परनाई, पीवर कदे न सुगनो आई ।
वीरम, रामदेव सा भाई, जनम-दुखी पण सुगनोबाई ।
दौनों बीच जीव ज्यों रैवै, आठ पौर दुख कैनैं कैवै ।
ब्यांव देख सारा हरखावै, सुगनो बिना अणेसो आवै ।

दोहा—बड़ा हठो पड़िहार है कूण मनावै जाय ।
वोसूं बस चालै नहीं, कोकर सुगनो आय ॥ 3 ॥
जाऊं पूगळ, देखलूं, है किसाक पड़िहार ।
सुगनों नैं लाऊं तुरत, माता धोरज धार ॥ 4 ॥

चौ.—वैठो बींन, तेल चढ़ियोड़ो, बार न जाय, टैम भी थोड़ो ।
मना किया माता बावे नैं, वैम आयग्यो मन मे वैनैं ।
प्राकृत-पुरुष मात बस जोण्या, परब्रह्म नैं नही पछोण्या ।
माता री इज्जा नहिं पेलै, पण वैरो दुख कोकर झेलै ।
राईकै नैं तुरत बुलायो, रतनो राईको झट आयो ।
कसलै ऊंठ जाव झट रतना, पूगळ पौच देर कर मतना ।
पत्री पड़िहारों नैं दीजे, सुगनो नैं साथै लाईजे ।

पूगळ दूर, टैम है थोड़ी, मारग विखम, पड़ सकै फोड़ी।
दोहा—पैंडो पूरो मास रौ, बोंका है पड़िहार ।
माथे इशा आपरी, कोंकर पड़सी पार ? ॥ 5 ॥
चौ.—टुरजा तुरत, सोच कुछ मतना, म्हें पर बात छोड़ सब रतना।
पड़ै बिखौ तौ तुरत पुकारे, पड़ियों संकट रती न धारे ।
हरदम थारै मगरै रैसू, नहीं तनै डर कदेन, कैसूं ।
चोखो ऊंठ राईको लायो, वै पर झट पलांण कसवायो।
जय गणेश कै हुयो रवांनै, नैचो बाबै रौ मन मांनै ।
पौन वेग सूं ऊंठ चलायो, खासी दूर सांझ तक आयो।
जागा देख, ऊंठ ठैरायो, सूय गयो, थाकेलो छायो ।
आंख खुली रतनो चकरायो, नवो नगर नजरयों में आयो।
दोहा—राइकै उठ देखियो, एक कुओ थो पास।
पणियार्‌यों नै पूछियो, नांव, गांव अरु वास ॥ 6 ॥
पूगळगढ़ ओ गांव है, पड़िहारों रो राज ।
कूण बटोई, किठै सूं, आयो है किण काज ॥ 7 ॥
चौ.—तुंअरों रो चाकर बण आयो, पड़िहारों रै पत्री लायो।
रामदेव रो ब्यांव रचायो, सुगनो नै लेवण हूं आयो।
पणियार्‌यों कै घिरजा पाछो, पड़िहारों सूं मिलण न आछो।
रतनै सुणी एक नहिं वांरी, वात न मांनी पणियार्‌यों री।
सभा-भवन देख्यो वै सैठो, विजयसिंह सिंहासण बैठो ।
ठांठ देखिया, रतनै जबरा, मद-छकिया चेरा था सबरा।
जोड़ हाथ मरजाद निभाई, पत्री राजा रै पोंचाई ।
अजमलजी री पत्री लायो, सुगनो नै लेवण हूं आयो।
दोहा—कोमड़, तुंअर, तंबूरिया, पड़िहारों सूं होड ।
छत्री-धरम रती नहीं, नीच करम सूं कोड ॥ 8 ॥
पैंडो पूरो मास रो, दिन रैया है सात ।
नौम कियो, नैतो दियो, मन में वोरै घात ॥ 9 ॥
चौ.—कोमड़ियों रै सुगनो जावै, पड़िहारों रो नाक कटावै
हाथ तंबूरा, घूमै गावै, रजपूतो नै तुंअर लजावै।

अष्टावक्री, पँगळी, ओंधो, सोढ़ोंघी तुंअरो रे बोंघो।
वैने वर, न, वीनणी बोंनै, कुण कन्या दे कोमड़ियों नै।
तुंअर भोमिया दो गोंवों रा, क्या कैणा वों कोंमड़ियों रा।
सुण राईकै आपो खोयो, तम-तमाय वों खोंनी जोयो।
मद में बोलो ऐरा-गैरा, जोंणों नहिं परनोम इयैरा।
रामदेव जे कोप करैला, बे आई पड़िहार मरैला।

दोहा—रामदेव रै ब्यांव में, जे सुगनो नहिं जाय।
पूगळ पाटै उतरसी, निश्चै परलै आय ॥ 10 ॥
रौंवण रो भी जगत में, रैयो नहिं अभिमोन।
थोंरे मद नै, गाळसी, रोमदेव भगवोन ॥ 11 ॥

चौ.—तीखा बोल सुणया रतनै रा, पड़िहारो रा तणगया चैरा।
फड़कै होठ, विजयसिंह बोल्यो, आग उगळतै मूंडो खोल्यो।
कोमड़ियों रो दास कमीनो, बोलै तुंअरों रै मदभीनो।
जीब कटारो नीच चलाई, मौत इयै री नैड़ी आई।
ऊंठ खोस, दो दंड इयै नै, फेर देखसों कोमड़ियै नै।
नीच जात में पोल चलाई, म्हों सू लड़नै में न भलाई।
बोंध कुए में ऊंधो टेरो, इसै नीच नै दो ओ डेरो।
भूखो तिसो रोय मरजासी, देखूं रामदेव कद आसी।

दोहा—राईकै नै बोंधियो, ऊंठ खोस, संताय।
रीसटिया पड़िहार था, दियो कुए लटकाय ॥ 12 ॥

चौ.—रतनो राइको बिरलावै, रामदेव नै टेर लगावै।
समधी मनै बुरो संतावै, वचन दियोड़ो क्यों विसरावै।
रामापीर सुणो भट आवो, पड़िहारों रो दंभ मिटावो।
वों अपमोन कियो तुंअरों रो, चाकर सैय न सकियो थोंरो।
सुगनो बाई नै संतावै, तीर सरीखा बोल सुणावै।
अभमोन्यों नै कुण समभावै, थोंरो री बळ न समझ में आवै।
चाकर थोंरो मरै बापसा, हूं दुख पाऊं, घणो आपसा।

रामा राजकुमार पधारो, कष्ट दास रो काटो सारो।

दोहा—वाई विलखै मैल में, रतनो खोवै धीर।
टेर करे दोनूं सुणो, हे सुगनो रा बीर॥ 13॥

चौ.—नणद हाल सुगनो ने कैया, सुण सुगनो रा होश न रैया।
रामदेव रो ब्यांव रचायो, कूंकूं-पत्री रतनो लायो।
सुगनो ने लेवण वो आयो, राजा बांध कुए लटकायो।
सुगनो रे मन में दुख छायो, नणद काळजे नें कळपायो।
करुण टेर की सुगनो वाई, कद सुध लेसो रामा भाई।
देर कियो पाछे पछतासो, सुगनो नें न जीवती पासो।
रतनो रोय-रोय मरजासी, थोरी मरजादा मिटजासी।
भगतो रा अधार भट आवो, पड़िहारो रो दंभ मिटावो।

दोहा—रतनो पूगळ आवियो, थोरो नैचो धार।
देय रया दुख दास नें, अभमोनो पड़िहार॥ 14॥
अंतरजामी आप हो, सुणलो करुण पुकार।
नहि तो आतम-घात कर, बैन मरैली हार॥ 15॥
राईको रोयो, करी सुगनो, करुण पुकार।
रोणेचे में ओजट्या, रामा राजकुमार॥ 16॥
पल में परभू पोंचिया, पूगळगढ़ रे बाग।
सूको बाग हुयो हरो, गया फूल-फल लाग॥ 17॥

चौ.—माळी देख अचभो करियो, सूको बाग हुयो भट हरियो।
देख मैकता पुपव रंगीला, माळी समझ न सकियो लीला।
वीर वेश भालो कर धारी, लीले घोड़े री असवारी।
तुंअर कँवर बाग में उतरिया, न्यारा हुय गयो दरशण करिया।
तोड़ पुपव वे हार बणाओ, राजा खने हरखतो आयो।
राजा सुन्दर हार निरखियो, हुयो अचंभो वात न लखियो।
ताके हार समझ नहि पायो, माळी पुपव किठै सूं लायो।
कोकर हरियो बाग बणायो, चमत्कार ओ कैण दिखायो।

दोहा—आय बगीचे उतरिया, तुंअर कँवर- सिरदार।
सूको बाग कियो हरो रामा राजकुमार ॥ 18 ॥
पौंचू सस्तर धारियों, खाँधे बाँधी ढाल।
लीले घोड़ै पर चढ़्या, अजमलजी रा लाल ॥ 19 ॥
डाल-डाल सूं नीसरै, वीणा री गुंजार।
झांझ-मजीरै री उठै, पत्तों में झणकार ॥ 20 ॥
आयो तुंअर तंवूरियो, बोल्या सब पड़िहार।
जांवण दो जीवतो, बाग घेर दो मार ॥ 21 ॥

चौ.—बंध किवाड़ किले रा करदो, भुरजों माये तोप्यों धर दो।
जाय बाग रै घेरो डाळो, भाग न जाय तंवूरै वाळो।
वीरों मारू राग बजावो, सस्तर सौंभो, फौज सजावो।
पांचजन्य प्रभु शंख बजायो, देवों रो दळ तुरत बुलायो।
सुर-सेना गढ़ आय घेरियो, चौतरफो दळ नै बिखेरियो।
साथ जोगण्यो, दुरगा आई, हनूमान लंगूर फिराई।
बावन भैरूं तुरत बुलाया, जुद्ध करण ले सस्तर आया।
बावे गढ़ पर तीर चलाया, खेत रया पड़िहार भगाया।

दोहा—तोप्यों रा मूंडा फुर्या, गोळा गढ़ में जाय।
लड़ मरिया पड़िहार सब, एकूकै नै ढाय ॥ 22 ॥
गढ़ में घर-घर में लगी, तुरत भयानक आग।
प्रगळ पाटै उतरियौं, रया लोक सब भाग ॥ 23 ॥
पौचू भाई पौचिया, मा पासै पड़िहार।
रामदेव सूं हारिया, मरनो लियो विचार ॥ 24 ॥
गुफा जिसै गुंभार में, माता दिया लुकाय।
मूंडै रै आडी वरी वड़ी सिला इक लाय ॥ 25 ॥

चौ.—लुकियोड़ा था अंधारै में बिच्छू तुरत निपजिया वैं में।
डंक मारिया पड़िहारों रै, लागी बळत शरीरों वों रै।
पीड़ अथाग जोर सूं रोया, वार काढ़ मा मूंडा धोया।
सुगनो आगे सासू रोई, आँसू ढाळ पगथळयों धोई।

पड़िहारों नै बीरो मारै, लाज कुटम री थारै सारै।
पाप किया पड़िहारों काफी, जाय मांग भाई सूं माफी।
थारी बात रामशा मोने, ज्योंन बगसदे पड़िहारों नै।
कै सुगनो वै तो कोमड़िया, बोका वीर क्यों नहीं लड़िया।
सोरठा—ऐ सब बात्यों छोड़, स्वाग कुटम री ध्यांन कर।
मिटगी सान मरोड़, पड़िहारों री मद गयो॥ 26॥
तुरत बाग में जाय, जुद्ध वंद करवाय दे।
माफी मांग मनाय, रामदेव राजी हुसी॥ 27॥
चौ.—सुगनो तुरत बाग में आई, रामदेवजी गळै लगाई।
मांगू भीख मनै दो भाई, जल्दी करदो बंद लड़ाई।
जांण्यो बळ प्रताप वो थोरो, दंभ मिट गयो पड़िहारों री।
क्षमा बड़ा है करता आया, छोटों रा कसूर बिसराया।
स्वाग कुटम री मांगू भिक्षा, पड़िहारों नै मिलगी शिक्षा।
मांनी बात बैन री भाई, करदी बंद तुरंत लड़ाई।
सुगनो री सासू तब आई, पोचू पूत साथ में लाई।
पड़िया बाबै रै चरणो में, बोलण री हीमत नहिं वो में।
दोहा—मा बेटो मांगी क्षमा, करिया करुण विलाप।
औगण सैन विसार दो, महापुरुष हो आप॥ 28॥
हाथ अदीठ पसारियो, बंध खोलिया सैन।
राईको आयो उठै, देख हुयो मन चैन॥ 29॥
चौ.—कियो पाप दुख दीनो काफो, राईकै सूं मांगी माफी।
सांमें खड़ा देख धणियो नै, माफ कर दिया रतनै वीनै।
म्हांरा सब अपराध विसारो, रोणेचे अब आप पधारो।
रतनोजी सुगनो नै लासी, जल्दी सुगनो पीवर आसी।
बाबो अंतरधान हुयग्या, खड़ा उठै सब देखता रया।
सुगनो नै भेजण री त्यारी, पड़िहारों झट कर दी सारी।
मांनी नहिं सुगनो हठ कीनो, अमरसिंह नै साथे लीनो।
सासू बोली तूं पछतासी, भरी गोद खाली कर आसी।

दोहा—सुगनो पण मौनी नहीं, लियो पुत्र नै साथ।
रामा रो नैचो मनै, बीरा लंबा हाथ ॥ 30 ॥

चौ.—रतनो, भोणू, सुगनो टुरिया, रौणेचै पोंचण नै भुरिया।
रात अंधारी कियो वसेरो, वो उजाड़ में डाळयो डेरो।
आधी रात तलक सुस्ताया, घड़ी पलक में डाकू आया।
वों धन माल मोगियो सारो, रतनो एकेलो बेचारो।
हीमत कर राईको लड़ियो, घायल हुयो, अंत में पड़ियो।
ऊंठ समेत खोस धन सारो, डाकू गया, करै कुण लारो।
बेसुध रतनो, सुगनो रोई, सूनवाड़ में सुणै न कोई।
सुणलो बीरा आप पधारो, दास, बैन नै आय उबारो।

दोहा—म्हारा, म्हारे लालरा, हुया बौत बेहाल।
घायल राईको हुयो. लूट लेयग्या माल ॥ 31 ॥

चौ.—कष्ट कियो पूगळ गढ़ आया, म्हों दुखियों नै आप बुलाया।
सो करियो बिरथा हुय जासी, भोण बैन पोंच नहि पासी।
बचन मात नै दियो निभावो, मैणा दे सूं मनै मिलावो।
रामदेव बीरा झट आवो, म्हों तीनों रा प्राण बचावो।
भूखा-तिसा रोय मरजासों, थौरो ध्यांव देख नहि पासो।
कैयो थारे मगरै रैसूं, छोड़ दियो मो क्यों रतनै सूं।
धन-पत गयो, प्राण भी जावै, दूजो म्होनै कुण बचावै।
अजंमलजी रा कँवर पधारो, काटो म्हों रो संकट सारो।

दोहा—सुणं पुकार प्रगट्या तुरत रामा राजकुमार।
भालो सोवै हाथ में, लीलूड़ै असवार ॥ 32 ॥
जाऊं हूं, धीरज धरो, लूटारों रै लार।
लाऊं पाछो माल सब, वों दुष्टों नै मार ॥ 33 ॥

चौ.—रतनै रै तन पर फेर्यो कर, स्वस्थ हुयो, मन रो भागो डर।
जाय पकड़िया लूटारों नै, आंधा, कोढ़ी करिया वोनै।
वों कैयो म्हे बेकसूर हों, इसै करम सूं सदा दूर हो।

यवन बादशा भेज्या म्हांने, मत मारो साची कौं थाने।
धन पाछो ले दीनी माफी, कियो कसूर बड़ो थो काफी॥
परबस जोण आज छोडू हूँ, प्राण-दंड नहिं तो थाने दूं।
कैय दिया थोरै मालक नै, थारो डर नहि रामदेव नै।
मत कर नीच करम, लड़ सोमैं, त्यागत देस किसी तु अरों में।
दोहा—ले धन आया रामशा, वौं तीनों रै पास।
देख हुया आनंद-मगन, सुगनो, भोणू, दास॥ 34॥
चौ—थे पोंचो, हूँ आगै जाऊं, जाय उठै सबनै समझाऊं।
बाबो अंतरधान हुया झट, ऊंठ चलायो रतनै सरपट।
पड़ी चालते संज्या गैरी, बढ़ी थकावट तब रतनै री।
करनो पड़यो बसेरो वौनैं, नींद आयगी वौं तीनों नै।
आँख खुली अचरज कै कैनै, रया देखता नवी जगै नै।
चौतरफो देख्यो वौं झटपट, दीस्यो रोम सरोवर रो तट।
है रोणेचो मन नहिं मानै, अंत हुयो नैचो तीनों नै।
बिल्कुल खनै नगर थो सोमैं, जाय पोंचिया वे मैलों में।
दोहा—सुगनो सूं सारा मिल्या, माथै फेर्यो हाथ।
बैन आयगी टैमसर, कयो द्वारकानाथ॥ 35॥
पूगळ आप पधारिया, कटिया संकट सैन।
मारग में संभाळिया, पोंच सकी जद बैन॥ 36॥
मैणादे, इचरज कियो, कँवर पोढियो मोल।
पल भी बायर नहिं गयो, सुगनो करै मखोल॥ 37॥
चौ.—सुगनो माता नै समझाई, पूगळगढ़ सूं कोंकर आई।
पूगळ री मारग री साई, सुगनो सब नै वात बताई।
एक पोर में बात्यों सारी, हुई न समझै मा बेचारी।
नेगचार कर जौन सिधाई, दी बरात नै बैन बिदाई।
भोणू थो बीमार बिचारो, जाय न सकियो कैरो सारो।
रोणेचे में टूटा-टूटो, करै हरख सूं बैन बधूटी।

थी उडीक कद पाछो आवे, जोन, वीन नै बैन वधावे।
बढ़गी भोणू री बीमारी, निष्फळ हुई दवायों सारी।

दोहा—प्राण-पखेरू उड़ गया, भोणू रा तत्काल।
घड़ी खुशी री पण हुया, सुगनो री बे हाल ॥ 38 ॥
पाछो खाली गोद ले, ग्रासी कैयो सास।
मनै गुमर थो वीर रो, करियो नहिं विसवास ॥ 39 ॥

चौ—सुगनो रुदन करै बिरलावै, दीपक बुझियो, कूंण जलावै।
कोंकर अब हूं पूगळ जासूं, सासू नै क्या मुख दिखलासूं।
भरी गोद अब हुयगी खाली, बात सास री मन में साली।
अरज करै सुगनो दुखियारी, बीरा लाज राखदो म्हारी।
कयो इतै मै बाई लाछा, बीरो परन आयग्या पाछा।
काया धूजै, कोकर जावै, कोंकर जायर वीन बधावै।
गई थाळ ले लाछा बाई, सुगनो किठै, क्यों नहीं आई।
के प्रभु वैनै आयों सरसी, आज आरती सुगनो करसी।

दोहा—लाई लाछा बैन नै, ढाढ़स दे समझाय।
जी काठो कर आरतो, कर वीरै री जाय ॥ 40 ॥
आई सुगनो हाथ में, लियो आरती थाळ।
देख हाल बोल्या तुरंत, अजमलजी रा लाल ॥ 41 ॥

चौ,—मैला वस्तर मुख मुरझायो, आंख्यो में क्यों है जळ छायो।
करिया मिस वे बात बणाई, सकी लुकाय न सुगनो बाई।
बिलखी बाई, आंसू वैया, हाल रोवते सुगनो कैया।
सुगनो हाल बतायो सारो कुळरो दीपक बुझग्यो म्हारो।
सासू कयो साथ ले जासी सुत नै गोदी खाली आसी।
क्या मूंडो ले पूगळ जासूं, कोंकर मुख वीन दिखलासूं।
थोरै नं चे सुत न लाई, म्हारी लाज राखदो भाई।
क्यों बाई तूं कूड़ी रोवै, भोणं तो मैलो में सोवै।

दोहा—हेलो दूं वो जागसी, आसी भोणू दौड़।
थारी आ सुखरी घड़ी, अठै न दुख नै ठौड़ ॥ 42 ॥

हेलो भोणू न दियो, रामा राजकुमार।
भोणू आयो दौड़तो, सुख रो रयो न पार ॥ 43 ॥

चौ.—भोणू आय पड़्यो चरणों में, सुख रो सागर उमड़्यो वो में।
बस्तर पेर नवा झट आई, करी आरती सुगनो बाई।
बीन-वधू नै-बैन बधाया, भाई-भाभी भीतर आया।
मंगळ गीत स्वागण्यो गाया, जाचक दीन पाय हरखाया।
अमरसिंह नैं बगस्यो जीवण, सो परिवार लागियो हरखण।
खाली गोद भरी नै तल-वर, किरपा करी बैन सुगनो पर।
मैणादे सुगनो सुख पायो, लंबे दुख रो छेड़ो आयो।
सुगनो रा सुखदाता बीरा, बाबा भार हरो धरती रा।

दोहा—भगतों रा संकट हरो आप रामशा पीर।
बूले री हेलो सुणो, हे सुगनो रा बीर ॥ 44 ॥

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

नवमा चरण

नैतलदे-अवतार

दोहा— प्रथम पूज गणनाथ नै, वीणा-पाणि मनाय ।
गुरु-पद-रज अंजन करूं, ज्ञान नेत्र खुल जाय ।।1।।
श्री हरि, सीता-राम नै, शिव-गौरी नै ध्याय ।
सिंवरूं, रुक्मण, राधिका, कृष्णचन्द्र गुण गाय ।।2।।

सोरठा—करसूं लीला जाय, कलजुग में कैयो प्रभु ।
साथ चलण री चाय, राधा, रुक्मण, गरुड़ रै ।।3।।
कयो: द्वारकानाथ, तीनूं आया बाद में ।
अभी न लेऊं साथ, पछै बुलासूं टैमसर ।।4।।

दोहा— राधा तौ डाली हुई, लीलूड़ौ खग-भूप ।
रुक्मण नैतलदे हुई, लीला करी अनूप ।।5।।

चौ.— अमरकोट री गाथा गाऊं, नैतलदे रो जन्म सुणाऊं ।
क्षत्री सोढों री थी धरती, सोरी परजा आनंद करती ।
दलजी, सोढ़ों, भूप उठे रौ, बड़ौ प्रतापी, चिलकै चैरो ।
वीरे डरसूं दुष्ट धूजता, देवी हिन्गळाज नै पूजता ।
बेटा तौ दो था दलजो रा, बैन विना कुण कैवै बीरा ।
कन्या री थी बड़ी ओमना, देवी कद पूरसी कोमना ।
कन्या – दान करे वै कौंकर, बेटी नहिं जनमी वौ रै घर ।
करो मनोरथ पूरो म्हारौ, नहिं तों ऑंगण रैसी क्वारौ ।

दोहा— राजा-रांणी, मात नें, करे करुण अरदास ।
होतें कन्या रत्न दो, पूरी मन री आस ।।6।।

चौ.— आयौ दिवस रामनवमी रो, हुयौ मनोरथ पूरो जी रो ।
राणी रै घर कन्या जाई, खबर हरख सूं राजा पाई ।
लिक्ष्मी रूप सुता यौ पाई, करी ज्योतष्यों बोत बड़ाई ।
बेटी रुक्मण री अवतारी, खुशी हुई दरजी नें भारी ।
सोध कुंडली लगन धरायौ, गणकों नैतल नाम धरायौ ।
आई दौड़ इतै नें दासी, वैरे पर थी चिन्ता खासी ।
औंधो पांगली राजकुमारी, आठ कूब री काया धारी ।
दरजी सोढ़ सुण दुख करियो, सुख भूल्यो दुख सूं मन भरियो

दोहा— पाई कन्या पांगली, पूरो हुयग्यौ कोड ।
देवी सुपनें में कयौ, राजा चिंता छोड ।।7।।
हुसी भाग रो पोरसो, थारो बेटी भूप ।
दोनूं कुल दीपायसी, करसी चरित अनूप ।।8।।

चौ.— नैतल रमती बच्चों सागे, सुणो चरित थयौ करियो आगे ।
भुवा संग वा इक दिन खेले, वैरी टेढ़ी अंगुली झेले ।
करदी सीधी खींच आंगली, चमत्कार औ कियो पांगली ।
गयो असाध्य रोग हरखाया, घर रा सिगलां देखण आया ।
रोगी बालक नितरा आवे, नैतल वांने स्वस्थ बणावे ।
अमरकोट में शोभा छाई, खुशी नगर रा लोक-लुगाई ।
भोजसिंग नैतल रो भाई, सरप डस लियो मुरछा आई ।
मंतर झाड़ा, और दवाई, व्यर्थ हुया जद नैतल आई ।

दोहा— उठ बीरा के फेरियो, नैतल सिर पर हाथ ।
भाई उठियो राखदी, लाज द्वारकांनाथ ।।9।।

बेटी इयौ वड़ी हुई, फिकर करे मां-बाप।
कूं'ण इयै नै झालसी कोजा प्रगट्या पाप ॥10॥

चौ.— रामदेव री मैमा छाई, नैतल रै सुणनै में आई।
प्रेम अनन्य उपजियो मन में, नैतल याद करै छिन-छिन में।
सच्ची लगन रैय नहिं छौनै, बाबो भाव भक्ति नै मौनै।
बावै सुपनै में दे दरसन, ढाढस दियौ, हुयो मन परसन।
मात-पिता री चिरया जौंणो, नैतल बोली इमरत बौंणी।
क्यों रोवौ थे आँसू ढालौ, रामदेव म्हारो रुखवालौ।
घर री सारो सला बिचारी, रामदेव सबरा हितकारी।
मन मे तौ थी शंका भारी, लगन भेजणै री की त्यारी।

दोहा— नैतल री भेज्यौ लगन, वौं बौंमण रै साथ।
जाय पोकरण सौंपदो, अजमलजी रै हाथ ॥11॥

चौ.— रौम भरोसै वात बिचारी, नैचो रामदेव रो भारी।
दुखियों रा सच्चा हितकारी, निश्चै लाज राखसी म्हारी।
जै गणेश कै विप्र चालियो, कौम कठिन थो, हियो हालियो।
थकियो सूतौ दरखत नीचै, नींद आयगी, ओख्यौं मींचै।
उठियो दीखी जागा दूजी, धोली धजा, हवेली सूजी।
हुयो अचंभो कंवे कैनै, नौम पूछियो एक जणै नै।
नगर रूणेचो है औ भाई, सुणियो नौम न खुशी समाई।
घुड़सवार मिलिया इक सौमै, तेज अपार दीसियो वौं मैं।

दोहा— बौंमण तुरत पछौणिया, सकियो तेज न झेल।
परिचय दीनो आपरो, पत्री कर में मेल ॥12॥

चौ— दी पत्री बौमण नै पूठो, उगटी, चैरै मुलक अनूठो।
इयै वात में वस नहीं म्हारो, आगे गढ़ पोकरण पधारो।

अजमलजी रे पासें जावो, दो पत्री संदेश सुणावो ।
गढ पोकरण विप्र झट आयो, राजा सुण संदेश बुलायो ।
सभा-भवन बैठा दरबारी, लियो लगन सब बात विचारी ।
लगन-पत्रिका सारों बाची, बात लिखी थी सिगली साची ।
जोण कसर कन्या में भारी, तुंमरों मन में शंका धारी ।
तुंअर करे आपस में गण-तण, नहीं अपोंरे लायक सगपण ।

दोहा— आय इतने पोंचिया, रामा-राजकुमार ।
सभा-भवन में बैठिया, सब रा सुण्या बिचार ।।13।।
रामदेव वोने कयो, सुणलो बंधू सैन ।
दुनिया में मुसकल बड़ी, भले-बुरे री तैन ।।14।।

चौ.— काया री कसर्यो मत देखो, मन में करो गुणों रो लेखो ।
तन पँगलो, पंगला न करम है, ओंधो, पण ज्ञोन रो मरम है ।
काया सूं संबध न म्हारो, गुण-करमों ने आप बिचारो ।
से जोंणे काया नश्वर है, दुनिया में गुण अजर अमर है ।
रूपवती ने अंगीकारे, सारा, गुण ने नहीं बिचारे ।
जोग आतमा दोय मिलण रो, मोनो ओ अधार सगपण रो ।
सुणकर हुया खुशी सब भाई, पक्की करली तुरत सगाई ।
रामा कर में लगन धारियो, बोंमण माथे तिलक सारियो ।

दोहा— अमरकोट में कर रया, चिन्त्या घर रा लोग ।
सैन उडीके आस में, राम मिलासी जोग ।।15।।
आय इतै नै पोंचियो, अमरकोट हरखाय ।
जोशी शुभ संदेश दे, रामदेव गुण गाय ।।16।।

चौ.— अमरकोट, रोणचें भारी, शुरु ब्यांव री की तैयारी ।
गेणा वस्तर खूब बणाया, मंगलगीत स्वागण्यों गाया ।
बीन, बीनणी बैठा बोने, कर शृंगार सँवारे वोने ।

पाट बैठ पीठी उतरावै, करै सुगंधित नीर न्हवावै।
हाट, बाट घर खूब सजाया, बाजा, शंख, मृदंग बजाया।
पूज विनायक देव मनाया, संबंधो, परसंगी आया।
दिया दान जाचक हरखाया, ब्राह्मण पूजा कर जिमाया।
हाथ पगो रे मेंधी राची, धूमधाम चौतरफी माची।

दोहा— अमरकोट मे जौन री, सोढ़ा करै उडीक।
रोणेचो पोकरण थो, सुख–शोभा परतीक ॥17॥
सजिया सुन्दर वर वण्या, रामा राजकुमार।
चाख उतारे स्वांगण्यो, लीलूड़े असवार ॥18॥

चौ.— मौरत साज बरात सिधाई, कर पड़ाव मग में सुस्ताई।
अमरकोट रे नेड़ी आई, पड़ी नौबतों जबरी धाई।
की अगवानी जौन बधाई, आछे जनवासे ठेराई।
समधी मिलिया, प्रीत बढ़ाई, सब र हिड़दै खुशी समाई।
करी खातरी वो मनभाई, छकिया जौनो, करी बड़ाई।
सिद्धी–चमत्कार ने परखण, ऊँचो बौत बंधायो तोरण।
बात ध्यौन बाबे रे आई, लीलूड़े रे एण्ड लगाई।
घोड़ो ऊंचो उछलयो तत्क्षण, बाबै तुरत पौखियो तोरण।

दोहा तोरण लागी काठ री, उडी चिड़ी तत्काल।
सै कैवै जुग–जुग जियौ, अजमलजी रा लाल ॥19॥

चौ.— करी आरती दही लगायौ, मंगल गावै बीन बधायौ।
चंवरी सुन्दर खूब सजाई, नेतलदे नै सखियों लाई।
कंवरी–कंवर बेटिया चवरी, होम कियौ, देणो घी भंवरी।
हथलेवो जब पंडत जोड़यौ, सारे रोगों मूंडों मोड़यौ।
आंखयों में झट ज्योती आई, गई पगों री सा पंगलाई।

गायब सै शरीर री कूब्यों, देख सहेल्यों इचरज डूब्यो ।
कंचन थी नेतल री काया, हाफे उठ वै फेरा खाया ।
सिद्धी देख सैन हरखाया, लखै कूं‌ण परभू री माया ।

दोहा— भाग्यवोन वो देखिया, रुक्मण संग गोपाल ।
नेतलदे संग ओपिया, अजमलजी रा लाल ।।20।।

चौ — किया नेग सब रीत निभाई, सालयो रै मन कुबध समाई ।
मुंई बिली ढक थाल सजायो, बर रै आगै लाय रखायो ।
उगड़्यो थाल दौड़गी बिल्ली, उड़गी खुद सालयो री खिल्ली।
बिल्यों सिगलं शोर मचायो, साल्यो रै मन में भय छायो ।
दो माफी अब भरम मिटाया, बाबै तुरत समेटी माया ।
जोनी कै मस्ती में खेलो, बोरै सुण सुगनो रो हेलो ।
की जल्दी, तुरत बिदाई, दियो दायजो जोन सिधाई ।
कर पड़ाव आरोम वो कियो, आंख खुली पोकरण देखियो ।

सोरठा—कियो नगर-परवेश, मैलों आगै आवियो ।
रयो न दुख लवलेश, सुगनो नै करदी सुखी ।।21।।
नैतल रा गुण-गान, भावभक्ति सूं जो करै ।
रामदेव भगवान, पूरै वैरी कामना ।।22।।
की किरपा करतार, दलजी रा दुख मेटिया ।
नैतल रा भरतार, बूलै रो हेलो सुणो ।।23।।

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

दसवां चरण

नैतलदे नै परचौ

दोहा– पारबती रे पुत्र नै, पूज, पाय बरदान ।
गिरा सुमिर, गुरुदेव रो धरूं हिये में ध्यान ।।1।।
नैतल माया-मोह सूं शका लीनी धार ।
पति सूं परचो लेवणो, मन में कियो विचार ।।2।।

चौ.– हुया अनूठा प्रभु रा परचा, पार समंदर पूगी चरचा ।
पार नहीं माया री पावै, परचा देख भगत हरखावै ।
प्रभु री माया कही न जावै, ग्यानी, देव, भगत चकरावै ।
नारद रै अभमीन निखरियौ, कामदेव नै म्हें वश करियौ ।
माया-मोहित वैनै करियौ, ले सराप वैरौ मद हरियौ ।
शंका करी भुसुण्डी मन में, माया दिखलाई प्रभु छिन मे ।
सती न प्रभु री मार्या जाणी, शिव दी सिख्या, नहीं पताणी ।
रूप सिया रौ धरियौ, आई, प्रभु वैनै माया दिखलाई ।

दोहा– हीमत हारी वा डरी, बैठी, ओख्यौ मीच ।
माया देखी राम री, तिरलोकी रै बीच ।।3।।
भगतों रै अभमीन सूं, शंका सूं नहि कौम ।
जे ऐ ऊगै कालजै, तुरत उखाड़ै रौम ।।4।।

चौ.– से मौनै पति नै अवतारी, नैतल मन में शंका धारी ।
दूजो नै परचा दिखलावै, पण म्हारै न समझ में आवै ।

म्हारी सेवा सूं न पसीजै, दूजों री भगती सूं रीझै।
कसर कई भगती में पावै, नाथ न परचो मनै दिखावै।
आठ पौर आ गण-तण रैवै, मोंय सोच पण बार न कैवै।
बार-बार पूछण री धारै, ऐन टैम पण होमत हारै।
बुरो पूछियों सूं जे मोनै, नहिं नाराज कर सकूं वोनै।
हुयो असर आखर भगती रो, नैचो हुयो पड़यो दुख धोरो।

दोहा– भगतों रा मोनै नहीं, दोनानाथ कसूर।
भक्ति-भाव सूं पूछियों, शंका हरै जरूर ।।5।।
नैतल मन में सोचियो, पूछूं कई सवाल।
मिट जावै शंका, हुवै राजी दीनदयाल ।।6।।

चौ.– तरै-तरै री बात्यों आई, मन में, नहिं नैतल नै भाई।
बात एक अंत में सु आई वा सोची नैतल हरखाई।
नैतलदे थी दो जीयों सूं, बात इयैरी पूछूं वों सूं।
बाबो जब मेलो मे आया, नैतल नै देखी मुसकाया।
अंतरजोमी मन री जोणो, नैतल बोली इमरत बोणो।
गण-तण मन में, कैय न पाऊं, दो इज्ञा तो बात बताऊं।
मन संको, पूछो चितचाई, बाबै नैतल नै हुलसाई।
मोनै भगत आप अवतारी, पूछूं बात बतावो म्हारी।

दोहा– बच्चो म्हारे पेट में, धेनड़ है या धीव।
बाबो कै है गरभ में, थोंरै निश्चै सींव ।।7।।

चौ.– बात खुशी री बाबै कैई, नैतल सुणो हरखती रैई।
नैतल नै नैचो नहिं आयो, पण नहिं मन रो भाव बतायो।
बात जोंणली अतरजोमी, थोंरै नैचै में कुछ खोमी।
नैचो आसी. हियो धपाऊं, गरभ मोंय सुत नै बोलाऊं।
नोम इयै रो सादो धरसूं, इयै नोम सूं हेलो करसूं।

म्हारे हेलं, जे सुत बोलै, नैचो आसी, मन नहि डोलै।
सुणी बात, नैतल नै भाई, नैचो आसी वा पतियाई।
हेलो चौं सादे नै दीनो, गरभ मोंय सादे सुण लीनो।

दोहा— आदे झट उत्तर दियो, दो बापू आदेश।
थोरी इज्ञा पालनी म्हारो फरज हमेश ॥8॥

चौ.— नैतल सुण्यो, अचंभो करियो, परचो पायो, नैचो धरियो।
शका नहीं, गरभ में धनेड़, मन में रुपगी, श्रद्धा री जड़।
नैतल नै पछतावो आयो, माया म्हारो मन डोलायो।
पाप कियो, म्हें शंका धारी, मन री शंका नाथ निवारी।
व्यापे अबै कदे नहि माया, ध्याऊं मनसा, वाचा, काया।
डोलै कदे न म्हारो नैचो, दी भगती, माया नै खेंचो।
बावै इंछया पूरी कीनी, निर्मल भगती वैनै दीनी।
हुसी सुलखणो इज्ञाकारी, सादो सेवा करसी थारी।

दोहा— परचो पायो प्रेम सूं, नैचो भगती पाय।
बूलै रो हेलो सुणो, रोणेचे रा राय ॥9॥

ॐ

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

इग्यारहवां चरण

भाभी नें परचो

छंद—सबसूं पैला गिरिवर-नदिनि-नंदन ध्याऊं।
सरसुत रो घर ध्यांन बुद्धि-विद्या वर पाऊं॥
गुरु-चरणामृत पान करूं, बलिहारी जाऊं।
गउ-भाभी नें बाबे परचो दियो बताऊं॥ 1॥

दोहा—मार ताजणो खाल रै, बछड़ो दियो जिवाय।
देख सुखी सारा हुया, भाई-भाभी गाय॥ 2॥
बछड़े नै अउखो दियो, माया-तन रीं जोण।
माया अबै समेटणी, मन में लीनी ठोण॥ 3॥

चौ.—पच्छम घर रो भार उतारण, माया-काया की प्रभु धारण।
थो जग में कळजुग रो पोरो, मन तोमसी-मूढ़ सारो रो।
मूरख-मोनें चमरकार नें, नहिं समझै ज्ञोन रै सार में।
प्रकट हुया बाबो मरुधर में, अजमल-मैणादे रै घर में।
दुष्ट मारिया, भगत तारिया, दलित-दुखी बाबै उबारिया।
जीव हुवै कळजुग में नुगरा, परचा देख हुया वै सुगरा।
परचा है गीता कळजुग री, नुगरी दुनिया करदी सुगरी।
धजाबंद-धारी नै ध्यावै, पीर रामशा रा गुण गावै।

दोहा—द्वापर में गीता दियो, समता रो थो ज्ञोन।
भेद-भाव सब मेटिया, कळजुग में भगवोन॥ 4॥
दीनो समता भाव री, गीता में भगवोन।
अब दोनो व्यवहार री, समता रो प्रभु ज्ञोन॥ 5॥
जात-पंथ रा, छूत रा, ऊंच-नीच रा सैन।

बावै अंतर मेटिया, दुखियो पायो चैन ॥ 6 ॥

चौ.—बीरमजी बावै रा भाई, रवै सोरा धणी-लुगाई।
प्रभु री भाभी बीरम-रौणी, बावै री मैमा वै जौणी।
दृढ़ विश्वास देख-परचौ-नै, पीर रामशा भाभी मौनै।
करता वै सेवा गायौं री, गाय-फूटरी थी इक वौंरी।
गाय वियाई, वछड़ौ लाई, चाटै, चूंगावै हरखाई।
बड़ी मोह रौणी नै वैसूं, प्रेम करै, पूरौ बछड़े सूं।
घर में बछड़ो कूदै खेलै, रौणी ले गोदी में मेलै।
दोनूं था वछड़े रा रसिया, राजा-रौणी खूब हुलसिया।

दोहा—पाळै बछड़ौ पूत ज्यौ, राखै बड़ौ हिवांस।
वछड़ौ रौणी री हुयो, जड़ी जीवरी खास ॥ 7 ॥

चौ.—सैय न सकै विछोड़ो पलभर, राखै ऑंख्यों री पलक्यों पर।
घड़ी न रै रौणी वछड़े बिन, इकटक निरखै वैनै छिन-छिन।
वैनै देख सुखी घर सारौ थौ वछड़ौ ऑंणी सूं प्यारौ।
राखै गाय पास वछड़े नै, दूर थणों सूं करै न वैनै।
रंग गौरौ ऑंख्यो थी सुन्दर, टीको लाल हुतो लिलाड़ पर।
केस पूंछ रा काळा गैरा, लंबा तीखा कौन भलेरा।
पग पतळा, सुन्दर खुर छोटा, खोधा वेरा चवड़ा मोटा।
कौम-धेन रै सुत सौ लागै, रौणी-रो हेलो सुण भागै।

दोहा—वछड़ौ रौणी सूं रखै, माता जिसौ लगाव।
दोनों रै मन में हुता, मा-वेटै रा भाव ॥ 8 ॥
देखै वछड़ौ उण-भणीं, रौणी देव रोय।
हुवै पगतणी सोच में, नींद भूख दे खोय ॥ 9 ॥

चौ.—सुन्दर गाय, सोवणों वछड़ौ, मा चाटै थो चूंगतो खड़ौ।
थण छोड़्या, वो दौड़ै उछळै, एकाएक पड़्यो जमी तळै।
पड़ियो देख, गाय झट भागी-सूंगै, वैनै चाटण लागी।
उठै न वछड़ौ, गाय हिलावै, ऊंचो मूंडो कर रंभावै।

चली गाय रै आँसू-धारा, सुणते घर रा आया सारा।
बछड़े रै मूंडे पर पौंणी, छिड़कै, आई बीरम-रौणी।
उडिया होश चेतना खोई, बछड़ो मुंग्रो उपाव न कोई।
गउ रंभावै, रौणी रोवै, बस नहि चालै, आँख्यों धोवै।
दोहा—मरियोड़ो बछड़ो पड़यो, रोवै रौणी-गाय।
राजा बीरमदेवजी, सुणते पौंच्या आय॥ 10॥
देख्या राजा गाय रा, रौणी रा वे हाल।
भौंभी बछड़ो लेयग्यो, ली-उतार वै खाल॥ 11॥
रौणी अन-जल छोड़ियो, घास चरै नहि गाय।
मन में पीड़ अथाग थी, कौंकर देखी जाय॥ 12॥
चौ.—याद करै बछड़ो, बिरलावै, रौणी नै राजा समझावै।
नहि उपाव, बिरथा दुख पावै, मरियोड़ो पाछो नहि आवै।
ए बात्यों बंदो री सारी, घर में पीर हुवै अवतारी।
दुख में वौनै भगत बुलावै, लीलूड़ै चढ़, वै झट आवै।
बँधियां भगतों सूं दे बाचा, देवरजी रा परचा साचा।
वौं भौणूं नै, स्वारथियै नै, हेलो देय, जिवायो वंनै।
भाभी भगत भाल हठ अड़सी, देवरजी नै सुणनी पड़सी।
या तो बछड़ो आय जिवासी या भाभी परलोक सिधासी।
दोहा—भगतों रा हठ अटल है ज्यों बाळक हठ होय।
प्रभु नै हठ राख्यों सरै, भगत दे जदी रोय॥ 13॥
करुण टेर सुण भगत री, तुरत पसीजै रौम।
अण हुवणी पूरी करै, हठ, सारै प्रभु कौम॥ 14॥
बीरमदेव हुया दुखी, रौणी करै विलाप।
रौणेचै में ओजट्या, पीर रामशा आप॥ 15॥
चौ.—भगतों री पीड़ा लख भारी, बाबै मन में बात बिचारी।
कुदरत री मरजाद सवाई, जीवै जितरी ऊमर पाई।
खूटी ऊमर बछड़ों मरियो, भाभी क्यों कूड़ी हठ धरियो।

भगत हठीला हुंवंता आया, प्रभु वीरां करिया चित-चाया
माया-तन री लौकिक आऊ, दे बछड़े ने भगत बचाऊं।
रौणी गाय जदी मरजासी, म्हारी मरजादा मिट जासी।
भगतों आगे पड़ै हारनो, निश्चै पड़सी कौम सारनो।
लीलूड़े चढ़ तुरत सिधाया, भाई री नगरी में आया।

दोहा—भौभी रै घर पौंचिया, अजमलजी रा लाल।
पूछै थें राखी किठे, वै बछड़े री खाल।। 16।।
सूकै दरखत सौमले, पर, दी तुरत बताय।
पौंच्या खाल खनै तुरत पीर रामशा जाय।। 17।।

चौ.—घोड़े री चाबक थी कर में, पास पौंचिया वै पलभर में।
सूकी खाल मुई थी जाबक, प्रभुजी वैरे मारयौ चाबक।
कैयौ बछड़े नें जल्दी जा, रोवै खड़ी, बिछोड़े में मा।
तुरत जीवग्यो, दौड़्यौ बछड़ो, जाय हुयौ माता खनैं खड़ो।
बछड़ो देख, गाय हुलसावै, चूं गावै, चाटै, हरखावै।
बावो भाभी खनैं पौंचिया, भाभी रा बेहाल देखिया।
म्हारी भाभी क्यों दुख पावै, कै बावो न समझ में आवै।
उठकर कारण मनैं बतावो क्यों रोवो, थे क्यों दुख पावो।

दोहा देवरजी छौनें, नहीं, थौंसूं कोई बात।
बछड़ो म्हारो मरगयो, करसूं आतम-घात।। 18।।
राखी चावो जींवती, दो बछड़ो जीवाय।
थौरे नैचै हठ लियौ, रोणेचै रा राय।। 19।।

चौ.—बावो कै बछड़ो तो जीवै, गाय खड़ी, वै खोनी टीवै।
देखो जाय, गाय बछड़े नैं, मरियो कूण कै सकै वैनैं।
भाई-भाभी इचरज करियो, वचनो माथै ढादस धरियो।
बावै साथै दोनूं आया, बछड़ो खड़ो देख हरखाया।
भाभी हुलसे पड़ी चरणों में, आ विपदा क्यों आई म्हौं में।
पड़ी चूक भगती में कोई, माफ करो, भाभी उठ रोई।

दीनानाथ भगत-हितकारी गळती माफ करो अब म्हारी।
पत राखण ने दौड़ या आया, म्हारे कारण थौं दुखपाया।

दोहा— मोह मिटावो, ज्ञान दो, निर्मल भगती साथ।
जनम-मरण रा बंध अब काटो दीनानाथ ॥ 20 ॥
पास खड़ा था देखता, बीरमजी चुपचाप।
गद्-गद् कंठ, न बोलिया, मन में आनंद धाप ॥ 21 ॥
गाय खड़ी देखे प्रभू नै, देवै आशीश।
मरतो नै बचाय, को किरपा विसवा बीस ॥ 22 ॥

चौ — भाई-भाभी नै समझाया, बावे मनरा भाव बताया।
मन में थे शंको मत धारो, आणो तो जरूर थो म्हारो।
मिलणो थो जरूर दोनों सूं, विदा आखरी लेणी थौसूं।
कौम हुयो पूरण जींवण रो, बखत अबै आयो जावण रो।
काल समाधी जीवित लेसूं, थौसूं मिलियो आय जिकै सूं।
है सबरी भोळावण थौनै, ढाढस आप दिया सारो नै।
थो शरीर री लौकिक ऊमर, कौम कियो बछड़ै नै देयर।
काल रुणेचै आप पधारो, कौम आखरी सारो म्हारो।

दोहा— सुण मन में भाभी कियो पछतावो भरपूर।
बछड़ो जीवायो हुयो, म्हें सूं बड़ो कसूर ॥ 23 ॥
बछड़ो-पायो, खोय कर, देवर जी नै आज।
जेणे समाधी लेवणे रा साजे वे साज ॥ 24 ॥
अंतरयामी जाणियो, वेरे मन रो सोच।
कैयो मत विरथा करो, मन में थे संकोच ॥ 25 ॥

सोरठा-हुयग्यो पूरण कौम, जीवण रो, नहिं निमत थे।
हुवे करे ज्यो रौम, बदे री न करी हुवे ॥ 26 ॥
भाभी घरियो धीर, बांवो रोणेचे गया।
हे पीरों रा पीर, बुले री हेलो सुणो ॥ 27 ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

बारहवाँ चरण

समाधि-संकल्प

छंद — शैलसुता-सुत करिवर-वदन गणाधिप ध्याऊं ।
धोलै कमल विराजणि वीणा पाणि मनाऊं ॥
गुरु-पद-पदुम-पराग धरुं सिर आशिष पाऊं ।
पैलं समाधी दीं भक्तों नैं सीख बताऊं ॥ 1 ॥

दोहा— भाई-भाभी सूं विदा, ले, रौणेचै आय ।
माया अबै समेटणी, लीनो मतो बणाय ॥ 2 ॥

छंद — अजमलजी नै सुपनो आयो, ऊभा पुरी द्वारका में ।
लीलै चढ़िया बाबो आया, हुयग्या प्रवेश प्रतिमा में ।
हड़बड़ाय अजमलजी उठिया, चीख निकलगी मूंडै सूं ।
सुण आवाज, पर रा पूछै, कैयो म्हो दुख कोकर सैसूं ॥ 3 ॥

दोहा— घोर स्वप्न री बात वो, दी सब नैं समझाय ।
सै हक्का-बक्का हुया, बात समझ नहिं आय ॥ 4 ॥
सुपनो है सच्चो, कह्यो बावै, समझो सार ।
लीला अबै समेटणी, है चिन्त्या बेकार ॥ 5 ॥

सोरठा— तन रो लौकिक शेष, आयू बछड़ै नैं वगस ।
कोम रह्यो न विशेष, अबै समाधी लेवणी ॥ 6 ॥

चौ.— सुणी बात घर वाली सारी, से भोंचक्का आ क्या धारी ।
बूढ़ा-बड़ा कुटम रा सारा, घोर दुखी मन में बेचारा ।
माता पिता चिपावे छाती, रोवे आंख्यां हुमगी राती ।
छोटी ऊमर रा, सांईना, सारा रोवे भगती-भीना ।
सैन कुटम रा, समधी आया, सारो बावे ने समझाया ।
मात-पिता बेठा, सुत जावे, उल्टी बात समझ नहिं आवे ।
सारा विलख-विलख मरजासी, चोट विखेरो सैय नपासी ।
बावे सब ने ढाढस दीनो, माया खींच मोह हर लीनो ।

दोहा— बावे सारो ने कयो सुणो सार री बात ।
चेतन सब री आतमा, जड़ है सब रा गात ।।7।।
नाता सैन शरीर रा, जीव अकेलो जाय ।
चेतन चेतन में मिले, जड़ जड़ मोंय समाय ।।8।।

चौ— ये जो समझो थारा-म्हारा, ऐ नाता काया रा सारा ।
निज री चेतन रूप न जोंणे, जिते न प्रभु ने जीव पछोंणे ।
जड़ काया सूं जीव बंधियो, जड़ता री अभमोन संधियो ।
गोठ पड़ गई जड़-चेतन री, बेड़ी करमों रे बंधन री ।
बावे निजिया धरम बतायो, निज सरूप-दर्शन समझायो ।
जड़ नश्वर है, जीव अमर है, दुनिया मो-माया रो घर है ।
मैं अरु मेरा झूठी माया, भूल सरूप जीव भरमा या ।
दुख विरथा आतमा अमर है तन में बंधियो जीवण भर है ।

दोहा— काया री ऊमर हुवे, खूट खतम हुय जाय ।
जावणहार शरीर सूं बिरथा मोह लगाय ।।9।।
सतगुर री सेवा करी, समझो निजिया धर्म ।
सरूप दर्शन कर मिले, मुगती समझो मर्म ।।10।।

जड़ सूं विमुख हुयौं बिना, दीसै नहीं सरूप।
प्रभु-दर्शन सै जै हुवै, दीस्यौं निजिया रूप ॥11॥

सोरठा– तजो असत अज्ञान, सत सरूप पिचाणसो।
ओई तत्व-ज्ञान, मुगती देवणहार है ॥12॥
कर्म करै जड़ देह, चेतन में किरिया नहीं।
सबसूं करो सनेह, कर्म करो संसार हित ॥13॥

चौ०– पुण्य न परउपकार सिरीसो, पापी नहिं पर दुखियारी सो।
रोगी, दीन, अपंग, दुखी री, सेवा हुवै धुरी धरती री।
टिकी धरा धर्म री धुरी पर, बढ़सी पाप, धंजसी थर-थर।
काया मिलो जगत सूं थौंने, जग-अर्पण कर दो करमौं नै।
निस्वारथ सेवा कर तिरसो, मुगती पाय, न पाछा धिरसौ।
मन रो पाप न हुवै कल में, नाम लेय, लय-लीन प्रभू में।
भव-सागर सूं पार उतरसो, जप-तप-जग्य, जोग बिन सरसी।
दान, दया पण एक धरम री, कलजुग में ओ जीन मरम री।

सोरठा– कर प्रभु रा गुण-गान कलजुग में पापी तिरै।
पाप मूल अभिमान, दया धर्म री मूल है ॥14॥

दोहा– आतमा सब री राम है, राम एक, सब एक।
भेद बुद्धि अज्ञान है, मिटियौं मुक्त हरेक ॥15॥
सुख भोग्यौं बंधन बंधै, दुख भोग्यौ कट जाय।
पाप-पुण्य जब नीवड़ै, आतमा मुगती पाय ॥16॥
गुण-अवगुण तो भूंठ है, सच्चो निर्गुण राम।
गुण-अवगुण देखो मती, देखो सब में राम ॥17॥
औगण देखो आपरा, गुण दूजै रा जाय।
दूजै रा औगण जदी, देखो, अनरथ होय ॥18॥

चार पादे रो ॐ है, ब्रह्म–नाम स्मरणीय ।
तीन व्यक्त, अव्यक्त है, चौथो पाद तुरीय ।।19।।

सोरठा–देव–जूण है भोग्य, स्वर्ग–लोक फल भोग रो ।
मोक्ष–प्राप्ति रे जोग्य, कर्म जूण नर देह रो ।।20।।
थारो–म्हारो कूण, राम सिवा दूजो नहीं ।
झूठी जगती जूण, तूं भी नहिं तू राम है ।।21।।

दोहा– आज रात जागरण कर, काल दिनूगे न्हाय ।
सारा पोंचाया मनें, भजन हरख सूं गाय ।।22।।

चौ.– कियो रात भर लोगों जागण, बाबो बैठो थो कमलासण ।
आभो मेके अगर धूप सूं, सब रो नेव लग्यो सरूप सूं ।
बोणी-भजन सुरीला गाया, झालर, संख, मृदंग बजाया ।
ब्रह्म-मूत्त में सारा न्हाया, बाबे रे सौमे सब आया ।
ज्ञान दियो बाबे, समझाया, पट म्हारो मत कदे उठाया ।
भगतों रा संग मेलो आसी, भगती सूं म्हारा गुण गासी ।
गूगल, अगर, प्रसाद चढ़ासी, दुख संकट वैरा कट जासी ।
आंधा आंख्यों, पूत निपूता, पासी पंगला पैर सिबूता ।
सोरठा– रोगी हुसी निरोग, कोढ कोढियों रा मिटे ।
दलित, दुखी, सब लोग, ध्यासी मनसा पूरसूं ।।23।।

चौ– चढ़ लोलूड़ हुयग्या आगे, लारे लोग चलै सब सागे ।
भालो धोली धजा फरूकै, लोग फिकर कर रोवै कूकै ।
तोई भजन गांवता जावै, केसर, रंग गुलाल उडावै ।
रामसरोवर-घाट पोंचिया, बिछगी जाजम सैन बैठिया ।
खोदै गुफा समाधी खातर, सारों री निजर्यों बाबै पर ।

नैतल के आप तो पधारो, सारे हाल हुसी क्या म्हारो।
इज्ञा दो चरणो री दासी, हुक्म बजासी थाँने ध्यासी।
मंदिर इसो बणाये म्हारो, बिना भेद थाँके जग सारो।

दोहा— तुँअरो नै बावै कह्यो, राखो मन में धीर।
थाँ में पड़ पीढी हुसी, सिद्धो धारी पीर ॥24॥

चौ— देखै। सैन दौड़ी तो ग्राई, उठै इतनै डाली बाई।
छुया चरण, वे ग्ररज सुणाई, म्हे सूं क्यों आ बात लुकाई।
वचन दियो थो, तनै निभासूं एकेली न छोड़कर जासूं।
बेजा बात हुवै ग्रा सारी, खोदो जिकी समाधी म्हारी।
डाली नै समझाई बावै, हठ झालियो न आई तावै।
बावै हार भगत सूं मोनी, देख्यो सारै लोगों खोनो।
देखी वैनै भगतो—भीनी डाली नै इज्ञा वाँ दीनी।
सबरै बात समझ में ग्राई, हुसी, करै ज्यों डाली बाई।

दोहा— दशमी रो दिन भगत नै देय दियो भगवान।
इज्ञारस रो संकल्प, करियो कृपा निधान ॥25॥
परचे प्रगट्या, लय हुग्रा, माया तन रे साथ।
बूलै रो हेलो सुणों, रोंणेचे रा नाथ ॥26॥

ॐ

।। श्री रामदेवाय नमः ।।

श्री रामदेव-चरित-मानस

तेरहवां चरण

भक्तमती डालीबाई

दोहा—जय गणेश बोलूं कहू, जय-जय सरसुत मात।
जय गुरुदेव कहूं करूं, भक्त-गान सरुप्रात ।। 1 ।।

सोरठा—भक्त और भगवान, साथै जग में अवतरया।
लियो जन्म हनुमान, रामचन्द्र तन धारियो ।। 2 ।।
कृष्ण लियो अवतार, आई जग में राधिका।
रामदेव रै लार, डाली प्रकटी जगत में ।। 3 ।।

चौ—पीढ़यों सूं सुणने में आई, कैबा कैवे लोक-लुगाई।
शृंगी रिषि कळजुग में आया, पच्छम धर में ठाठ लगाया।
भक्ति कठिन मरुधर में साधी, इसी लगाई गूढ़ समाधी।
धूज्यो इन्दर रो इन्द्रासण, देवराज भट समभ्यो कारण।
भेजी रंभा नै भूमी पर, भंग करै तप रिषि रो जाय'र।
रमा आय किया वे लटका, मुनि रैं मन नै लागा भटका।
हुयग्यो मन विचलित शृंगी रो, आगी खनै हाल ज्यों घी रो।
धारण गर्भ हुयो रंभा रै कन्या जनमी कैरे सारैं।

दोहा—कर कुचाल रंभा गई, तज कन्या सुरलोक।
शृंगी नै चेतो हुयो मन में चिन्त्या शोक ।। 4 ।।
पाछो तप में लागग्यो, थो कन्या रो भार।
सोण टोकरी टोगदी, इक दरखत री डार ।। 5 ।।

सोरठा—है ऐसो विश्वास कुछ भक्तों रो आज भी।
सायर प्रभु रो दास, जनमी वेरै पेट सूं ।। 6 ।।

चौ.—मत-भेदों री विरथा उलझण, डाली भक्त महान हुई पण।
डाळो पर लटकती टोकरी, मौय रोंवती रयी छोकरी।
रामदेव वै मारग आया, सायर नं था साथै लाया।
बो टोकरी बिरख पर लटको, रामदेव री दृष्टि अटको।

सायर सूं उतार मंगवाई, कन्या मोंय रोवती पाई।
सोंपी कन्या प्रभु सायर नैं, कोड घणो संतोन रो तनैं।
दरखत री डालो पर पाई, नोम राखियो डाली बाई।
बूढ़ो घरवाळो सायर रै, दूध धणीं में आयो वैरं।
दोहा—डाली सायर धी बजी, पाळो प्रेम समेत।
रामदेवजी राखता, बैंसूं पूरो हेत॥ 6॥
चौ.—होश पकड़ते भगती जागी, वा सतसंगत करनैं लागी।
रामदेव रा भजन गांवती, दरसन करनैं रोज जांवती।
थी प्यारी सबनैं सुंवांवती, गायो जंगल में चरावंती।
प्रभु खुद वैरैं घरे आंवता, बैन जिसी ममता जतावंता।
ऊमर दस बरषों री पाई, दुखी हुय गई डाली बाई।
माता-पिता परम गति पाई, एकेली थी डालीबाई।
नेम लियो क्वांरी रैवण री, थो नैचो भगती रै पण री।
दिन में गायों टोगड़ियो नैं, रोई में चरांवती वोनैं।
दोहा—सौंझ सवेरैं जांवती, बाबे रै दरबार।
वैंसूं मिलता प्रेमसूं, रामा राजकुमार॥ 8॥
चौ.—थो रुढ़्यो रो बुरो जमोनो, पण आदर्श न प्रभुरो छोनो।
छूत-प्रछूत न रौणेचै में, ऊंच-नीच रो भेद न वैमें।
जात-पंथ रो रतो न अंतर, बाबै दीनो उत्तम मतर।
डाली नै प्रभु आप बुलावैं, ठेठ रावळै में नित जावैं।
इसो रोग भारत में भासो, भेद-भाव कोजा संतासो।
वो इलाज आगूंच बतायो, रौणेचै में कर दिखलायो।
जिको कौम खुद करियो बाबै, नहीं देश रै आयो तावै।
कौम न बस रो नेताओं रै, निभै नेम मंदर में वोरै।
दोहा—आठ पोर चौसट घड़ो, करतो वोनैं याद।
भगती करती, एक दिन, डालो की फरियाद॥ 9॥
हुवै बिछोड़ो नहिं कदे, देवो औ वरदान।
जाऊं तनैं न छोड़ हूं, डालो सच्चो मान॥ 10।

चौ.—गया बीतता भगती में दिन, याद करै बावै नै छिन–छिन।
एक दिवस बैठी रोई में, डाली सुण आवाज कुछ धीमे।
ढोल वाजता सुणिया डाली, मन में कुछ चिन्त्या सी चाली।
एक जणौ रस्ते सूं आयौ, डाली हेलौ मार बुलायौ।
है अवाज आ कैसी भाई, वै कैयौ सुण डाली वाई।
वावौ आज समाधी लेवै, वौंने विदा लोक सब देवै।
डाली सुणियौ, होश न रैयौ, ढोरी नै भेला कर कैयौ।
म्हें सेवा कीनी जीवण भर, लाज राख हाफे पोंच्या घर।

दोहा—दौड़ी डाली आयगी, राम सरोवर तीर।
देख्या सबरै बीच में, ऊभा रामापीर॥ 11॥
लोग समाधी खोदता, देख्या वै कुछ दूर।
डाली रो दिल धड़कियौ, कीनौ दुख भरपूर॥ 12॥

चौ—बावै नै कै डालीबाई, बचन मनै थौं दीनौ भाई।
छोड़ूं तनै न, साथै रैसूं, क्यों लुकाव औ कीनौ म्हे सूं।
ध्यौन दो मिनट डाली धरियौ, सिगळौं सूं सवाल औ करियौ।
क्यों आ बात अणूंती धारी, खोदौ जिकी, समाधी म्हारी।
गळत ठौड़ क्यों खोदण लागा, बाबै री है दूजी जागा।
डाली ठौड़ बताई वौंने, अठै खोदणी पड़सी थौनै।
जची बात आ नहिं लोगों नै, डाली री न बात वै मौनै।
सै कैवै सबूत दे डाली, नहिं तो बात पड़ैला काली।

दोहा—बावै डाली नै कयौ, थारी जिद दे छोड़।
नहिं तो पत रैवै नहीं, मिटसी सान मरोड़॥ 13॥

चौ.—डाली कैयो झूठ न बोलूं, सच्ची भगती रा पट खोलूं।
थौरो भगत न कूड़ो अड़सी, सबनै बात मौनणी पड़सी।
म्हारी बात्यौं साची फळसी, कैऊं चीज्यौं जिकी निकलसी।
इयै समाधी निकळै कोरा, एक कौगसी, आटी–डोरा।
जणै समाधी मौनौ म्हारी, मन में म्हें नहिं कूड़ो धारी।

जिकी बताऊं जगा भीतरे, उठे खोदियो निश्चे निसरे।
झालर, पख खड़ाऊ तप री दूसी समाधि उठे आपरी।
वावे कथो कठिन जिद झाली, वोले बात सोचकर डाली।
दोहा—खोदणवाळा आविया, वे जागा तत्काळ।
आटो, डोरा, कौंगसी, वो दीना देखाळ ॥ 14 ॥
चौ.—जिनस्यौं मिली समाधी में वे, सेन अबोल हुया, क्या कैवै।
डाली री सारी जय बोली, शुद्ध भावनायों वो खोली।
चरण पकड़िया डाली बाई, दो इशा डाली ने भाई।
डाली सबनै सीख बताई, रामदेव नै भजिया भाई।
बाबो के रैवै नहि पाली, पैल समाधी लेसी डाली।
बैठ समाधी डाली बाई, सुरत जोत में जोत समाई।
"ॐ शांति" री थी ध्वनि छाई, बोलै जय-जय लोक-लुगाई।
भजन कीर्तन जय-जय गूंजे, धूप—दीप, प्रसाद घर पूजे।
दोहा—शुक्ला दशमी भादवे, डाली कियो प्रयाण।
काल समाधी लेवणी, सुणलो मनै सुजांण ॥ 15 ।
चौ.—भजन-कीर्तन हुयो रात-भर, तड़के त्यार हुया सब न्हायर।
डाली जिकी बताई जागा, उठे समाधी खोदण लागा।
पाट, पीतम्बर, झालर निसरी, शंख, खड़ाऊ मिली, न विसरी।
साचा बोल भगत रा करिया, वाये सबरा संशय हरिया।
डाली री जय सिगळो गाई, अमर हुय गई डाली बाई।
रतन कटोरो, बीरगेड़ियो, अभय अंचळो साथै धरियै।
राम-राम सब सूं फिर करियो, चरण समाधी में वो धरियो।
खड़ा समाधी सबनै जोवै, वे सब ऊभा आँखयो धोवै।
दोहा—सब नै वो ढाडस दियो, दियो अनूठो ग्यान।
पट न समाधी री कदे, खोल्या, राख्या ध्यान ॥ 16 ॥
हुया समाधी में तुरत, बाबो अंतरधान।
"ॐ नमः शिवाय" ध्वनि, गूंजी सब रे कान ॥ 17 ॥
जाग्रत-ज्योति नै सदा, ध्यावे दुनिया सान।
धूलै रो हेलो सुणो, हाको रा भगवान ॥ 18 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

चौहदवां चरण

हरबूजो नै परचौ

दोहा— गणनायक, शारद सुमिरि, गुरु पदं नाऊं माथ ।
हरबू नै परचो दियौ, रौंणेचै रै नाथ ।।1।।
मासी-सुत, भ्राता, भगत, प्रभु रो मरजी दौन।
वचन दियौ, पूरन कियौ, दे दरशन भगवौन ।।2।।

चौ.— भादू सुद दशम नै पाई, पैल समाधी डाली बाई ।
इग्यारस नै पावन कीनी, बाबै आप समाधी लीनी ।
वीर गेडियो, रतन कटोरी, अभयाञ्चल सुन्दर चित्तचोरी ।
तीनूं जिनस्यौं साथै राखी, औंखे देखी, सिगला साखी ।
रौंणेचै में मातम छायौ, सारों लोगों सोक मनायौ ।
खबर सुणी आ हरबू भाई, बावै जिंवत समाधी पाई ।
वचन दियै री सुरता आई, मिलियौं बिन जाऊं नहि भाई ।
हुयो अचंभो, हरबू चाल्यौ, सोच बिछोड़ो हिवड़ौ हाल्यौ ।

दोहा— इत दरसन री लालसा, उत वियोग री सौंच ।
सुगन हुया शुभ पंथ में, मिटियो कुछ संकोच ।।3।।
रौंणेचै सूं दूर कुछ, माला भगंती जाल ।
वेरै नीचै दीसिया, अजमल जी रा लाल ।।4।।

चौ.— मालो हाथ, चरावै घोड़ो, हरबू इचरज कियो न थोड़ो ।
पौंच पास पैरों में पड़ियो, हिड़दे हरख अपार उमड़ियो ।
लियो उठाय, चिपायो छाती, पूछी कुशल, न खुशी समाती ।

परतक दरसन हरवू करिया, बाबै मन संशय हरिया।
गिड़गिड़ाट मन में कुछ रैयो, तुरत संकतै हरवू कैयो।
बात अशुभ सुण चिंता झेली, सुणियो आप समाधी लेली।
दे दरसन दास नै तारियो, कियो सुखी, दुख सूं उबारियो।
बात बड़ी दुनिया, री भाई, कैवे सै खुदरी चितचाई।

दोहा— हरवू नै ढाढस दियो, बाबै दे उपदेश।
मन रा संशय मेटिया, कटिया सकल् कळेश ॥5॥

चौ.— तीन जिनस बाबै दी सागे, पोंचो थे रोंणेचै आगे।
वीर गेडियो वीरमजी नै, दीजो के जय हरि भाई नै।
मैणादे माता नै देणों, रतन कटोरो, जय हरि केणों।
अजमल जी नै अभय अंचली, दीजो खेम कुशल् कै सिगली।
सब रा करिया फिकर निवारण, जाऊं बार कौम रै कारण।
हरवू तीनूं चीज्यों लेली, बाबै री आज्ञा सिर मेली।
कियो दंडवत, हरवू टुरियो, रोंणेचै पोंचण नै झुरियों।
हरवू जब रोंणेचै आयो, हाल देख मन धड़को खायो।

दोहा— देख्या हरवू नगर रा, सिगला लोग उदास।
सारा दुख में डूबिया, देख अटकियो सास ॥6॥

चौ.— सिर मूंडाया, बस्तर काला, हुयो अचंभो एकई ढाला।
बंद बजार नगर रो सारो, देखे हरवू दग विचारो।
मैलों में जब हरवू आयो, घर री कूका रोल् मचायो।
हरवू नहीं समझियो कारण, करै बंम री कुंण निवारण।
बात अंत में वो समझाई, बाबै जिवत समाधी पाई।
है सब बात्यों कूड़ी थाँरी, बात न मानै, हरवू वाँ री।
माला भगोती गोल रै तल्, मनै लगायो बाबै गल्।
बाबै सूं मिल-सीधो आयो, कूड़ो शोक अठै क्यों छायो।

दोहा— बावे सूं मिम बात की, वौं दीनी उपदेश ।
म्हें खुद आँखे देखिया, नहीं वृंम लव लेश ।।7।।

चौ.— वात किसो दोनों में साची, उथल्-पुथल् सबरै मन माची ।
हरवू तीनूं चीज दिखाई, खुद बावे, ऐ दीनी भाई ।
ताकै तीनूं चोज्यों सारा, बात न समझै वै वेचारा ।
तीनूं जिनस समाधी राखी, वीरम खुद, था सिगला साखी ।
तीनूं चीज किठै सूं लायौ, हरवू भेद समझ नहि पायौ ।
दोनों री बात्यों थी साची, एकूकी नै कै कुण काची ।
कौंकर अब पतियारो आवे, औ असमंजस कूंण मिटावै ।
खोद समाधी, परख सचाई, क्यों न करो पतियारो भाई ।

दोहा— म्हारी चीज्यों सौमनै, थौंरो जिद वृंकार ।
खोद समाधी देखलो, दी हरवू ललकार ।।8।।

चौ.— मायापति वौंरो मति फोरी, मूढ़ों री बुद्धि झकझोरी ।
मत खोलिया समाधी रौ पट, हुय जावौला नहि तौ चौपट ।
भूल गया सिख्या बाबै री, रौम रूसियौ रै मति कैरी ।
सिगलौ मिल आ निश्चै करली, हरवू री हौं में हौं भरली ।
खोद समाधी देखौ भाई, हरवू कौंकर जिनस्यौं पाई ।
जिकै मारियौ प्रथम फावड़ौ, फूटौ सिर, बेहाल डावड़ौ ।
हठ न छोडियो, तौई मूढ़ौ, खोद उठायौ पट वौ कूढ़ौ ।
पुसब मेक रै साथ आई, आ आवाज, सुण मति चकराई ।

दोहा— इण म्हारी पैल थौ, कियौ अघोरी पाप ।
डाकू बणसौ सैन थे, पड़ पीढो, औ स्राप ।।9।।
पीढ़ी दर पीढी हुंता, तुंअर वंश में पीर ।
कियौ पाप सिद्धी गई, कुल् रो मिटी लकीर ।।10।।

चौ.— सुण अकास वोणी सब डरिया, वों गैरा पछतावा करिया ।
बिनती करी, करुण क्रंदन कर, हरो बापजी भगतों रों डर ।
करो अनुग्रह थे सराप रो, दारूण दुख मेट दो पाप रो ।
म्हें तो पापी औगणगारा, थे मा-बाप भगत रखवारा ।
गलती माफ करो अब सोमी, मनरी जोणों अंतरजोमी ।
फिर अकास वोणी आ गूंजी, थोंने सुमत देर सूं सूजी ।
मिटै न स्राप, अनुग्रह होसी, कर प्रसाद रो लूंटा खोसी ।
कोग रो सराप फलजासी, पूजा कियों मेट भर सासी ।

दोहा— नादारी जासी नहीं, रै पीढ्यों परवोण ।
रोज समाधी पूज सो, पत मिल हुसी पछोण ।।11।।
किमो अनुग्रह, भक्ति दी, तुंअरो नै भगवोन
दे सराप, करुणा करी, हुयग्यो वो वरदोन ।।12।।

चौ.— सुण अकास वोणी हरखाया, हरबू सहित सैन घर आया ।
तीनूं जिनस्यो घर में जोई, लोप हुय गई, मिलो न कोई ।
घुड़साला में जोयो जायर, लोलूड़ो न मिल्यो सब कायर ।
थो कपड़ै रो घोड़ो आगै, नभ-वोणी सुण सिगला जागै ।
कपड़ै रो घोड़ो ले फिरसो, हुसी निभाव, अंत में तिरसो ।
माघ-भादवै मेलो भरसी, आसी भगत, चढ़ायो करसी ।
साचै भगतों नै दूं परचा, दुनिया भर में फैलै चरचा ।
सच्चै मन सूं जो कोई ध्यासी, वैरा दुख निश्चै मिट जासी ।

दोहा— रिख्या, न्हावण भक्ति लै, पावै सब परसाद ।
मनोकोमना पूर सूं, करै भक्त जय नाद ।।13।।
म्हारै मंदर में नहीं, भेद भाव रो कोम ।
जात-पंथरो भेद नहि, सब रो सोमो रोम ।।14।।
भरमाया हरबू, तुंमर, माया रो नहि पार ।
बूंलै रो हेलो सुणो, रामा राजकुमार ।।15।।

ॐ

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

पन्द्रहवों चरण

राणी रूपादे नैं परचो

दोहा—विघ्नेश्वर गज-बदन रो, धरूं ध्यान चित लाय।
शारद वीणा-धारणी, माता करै सहाय॥ 1॥
गुरु-पद-नख-ज्योती करै, मन में इसो उजास।
ज्ञान पाय नुगरो हुवै, हरि-चरणां रो दास॥ 2॥
रूपादे प्रभु री भगत, वैरी बिपदा टाळ।
नुगरो पति सुगरो कियो, दोनूं हुया निहाल॥ 3॥

सोरठा—महवै रो भूपाळ, मारवाड़ रो मालजी।
परचो दीन दयाल, दे नुगरो सुगरो कियो॥ 4॥

चौ.—मारवाड़ महवै रो राजा, मालदेव सब वैभव साजा।
रूपादे श्री पहली राणी, दूजी चन्द्रावती बखाणी।
मेवानगर नाम बजतो थो, धारू भगत उठै बसतो थो।
उगमसिहजी था गुरु वैरा, दोनूं बड़ा भगत बावै रा।
घणी बार गुरू उठै आवता, जम्मो धारू-घर करावंता।
गुरु-चरणां में श्रद्धा मेली, रूपादे थी वांरी चेली।
परम-भक्त थी वा बाबै री, बात नगर में फैली वैरी।
जम्मो हुवतो, उठै जावंती, छानै बीणा मधुरगांवती।

दोहा—मालदेवजी राखता, रूपादे सूं नेव।
सौख सदा धुखती, करै क्यों पति इतो सनेव॥ 5॥

चौ.—चन्द्रावती ताकती मोको, कोकर करै पती नै बांको।
रूपादे री चुगल्यां घड़ती, पार न बिलकुल वैरी पड़ती।
मन में बोत आधको छायो, इक दिन आछो मोको आयो।
उगमसिंह महवै में आया, धारू घर ठैराया।

जनम्यो मेघवंश में धारू, लोक मानता हेठो कारू।
वड़ा लोक वें रे घर आवें, तो वाँरी कुळ ईजत जावें।
दुनियादारी री एँ बातयाँ, मानें ऊंचो-नीची जातयाँ।
पण बावेरा भगत सिरीसा हुवें न वाँ में दस्सा-बीसा।

दोहा—बावें समता रो दियो, भगतों नें उपदेश।
वाँरें भगतों में नहीं भेद-भाव लवलेश ।। 6 ।।

चौ.—कियो उगमसिंह घर धारू रे, जम्मो उठ्यो विचार गुरू रो
आज जमें में आनंद भारी, रूपादे रोणी न पधारी।
धारू तू मैलों में जायर, रूपादे नें लाव बुलायर।
जाय कह्यो वे रूपादे नें, गुरुजी याद करी है वेंनें।
खुशी हुई रोणी नें भारी, करी जांवणें री तैयारी।
मन में तो राजा रो डर थो, जाणो पण धारू रें घर थो।
खाली पलँग छोड जे जाऊं, देखणियें रो बँम बढाऊं।
राख खड़ग ओढायो रोणी, वा सूती ज्यों बणी निसाँणी।

दोहा—चाली आधी रात में, मैलों सूं चुपचाप।
धारू रें घर में गई, मिलिया गुरुजी आप ।। 7 ।
बावें रो जम्मो हुवें, रूपादे हरखाय।
लियो तँबूरो हाथ मे, रही भजन वा गाय ।। 8 ।।

चौ.—ताक रही थी दूजी रोणी, बात तुरत वें सारी जोणी।
चन्द्रावती पोंचगी जायर, केंयो पति नें तुरत जगायर।
राजा री रोणी कहलावें, रूपादे धारू-घर जावें।
हाथ तँबूरो गाय बजावें, नीचों बीच कुटंब लजावें।
मालदेव सुण इचरज करियो, मन राजा रो गुस्सें भरियो।
रूपादे रें मेलों आयो, पण पलंग नहिं खाली पायो।
ओढण राजा तुरत उठायो, सरप भुजंगी सोमो आयो।
डरियो, बार महल सूं आयो, राजा रें मन गुस्सो छायो।

दोहा–नाई ने राजा कह्यो, धारू रै घर जाव।
साची बात निगै करै, आयर मनै बताव ॥ 9 ॥
धारू रै घर पौंचियो, नाई देख लजाय।
रूपादे गावै भजन, वीणा हाथ बजाय ॥ 10 ॥

चौ.–खाख पगरखी नाठो आयो, वै राजा नै हाल बतायो।
हुयगी गाँठ खाख मे भारी, उठै न हाथ, मार पीड़ा री।
उठै न हाथ, तुरत फळ पाया, देखणवाळा से चकराया।
सुवै न राजा, बैठो जागै, हाथ खड़ग, दरवाजे आगै।
ढली रात जद पाछी आई, देख पती नै वा घबराई।
राजा रौणी नै ललकारी, बात बतावो, म्हौंनै सारी।
इती रात थे किठै सिधाया, अबै किठै सूं पाछा आया।
याद प्रभू नै कर वा बोली, रौणी वैरी डर सूं डोली।

दोहा–गई बगीचे, लेवणै, पूजा खातर फूल।
थो न बगीचो पास में, डरी, गई वा भूल ॥ 11 ॥
ढकियोड़ो थो हाथ में, परसादी री थाळ।
कूड़ सुण्यो, उमड़ी पती, रै मन में झट झाळ ॥ 12 ॥

चौ. –आस-पास में नहीं बगीचो, कूड़-कपट मत मन में सीखो।
लाया जिका पुसब दिखलावो, नहि तो गळती रा फळ पावो।
याद करी करुणा सूं रौणी, प्रभु वैरी सिरदा में ओणी।
थाळ उगाड़यो, रौणी डरती, और न चारो, वा पग धरती।
बाग थाळ में, नजरयों आयी, पुसब गेंकता, रात पकारायो।
बाबै री माया वैं ओणी, बोलयो राजा इगरत रौंणी।
भाव बदळिया राजा रा झट, मौन हुयो, लुलिया सतरपट।
ओ मारग थे मनै बतावो, जनम सुधारूं लूंटूं लावो।

दोहा–रौंणी राजा नै कह्यो, कठिन भक्ति री राह।
सच्चो पण मन में करो, तो प्रभु पूरं चाह ॥ 13 ॥
राजा पण पक्को कियो, रौणी साथै जाग।
धारू रै घर पौंचियो, जोत सुरत सुभ जाग ॥ 14 ॥

चौ.—देनी गुरुजी जोत बुझी नैं, उणही रीत गुरु रै गीतें।
गुणई नैं वर्षां गायं, साई, दृष्टि पड़ते, जोत बुझाई।
रीणी गुरु सूं माफी मांगी, बात गुरुजी नैं समझाई।
बावै रो परचो गुण हरख्या, मामदेव नैं गुरुजी परख्या।
भगती रो पण गाणो पायो, गुरुजी येनैं शिष्य बणायो।
राजा वीं सूं फौज फड़ाया, चाळा बड़ा तुरत पेंगाया।
मल्लिनाथजी नीम रचायो, परमारथ री पंथ लगायो।
रूपादे री विपदा टाळी, परणी देव करी रखवाळी।
दोहा—बाग लगायो पाळ पे, परचो दियो अनूप।
चूनै रो हेलो सुणो, रीणेचै रा भूप ॥ 15 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

सोलहवों चरण

दलैजी सेठ नै परचौ

छंद— गौरी-पुत्र गणेश नै मनाऊं, ध्याऊं सदा शारदा ।
हरि-हर रा गुण गाय, शीश नाऊं, गुरुदेव-चरण-धूरि में ।।
दौ बुद्धी, वाणी सफल बणावौ, हे राम, कृष्ण, रामशा ।
ध्याया दलजी सेठ, पुत्र पायौ, परतक्ष परचौ दियौ ।।1।।

सोरठा- इक घोसूंडों गाँव, थौ प्रदेश मेवाड़ में ।
सेठ दलौजी नाँव, वसतौ, धन-संपन्न थौ ।।2।।
दूर-दूर बौपार, कर-कर रिजक कमावतौ ।
जीवण-सुख-आधार, पुत्र-रत्न पायौ नहीं ।।3।।

चौ.— रै उदास नहिं स्वावै माया, सूकै सुत बिन तर-तर काया ।
किया दौन-पुन, विप्र जिमाया, जप-तप करिया देव मनाया ।
अनुष्ठान, व्रत कर-कर धाया, मनवांछित फल वौ नहिं पाया ।
रया बांजड़ा, पुत्र न पायौ, पाप पुरवलौ आडौ आयौ ।
सेठ-सेठाणी, दुखी विचारा, आठ पौर वै आँसू धारा ।
इक दिन द्वारै साधू आयौ, माँगी भिक्षा अलख जगायौ ।
सुण सेठाणी, बाहर आई, चैरै पर थी चिन्त्या छाई ।
दे 'मा' भिक्षा, कह्यौ बटौई, 'मा' सुणते सेठाणी रोई ।

दोहा— ले भिक्षा साधू कह्यौ, क्यों रोवे तू मात ।
बाँझपणै री दुख मनै, माल रयौ दिन रात ।।4।।

चौ— और सैन सुख है बेकारा, सूनी कूख लगै सब खारा ।
'मा' कैवणियौ नहीं जनमियौ, नहीं आँगणै बालक रमियौ ।
घर मशाण जिन्दगी नारगी, सुत-चिन्त्या जीवते मारगी ।

ना सुत दे, ना म्होनें मारे, क्रूर विधाता करे सारा
दुख री छेड़ी कोंकर पावों, कद गोदी में पूत रमावों
भ्राई दया, संत दुख कीनो, सेठाणी ने ढाढस दीनो
पासी पूत, हुसी मुख गाढ़ो, मिटसी निश्चै, संकट ठाढ़ो
ध्यावो कोई जाग्रत ज्योती, रारण लेकर थे करो मनोती

दोहा— निश्चै संकट काटसी, थौंरा जाग्रत देव ।
पूत पालणैं खेलसी, प्रभु-पद करियौ नेव ।।5।।

चौ — सेठ दलो भी वायर भ्रायो, सुरणी बात मन में सुख पायो।
जाग्रत देव किसो समझावो, करूं ध्यावना, लूंटूं लावो।
लेवै जिको समाधी जीवित, जाग्रत-देव वजै जग में नित।
रामदेव रौणेचै वालो, जाग्रत देव भगत रखवालो।
ध्यावो वोनें, करो मनोती, इच्छया फल दें जाग्रत ज्योती।
जैनी श्रावक दलजी थो, परण, करो मनोती दोनों लेखरण।
करी वोलवा, देसौं फेरी, पुत्र हुयौं, म्हें रौणेचै री।
मुंडन कर्म करण नै भ्रासौं, घोड़ो, घोली धजा चढ़ासौं।

दोहा— सेठ, सेठाणी ध्याविया, साचै मन धर-धीर।
नवें महीनें दे दियो, पुत्र रामशा पीर । 6।।

चौ — चिन्त्या मिटी सेठ री सिगली, हरख, बधाई करी मोकली।
खुशी हुई दोनों नें गाढ़ी, किया दान-पुन मन री काढ़ी।
सूनी कूख रामशा भरदी, मन री इच्छया पूरी करदी।
दियो कमल सो सुन्दर बालक, बाबो भक्तों रो प्रतिपालक ।
पांच बरस री ऊमर पाई, त्यार हुय गया धणी-लुगाई ।
रौणेचे जावण री त्यारी, करी, जरूरी जिनस संवारी ।
चोखै ऊठ पलाण कसायो, वै में सो समान लदवायो।
जै गणेश कै, तीनूं टुरिया, रौणेचै पोंचण नै भुरिया ।

दोहा— संज्या पड़ते भ्राविया, रस्ते में इक गांव ।
रात बसेरें री लियो, वो सराय में ठांव ।।7।।

चौ.— धूप-दीप कर भोजन कीनो, तीनों रो मन भगती-भीनो ।

एक अजीण बटोई आयो, थो ठाकर रो वेश बणायो ।
कठे जांवणो सेठाँ थाँनै, आय पूछियो वै सेठाँ नै ।
बोल्यो सेठ, रणेचै जासाँ, रामदेव बाबै नै ध्यासाँ ।
ठीक जोग है, ठाकर कैयो, हूं भी इच्छ्या करतो रैयो।
साथै सूं फेरी दे आसूं, हूं भी रोणैचे इज जासूं ।
कयो सेठाँणी, दूर देश में, हुवै कूण ? क्या ? किस वेश में।
किया भरोसो ना अजीण रो, ध्यान राखिया थे पलाँण रो।

दोहा— मन में सोच्यो ठीक है, सेठाँणी री बात।
सेठ कयो विश्वास क्या ? थे करसो नहि घात ॥8॥
जे बाबै री आँण लो, तो पतियारो आय।
नहि तो साथो ना करूं, इयो न मन पतियाय ॥9॥

चो.— आँण रामशा री वै लीनी, बाबो साखो, ढाढस दीनी ।
सेठ दलै बाबै री सौगन, सुणी, ठैरियो दोनों रो मन।
भोर हुयो, वाँ साथो करियो, आई सून, सेठ कुछ डरियो।
ब्यावर रो जंगल गैरो, थो बराँटियो गाँव उठै रो ।
सूनो ठोड़ देखते डाकू, आडो ऊभ, काढ़ियो चाकू ।
उतरो नीचे, दो धन सारो, बेबस सेठ, नहीं कुछ चारो।
बालक सहित उतरिया सारा, डाकू बोल बोलिया खारा ।
सुण मारण री धमकी डरिया, माल, मता सब आगै धरिया।

दोहा— धन-पत, सारो लेय लो, म्हाँनै बगसो ज्यान।
निरदय डाकू कड़कियो, राख परै औ ग्यान ॥10॥

चो.— डाकू रै न दया सूं नातो, लूट-मार में रै मद-मातो।
धन वालै रो डाकू बैरी, हरखै ज्याँन लेंवते वैरी ।
काढ़ी वै तलवार म्यान सूं, काटो नस, मारियो ज्याँन सूं।
हितयारै सेठ नै मारियो, दोनों रो जेवर उतारियो ।
दोन पौवग्या साधो बैरा, वै रै जिसा भयानक घेरा ।
माल-मता सारा समेटिया, डाटा मूंडाँ रै लपेटिया ।

बालक विलखै, अबला रोवे, हित्यारा सौमो नहि जोवै।
चला गया वे जंगल पासी, च्यारूं निडर, कर रया हासी।

दोहा— लाश पड़ी थी सेठ री, सेठाँणी बेहाल।
अबला री विनती सुणो, अजमलजी रा लाल ॥11॥

डाकू थाँरी आँण ले, घात करी मग बीच।
भगत मार धन खोसियो, वै हित्यारै नीच ॥12॥

चौ.— थाँरी उदगर माथै म्हाँरै, पौंच न सकिया द्वारै थारै।
रई बोलवा आज अधूरी, इन्छया नहीं हुय सकी पूरी।
म्हे अनाथ, बिलखाँ उजाड में, नही सुणनियौ सूनवाड मे।
एक आसरौ बाबा थाँरौ, थे निस्तार करो भगतों री।
बादशाह थे पच्छम धर रा, दुखी शरण लै दुनिया भर रा।
रामा राजकुमार कृपाला, मैंणादे रा लाल दयाला।
सुणलो रोणेचै रा धणियौं, और नहीं है पत राखणियौ।
अबला, बालक दुखी पुकारै, है जीवण बस थाँरै सारै।

दोहा— एक भगत ने मारियो, म्हें दो हुया अनाथ।
हित्यारों ने दंड दो, थाँरा लंबा हाथ ॥13॥

चौ.—करुण रुदन जद अबला करियो, बाबै नैं आयोंड सरियो।
वीर वेश में बाबो आया, दोनूं भगत देख हरखाया।
आय दिलासा दी दोनों ने, देऊ दण्ड जाय दुष्टों नैं।
लूट्योड़ों धन पाछौ लाऊं, थे सुस्तावो, फौरन आऊं।
लूटारों री लारो करियो, हेलो सुणते डाकू डरियो।
देख्यो वो ठाकर एकेलो, कयो मूंढ़ क्यों मारै हेलो।
म्हाँसूं क्यों चभचेड़ो खावे, जीण बूझ क्यों मौत बुलावै।
आंधा कोढ़ी कर च्यारों ने, बाबै जाय पकड़िया वो नैं।

दोहा— खस्ता हालत हुय गई, हुयग्या वे लाचार।
बिरलावै वे पीड़ सूं, लागा करण पुकार ॥14॥

चौ.— लाया माल सेठ री सिगली, भगतों आगे करियौ ढिगलो ।
ले बाई संभाल् धन थारो, ले आयो हूँ पाछो सारो ।
मनै न ओ धन बालो लागै, मरसूं हूं मालक रे सागै ।
एक आपदा म्हारी टालो, ओ अनाथ बालक संभालो ।
की अरदास इयों सेठोंणी, बाबो बोल्या इमरत बौणी ।
धड़ सूं सिर लगाय दे बाई, सेठ उठै ज्यों नींद जगाई ।
अबला के म्हारो तन धूजे, कर न सकूं कुछ, मनै न सूजे ।
बाबै धड़ सूं सीस लगायो, सेठ उठ्यो, ज्यों नींद जगायो ।

दोहा— धड़ सूं सीस लगावंतै, चोटी दबगी बीच ।
एकमेक धड़–सिर हुया, काढ सकं नहिं खींच ।।15।।

सोरठा–पी परतक परमोंण, परचै री चोटी दबी ।
गया लोक सब जोंण, बाबो आप पधारिया ।। 16।।

दोहा— ओ परचो जब देखियो, दोनों झाल्या पैर ।
जद सागी दरसण दिया, बाबै करदी मैर ।।17।।
बाबै कैयों सेठ नै, करिये पर उपकार ।
दीन दुखी पोखे सदा, जींवण लिये सुधार ।।18।।

चौ.— हूं नित थारै मगरे रैसूं, हुसी तनै डर कदे न, कैसूं ।
भगती सूं गुण म्हारा गासी, विपदा कदे न नैड़ी आसी ।
बाबो तुरत अदृश्य हुय गयो, मिलियो जीवण सेठ नैं नयो ।
टुरिया वे रौणेचे आया, आनंद मिलियो, दरशण पाया ।
पूजा कर परसाद चढ़ायो, खूब बौंटियो, खुद भी खायो ।
मुंडन बालक रो करवायो, जात फली घर पाछो आयो ।
सारो गौंव सेठ जीमायो, परचै रो वृतांत बतायो ।

दोहा— घोसूं डेर बरौटिये, में मंदर बणवाय ।
कियो जमारो धन्य वे, बाबै रा गुण गाय ।।19।।
दौन–पुन्य, उपकार कर, धन रो सद उपयोग ।
करियो, परचै री कथा, सुणै सरावै लोग ।।20।।
बाबा अशरण शरण हो, भक्तों रा प्रतिपाल ।
बूलै रो हेलो सुणो, मैणादे रा लाल ।।21।।

ॐ

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

सत्रहवां चरण

ऑंधै साधू नै परचौ

दोहा—हेमाचल री धीव रा, सुत ऊंदर असवार।
साथै सरसुत पौंवसै, वीणा कर में धार॥ 1॥
किरपा सूं गुरुदेव री, परचौ करूं वखौंण।
दी ऑंख्यौं, दरसण दिया, भगती रै परवौण॥ 2॥

सोरठा—ऑंधो साधू एक, हुँतो सिरोही सैर में।
भगत बड़ो थो नेक, दी ऑंख्यौं, विपदा हरी॥ 3॥

चौ.—सैर सिरोही में थो वसतो, बाबै री भगती में रसतो।
ऑंधो साधू भगत प्रभू रो, भगती में मन रंगियो पूरो।
लोक उठै रा संग बणावै, सालो-साल रुणेचै जावै।
ऑंधलियै नै कुँण ले जावै, वो रौणेचै जाय न पावै।
जांवण री तौ मन में आवै, बस न चलै, बैठो पछतावै।
पक्को नैचो ऑंधलियै नै, जे लेजाय रुणेचै वैनै।
बाबै रो दरगा में जावै, तौ वैरी ऑंख्यौं खुल जावै।
सँगवाळौ सूं बिनती कीनी, लेजावण री हौ भर लीनी।

दोहा—ऑंधो साधू चालियो, रौणेचै सँग साथ।
मन में हरखायो घणो, मिलसी दीनानाथ॥ 4॥

चौ.—सँगवाळौं रै लारै चालै, ऑंध री लकड़ी वै झालै।
जे छोडै तौ रस्तौ भटकै, धैरै कारण साथी अटकै।
कदम काळ रै जावै लारै, सँग रा साथी हेलो मारै।
भूखो, तिसो जदी रै जावै, भोजन देवै पौणी पावै।
पेडो करै सैन थक जावै, ऑंधलियो वौनै उफतावै।

भाव दया रा खूटा तर-तर, रीसों बळै सैन ग्रोंधे पर।
जोधीणै री हुतो इलाको, गाँव डाबड़ी री थो नाको।
ठेर उठै सी रात बिसोई, टुरसों काल दिनूगे तोंई।
दोहा—सारो सँगवाळों कई, ग्रोंधे नै ग्रा वात।
जीमायो, कैयो सुग्रो, सुख सूं ग्राखी रात ॥ 5 ॥
चौ.—सैन उफतग्या था ग्रोंधे सू, पंडो कौंकर छूटै वेसूं।
ग्रा सोची, वों कोतक करियो, छोडण री धोखो मन धरियो।
थकियो, दुखतो सोंधो-सोंधो, गेरी नींद सूयग्यो ग्रोंधो।
वों री थो नेंचो ग्रोंधे नैं, नींद निसंक ग्रायगी वैनें।
उठिया ग्राधी रात संभिया, चुपकै साज टुरण रा सजिया।
संग चालियो चुपकै सारो, ग्रोधो सूतो थो बेचारो।
टुरग्या बिना मारियों हेलो, सूनवाड़ में छोड़ ग्रकेलो।
भोंभाभळकै ग्रोंधो जागो, ध्योनधरण चौतरफो लागो।
दोहा—घबरायो, इचरज कियो, ग्रोंधो हुयो निरास।
खुदरा साथी छोड़ग्या, दूजे री कई ग्रास ॥ 6 ॥
चौ.—बिलकुल सून, नहीं सुणी जियो, तर-तर ग्रोंधो बात समजियो।
चला गया सब छोड़ ग्रकेलो, ग्रबै सुणै कुण वैरो हेलो।
ग्राज जिसो दुख कदे न पायो, मन में वड़ो ग्रणेसो ग्रायो।
ग्रोंधापणो इसो न ग्रखरियो, ग्राज सिरीसो दुखी न करियो।
परगटियो ग्रो टैम पाप रो, बाबा एक ग्रधार ग्रापरो।
भगतों मनें छोडियो लारै, कौंकर पोंचूं थोरै द्वारै।
सीध नहीं, ना मारग पाऊं, कोकर टुरूं, किठो नै जाऊं।
ग्राज रैयगी ग्रास ग्रधूरी, दूजो कुण कर सकै पूरी।
दोहा—बदो कोई है नहीं, सुणसो कुण पुकार।
थेंई व्यापक सारी जगा, दुखियों रा ग्राधार ॥ 7 ॥
चौ—थोरै भगतों रो थो नैंचो, थों छोडियो, डोर प्रभु खेंचो।
सारा कैवे, सिगळै व्यापो, दीनानाथ भूलग्या ग्रापो।

थे देखो, ओंधो दुख पावै, दूजो कुण सँभालन आवै।
रोय-रोय मरजासी ओंधो, कुण बाळसी, दे कुण खोंधो।
बाबा थोंरो बिरद सँभाळो, दुखी भगत रा संकट टाळो।
मनै बापजी है दिढ, नैचों, बाबो जिठै, उठै रोणेचो।
ओंधो भगत जाय नहिं पासी, तो रोणेचो सीमें आसी।
बैठो जाय खेजड़ी नीचै, रोवै, ओंधो ओख्यों मीचै।

दोहा—भगतो रा दुख मेटिया, मरियोड़ा जीवाय।
पूत निपूतों नै दिया, ओंधा ओख्यों पाय।। 8 ।।

चौ.—कोढ़ कोढ़ियों रा झड़ जावै, पग पोगळिया पाछा पावै।
निरधन, दलित, दुखी जस गावै, मन इन्छया पूरी हुय जावै।
थोंरा बिरद नहीं है छोनै, भगत जगत रा सारा मोनै।
ओंधै नै दुनिया दुत्कारै, अशरण री गत थोंरै सारै।
कँवळो घणो काळजो थोंरो, दुख नहिं सैय सको भगतों रो।
अबकै क्यों प्रभु खोंची काठी, करुणा री बिरती कर माठी।
लीलूड़ो क्यों हुयग्यो खोड़ो, आय न टाळो म्हारो फोड़ो।
रोणेचरा धणियों आवो, धोळो धजा अठै फुरकावो।

दोहा—ओंख्यों सूजी भगत री, बैवै आँसू धार।
खुलियों ओख्यों दीसिया, रामा राजकुमार।। 9 ।।

चौ.—देख ओंधलो इचरज भरियो, सैंजै बै बिसवास न करियो।
फेर देखियो च्यारू खोनी, दीसो सब चीज्यो, जद मोनी।
ओंख्यों खुलगी, नैचो आयो, प्रभु नै देख, चरण लपटायो।
चली प्रेम री आँसू धारा, हुलसै, मिल्या बापजी म्हारा।
नाथ लखी नहिं माया थोंरी, शरण न छोड़ू अब चरणों री।
झाली बाँय, उठायो वैनै, दी सिख्या, दरसण करतै नै।
थाप पगलिया, अठै पूजिये, भजन रात-दिन म्हारो करिये।
जनम सफळ थारो हुय जासी, भगत थोंन नै धोकण आसी।

सोरठा–बावो अंतरध्यौन, हुया, भगत जमियो उठै।
थाप पगलिया थौन, भजन करै चौसट घड़ी ॥ 10 ॥
चौ —सागी सँग रा पाछा आया, उठै थौन देख्यौ चकराया।
ओधे साधू नै ओळखियो, ऑंख्यौ खुलगी, परचौ लखियो।
भगत हाल परचै रा कैया, सै पछतावै, सुणता रैया।
खुद री करनी पर पछताया, माफी मौंगी, मन दुख पाया।
साधू समझाया सारौं नै, दोस मौनणी, रती न थौनै।
जे न छोड़ थे मनै जांवता, बावौ कौंकर अठै आंवता।
उल्टा वै वौंरा गुण गाया, थौरै कारण दरसण पाया।
चाल सिरोही सारौं कैयो, मौनी नहीं, उठैई रैयो।
दोहा—उठै बणाई झूंपड़ी, रयो पूजतो थौन।
साधू जनम सुधारियो, मिल्यो मोकळो मौन ॥ 11 ।
बणी समाधी ठौड़ वै, तजियो उठै शरीर।
बूलै री हेलो सुणो, हे पीरौं रा पीर ॥ 12 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

अठारवां-चरण

हरजी भाटी नै परचौ

दोहा— वक्रतुण्ड किरपा करौ, सरसुत माता मेर ।
गुरु-पद-रज माथै धरु, उठै भक्ति री लैर ।।1।।
भक्त उगमसी-सुत हुयो, हरजी भाटी एक ।
बाबै रा गुण गांवतौ, रचिया ग्रंथ अनेक ।।2।।
उत्तर-पच्छम री दिशा, तीन कोस परवौण ।
गौंव ओसिया सूं हुती, ढौणी सुणौ सुजौण ।।3।।

चौ. — वैं ढौणी बसतौ थौ भाई, नौम उगमसी, भगती पाई ।
भजतौ रामदेव बाबै नै, सुत-सुख नहि मिल सकियो वैनै ।
जम्मौ, भजन, जागरण करतौ, राग गांवते इमरत झरतौ ।
जद-कद दे रौणेचै फेरी, पुत्र-कामना अरजी टेरी ।
बकर्‌यौं, गायौं, भेड़ चरावै, हाथ तंबूरौ ले गुण गावै ।
सुणली बाबै, वै सुत पायौ, गणकौं हरजी नौम रखायौ ।
पाई भगती पुत्र पिता सूं, ठौणी हरजी, हरि-गुण गासूं ।
हरजी हुयौ भजन रौ रसियौ, रामदेव बाबौ मन बसियौ ।

दोहा— कार पिता री धारियौ, वौ चरांवतौ ढ़ोर ।
खुद बणाय गावैं भजन, रै आनंद विभोर ।।4।।
ऊमर पनरै साल री, पिता सिधायो धौम ।
हरजी भजन न छोड़ियौ, करतौ रैयौ कौम ।।5।।

चौ. — लेय जिनावर रोई जावै, ढ़ोर चरावै, हरि-जस गावै ।
हरजी जीवण इयौ बितावै, रौणेचै दरसण करियावै ।
रोई में बैठौ थौ हरजी, बाबै करी भगत पर मरजी ।

घोड़े चढ़ियो साधू आयो, भगत खुशी थो, दरशण पायो।
सुणलै बेटा, साधू कैयो, दो दिन सूं हूँ भूखो रैयो।
जे बकरी रो दूध पिलावै, भूख मिटै जी में जी आवै।
गरमी पड़े सैन थण सूखा, दूध नहीं है, थे ही भूखा।
थो रोटो, अबार म्हें खाई, कीकर जावै भूख मिटाई।

दोहा— बकर्यां सार्यां आइणयो, थण सूखा है सैन।
साधू भूखो, दूध नहि, हरजी खोयो चैन ।।6।।
आयो आशागीर हूँ, झूठ न बेटा बोल।
थण भरिया है दूध सूं, जायर तूं टंटोल ।।7।।

चौ — सुणी अजीब बात साधू री, बेबस हरजी चिन्त्या पूरी।
दियो कटोरो साधू वैनै, ले टुरियो हरजी, कं कैनै ?।
बकर्यां खनै भगत जब आयो, दूध थणों में भरियो पायो।
एकै थण भर गयो कटोरो, हुलस्यो हरजी रो मन सोरो।
दूध हरखतो हरजी लायो, दे भूखै साधू नै पायो।
दूध पियो, साधू हरखायो, हरजी समझ नहीं कुछ पायो।
ले डकार झट साधू कैयो, भूख मिटी पण प्यासो रैयो।
दे बच्चा थोड़ो सो पीणी, बोल्यो साधू इमरत बीणी।

दोहा— खाली थी पण लोटड़ी, टोपी पीणी नांय।
सै तलाव सूखा पड़्या, ऊनालै री लाय ।।8।।
रीती म्हारी लोटड़ी, सूखा सैन तलाव।
भगत हुयो हैरान, पण साधू कै जल पाव ।।9।।
हरजी हीमत हारकर, कैयो हूं मजबूर।
नेड़ो जल दीसै नहीं, म्हारो घर है दूर ।।10।।

चौ. — दूध मिल्यो, तूं नटतो रैयो, जल भी है, थें कूड़ो कैयो।
पंखी उडै, देख वै खोनी, देख्यो भगत, हुई हैरानी।
मारग इयें दिनूगै आयो, म्हें तलाव नै सूखो पायो।
साधू कयो, देख तूं जायर, आलस छोड़, हुयो क्यों कायर।

दियौ कटोरौ, हरजी टूरियौ, पंखी देख भाव कुछ फुरियौ।
चमत्कार थौ साधू करियौ, सूखे थणो दूध झट भरियौ।
लागौ दूध कटोरै राख्यौ, सूंत आंगली हरजी चाख्यौ।
अंतर रा पट तुरत उगड़िया, फौरन माया रा पट झड़िया।

दोहा— ज्ञान उपजियौ भगत नै, मन में हुयौ हुलास।
लियौ कटोरौ, तालरै, पौंच्यौ हरजी पास ॥11॥

चौ. — भर्‌यौ ताल जल लेवै लैरा, चमत्कार दोस्या बावै रा।
नमस्कार साधू नै करियौ, जाय कटोरौ हरजी भरियौ।
लियौ कटोरौ हरजी आयौ, दे साधू नै पाणी पायौ।
साधू नै हरजी घर लायौ, भाव-भक्ति भोजन करवायौ।
ऊनालै आया, नहिं सारौ, भादूड़े मे आप पधारौ।
हुसी जमानौ, सेवा कर सूं, ले आशीर्वाद, भव तिरसूं।
मीठा काचर बोर चखासूं, तोड़ मतीरा ताजा लासूं।
मौठ बाजरी री कर रोटी, खीरौ में सिकयोड़ी मोटी।

दोहा— दूध घिरत में चूर जब, खासौ खांड मिलाय।
मस्त हुयौ मन झूमसी, वा हरियाली पाय ॥12॥

चौ — साधू कैयौ निश्चै आसूं, भादूड़े में भोजन पासूं।
करियौ कवल जरूर निभासूं, हुसी जमानौ जब बरसासूं।
लाया मत थ्री घोड़ो साथै, खेत उजाड़्यौ संकट माथै।
चढ़ घोड़ै पर संत सिधायौ, हरजी पाछौ घर में आयौ।
चौमासे भादूड़ौ आयौ, हरियौ खेत खूब लैरायौ।
वचन निभायौ, साधू आयौ, पण घोड़ै नै साथै लायौ।
हुयौ खुशी, पण हरजी कैयौ, बाबा मना कियौ, नहिं रैयौ।
क्यों घोड़ै नै साथै लायौ, खेत उजड़सी, हुसी सफायौ।

दोहा— साधू कैयौ वृद्ध हूँ, पैदल चल्यौ न जाय।
घोड़ै सूं नाराज तूं, तो मत मनै बुलाय ॥13॥
साधू हुयौ अदृश्य झट, हरजी हुयौ उदास।
कपड़ै रो घोड़ो पड़्यौ, देख्यौ हरजी पांस ॥14॥

चौ — देख पड़्यो कपड़ रो घोड़ो, कियो अचंभो भगत न थोड़ो।
उपज्यो ज्ञान, समझ में आयो, बाबै ओ परचो दिखलायो।
मोको चूक भगत पछतायो, कलपण लागो मन दुख पायो।
हूं मोथो, अणपढ़ अज्ञानी, थांरो विरद संभालयो क्योंनी।
भगत डूबियो दुख अथाग में, पछतावै री जलै आग में।
बाबो दुखी देख नहिं सकियो, कलपै भगत, विछोड़ै थकियो।
प्रगट्या रामदेव पल भर में, लीलै चढ़िया, भालो कर में।
हरजी हुलस पड़्यो चरणों में, देख रामशा ऊभा सौमै।
दोहा — बाबै भगत उठावियो, माथै धरियो हाथ।
संशय, संकट मेटिया, रोणेचै रे नाथ ॥15॥
चौ — कै बाबो सुण हरजी भाटी, खटणी करी जिन्दगी काटी।
मो-माया सूं नातो तोड़, परमारथ री पूंजी जोड़।
लो लगाव भगती में मन री, थारै कमी न रैवै धन री।
लै संभाल, दूं अक्षय झोली, ऊपर सूं आ दोसं खोली।
थारी इच्छ्या पूरी करसी, कदेन आ तूं नीचै धरसी।
खेमै गूगल, किये न ऊंधी, मोने शिक्षा सारी सूंधी।
ध्यौन राखजे पूरी हरजी, करै न बात्यां म्हें जो बरजी।
ब्यांव तनै करनो ई पड़सी, वंश भगत रो नहीं उजड़सी।
दोहा— हरदम थारै साथ में, रैसूं सदा अदीठ।
हेलो करतै आवसूं, जे दुख दे कोई ढीठ ॥16॥
घोड़ो कपड़ै रो उठा, खांधै धरियो घूम।
अलख जगाये भजन कर, गाये वौणी झूम ॥17॥
चौ. — अंतर्धान रामशा हुयग्या, गुम-सुम हरजो कंय सकै क्या।
आयो होश, वंदना कोनी, घोड़ो-झोली खांधै लीनी।
बाबै री इज्ञा वै मौनी, पैदल घूम्यो च्यारूं खौनी।
भजन गांवतो बड़ा सुरीला, बरनै रामदेव री लीला।
रैवै वो भगती सूं घिरियो, दूर-दूर चौतरफो फिरियो।
निमल बुद्धी हरजी पाई, बाबै री मैमा फैलाई।

दसूं दिशायों में जस छायौ, इयौ भगत जोधौणै आयौ।
सुन्दर बाग राईकै आयौ, हरजी आसण उठै जमायौ।

दोहा — जेसल-तोरल, ब्यांवलो, अरु मेघड़ी पुराण।
रणसी-खींवण गाविया, वै चौबीस प्रमाण ।।18।।

चौ. — सात दिनों हरजी जस गाया, भगत मोवला सुणनै आया।
भजन-राग री मस्ती छाई, भगत तंबूरै मधुर वजाई।
फैली जोधौणै में चरचा, रामदेवजी देसी परचा।
था कुछ दुष्ट धाधकौ खायौ, हाकम नै भिड़ाय भड़कायौ।
गुस्सौ कियौ हजारी हाकम, वाग पौंच करियौ औ कुकरम।
रे कूंडापंथी पाखंडी, रोप वाग में धोली झंडी।
कपड़े रौ घोड़ौ पुजवावै, भोली दुनिया धोखौ खावै।
है तूं बुगलौ भगत ठगोरौ, दीसै तूं पाखंडी कोरौ।

दोहा— डेरा-डोडा सांभलै, तुरत छोड़दे वाग।
जोधौणै री सींव सूं, वार चलौ जा भाग ।।19।।

चौ. — लैं उठाय सब झोली-झंडा, देर करी तौ पड़सी डंडा।
धरै खोंधे घोड़ौ पूरौं रौ, वाग नहीं औ गैंडसूरौं रौ।
हरजी कै हाकम हठ छोड़ो, रामदेव बाबै रौ घोड़ौ।
जमियौ है जागण बाबै रौ, कौम नही थारै ताबै रौ।
पच्छम धर रौ बादशाह वौ, वैरै सौमै मंडै कूण वौ।
हटूं नहीं, कर लै चितचाई आज कयामत थारी आई।
हाकम चिड़ियौ, हुकम चलायौ, झट हरजी नै कैद करायौ।
हरजी नै घुड़शाला राख्यौ, दे धमकी हरजी नै भाख्यौ।

दोहा— सिद्धी थारी देखसूं, जे परचौ दिखलाय।
कपड़ै रौ घोड़ौ जदी, दौणौ-पौणी खाय ।।20।।
नहि तौ खाल उतार सूं, देसूं भूस भराय।
जोधौणै री सींव में, पाखंडी न खटाय ।।21।।

चौ. — नहीं भगत नै सोच मौत री, हाकम कौम न कियौ सौंतरौ।
वै करियौ अपमौन प्रभू री, मौ सालियौ भगत नै पूरौ।

हाकम धमकी देय गयो घर, हरजी याद किया नैतल-वर।
खैयो धूप धजा-धोड़ रे, हाथ तंबूरो वाजे वे रे।
बावे री आरोधो गायो, भगत पुकारे क्यों नहि आयो।
वचन दियोड़ो क्यों विसरायो, कूक-कूक हूँ हुयग्यो कायो।
हरदम साथे ओभळ रैसू, थें पर जुलम हुयो नहि सैसू।
थे''ओ जुलम सैयलो चावे, म्हें सूं अबे सयो नहि जावै।
दोहा हाथ कटारी ले कह्‌यो, मरू कटारी खाय।
बावे री अपमोन अब, म्हें सूं सयो न जाय।। 22।।
चौ —परगट बावे हाथ झालियो, पाप करण सूं तुरत पालियो।
हरजी थें धीरज क्यों खोयो, बिना बात क्यों इतरो रोयो।
हू तो थारे घोड़े पर थो, तू क्यों धूजरयो थर-थर थो।
सोच रयो, एकेलो पाऊं, तो सोमने प्रगट हुय जाऊं।
सुणतो ओर देखतो थो हूँ, दोनो ढोल, परीक्षा लेलूं।
धीरज राख, भजन कर भोळा, मिट जासी हाकम रा रोळा।
जाऊं तुरत दिखाऊं परचो, मिटै भगत रो सोन असरचो।
हाकम सूतो पलँग हालियो, नहीं संभळियो, गुड़क चालियो।
दोहा—मारी लात, पड्यो तळे, फूटो तुरत कपाळ।
हड़क-वड़क ऐ हाल था, बैठो माथो झाल।। 23।।
चौ —फेर दिये दुख तू हरजी नै, अब कै लात पड़ेली सीनै।
जा घुड़साळ, मोग झट माफी, नीच जुलम करिया थें काफी।
परचो क्यों नहि म्हे सूं लेवै, म्हारा भगत न परचो देवै।
हरजी माफ जदी नहि करसी, निश्चे तूं बे आई मरसी।
हाकम झट घुड़शाळा आयो, प्रभु राजा नै जाय जगायो।
तूं सूतो, मारै फूंकारो, भगत संतावे हाकम थारो।
ओधो सारो कुटम हुवेला, जे नहि माफ भगत कर देला।
जाग विजेसिंह पैरों पड़ियो, घुड़साळा में जायर लड़ियो।
दोहा—नीच हजारी थें कियो, बड़ो अधोरी पाप।
भगत माफ जे नहि कियो, तनै लागसी साप। 24।।

राजा हाकम देखियौ, घोड़ो मारै टाप।
दौंणो खावै, जळ पिवै, कूदै ऊंचो धाप ॥25॥

चौ. —हरजी बैठौ हरि-जस गावै, दोनों रै न समझ में आवै।
नाक-निवण कर धरी पगौ में, हाकम पाग बैठायो सौंमे।
कियौ विलाप, मौंगली माफी, भगत काळजै कँवळो काफी।
हरजी माफ कर दियो वैनै, मिलतो नहिं तो दंड जिकै नै।
राजा हुयौ भगत बावै रो, लोक उमड़ियौ जोधांणै रो।
रौणेचै में सिगळा जावै, बावै नै मन-चित सूं ध्यावै।
मंदर जागा-जागा बणिया, मेळा भरै भगत अणगणिया।
मारवाड़, गुजरात, मालवो, उमड़ै मेळै साल-साल वो।

दोहा—भादूड़ै में, माघ में, मेळो भरै अपार।
खमा करै, जय-जय करै, पोचै सब दरबार ॥26॥
हरजी भगत अमर हुयौ, बावै रो जस गाय।
भजन जिका रचिया भगत, वे गायौ तिर जाय ॥26॥
बिरध संभाळो, भक्ति दो, हूं तो हूं पापिष्ट।
बूलै रो हेलो सुणो, हे हरजी रा इष्ट ॥28॥

ॐ

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

उन्नीसवां चरण

हेमी बाई नै परचो

छंद— ध्याऊं गजमुख आदि गणेश, सकल संकट हर।
सिंवरू सरसुत, मांगू विद्या, ज्ञान, भक्ति वर॥
गुरु-पद-रज उद्धार, अहिल्या दुरमति री कर।
देवे सुमति करू गुणगान, ध्यान प्रभु रो धर॥1॥

दोहा—हेमी बाई नै दियो, परचो प्रभु खुद आय।
संकट कट, हाफे उठी, दुरबल, बूढी गाय॥2॥

छंद—है तैसील फलोदी में इक गाँव फीलवो।
गैनीजी री ढोणी बजे, प्रभावशील वो॥3॥
गैनी भगत उठै हुंवती, सेवा-व्रत धारी।
हेमी बाई मेघवश री, थी इक नारी॥4॥

दोहा—बाळपणे वैरी हुयो, ब्यांव मुआ मां-बाप।
सासरलै में थी दुखी, हेमी बाई धाप॥5॥

सोरठा—थी दुखियारी घोर, भूखी रखता कूटता।
और चल्यो नहिं जोर, तज सासरलो भागगी॥5॥

चौ.—भूखी, तिसी भटकती रैई, गरमी, बिरखा ओंधी सेई।
मौज, धूजती, रोवै आई, गैनी रे घर वै ठैराई।
पाय आसरो रैवण लागी, वैनै मौनै बेटी सागी।
रोही में गायों ले जावै, प्रेम-भाव सूं ढोल रबरावै।
इक दिन सज्या पड़ियों आई, गायो नै घर पाछी लाई।
छूटी गाय एक रोई में, हेमी याद करी झट जी में।
रोही में वा पाछी भागी, उठै गाय नै खोजण लागी।

पाई गाय पड़ी जमीन पर, कौंकर ले जावे वैनें घर।

दोहा—मन में डर थो मार दे, शायद वैनें जीव।
बेवस, पण छोड़ नहीं, हेमी दुखी अतीव ॥ 6 ॥
असमंजस थो, एकली, सकें न गाय उठाय।
घोर अँधारी रात में, रोवे था, बिरलाय ॥ 7 ॥
आधी सूं ऊपर गई, रात, बँधी नहिं आस।
घोड़े रा खुर खड़किया, सुणिया हेमी पास ॥ 8 ॥

चौ.—पड़ो आवाज कौन में ईनें, हाफें उठगी गाय उठौनें।
डरती, तो थी हेमी बाई, गाय उठी देखी, हरखाई।
सोचें संकट कौंकर कटिया, सौमें बाबो तुरत प्रगटिया।
दरसन हुया, पड़ी चरणों में, देख रामशा ऊभा सौमें।
बाबौ लो उठाय, समझाई, करे कहूँज्यों हेमी बाई।
गैनी रे घो री मौड़ें रे, हाथ जीवणे देखे वैरें।
दरखत एक उठें ऊग्यो है, हरियो पेड़ शमी रो वो है।
वैरे पासे जमी खोदियो, मिलसी च्यार उठें ऐ चीज्यों।

दोहा—मकराँण रा पगलिया, कलशो, झालर, शंख।
च्यारूं चीज्यों काढ़ कर, थरपे थौनें निसंक ॥ 9 ॥
सौंज-सबेरे पूजजें, हेमी म्हारो थौन।
जनम सफळ थारो हुसी, मिलसी आछो मौन ॥ 10 ॥

चौ.—बाबो अंतरधौन हुय गयो, थौन भगत नें निपजियो नयो।
गाय लेय हेमी घर आई, मैंनो नें सा बात बताई।
बाबें जिको बताई जागा, सारा वैनें खोदण लागा।
वौनें मिलगी चीज्यों सारी, खुशी हुई वौरे मन भारी।
दरखत नीचे थौन थरपियो, थौन पूजणो सरू वौं कियो।
वनें आसरम एक बणायो, हेमी रो, सबरें मन भायो।
करी तपस्या हेमी गाढ़ी, भक्तों रे मन श्रद्धा बाढ़ी।
दूर-दूर सूं आंवण लागा, भक्त थौन धोके वे जागा।

दोहा—हेमी पाया भजन कर, वचन-सिद्धि अरु ज्ञान।
करती पर-उपकार वा, टूठ्या श्री भगवान ॥ 11 ॥
शुक्ला एकादशी नै, जम्मो करता लोग।
माघ-भादवे में भरे, मेळो शुभ संजोग ॥ 12 ॥
अमर हुई, जीवी जिते, हेमी पायो मोन।
वूलै रो हेलो सुणो, रामदेव भगवोन ॥ 13 ॥

ॐ

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

बीसवां-चरण

हीरानंद माली नैं परचो

छंद—ध्याय शिवा-सुत, शारद सिवरू, गुरु-चरणों में शीश धरूं।
रामदेव री धाम वखांणूं, सुजोणदेसर में सिवरूं॥
सुजोंणदेसर में सासरलो, नीम हरीओ नागोरी।
गोत कच्छावा बसिया आय, सासरे, धरती भगतों री॥1॥

दोहा—सासरलै में सुत हुयो, वां रै हीरानंद।
मालो जात भगत बड़ो, बाबै रो सुखकंद॥2॥

सोरठा-वसै गोरधनदास, गुरु आम्बासर गांव में।
सुजोणदेसर पास, आठ मील पर वो हुंतो॥3॥

चौ.—हीरानंद शिष्य थो वोंरो, भगती भीनो मन दोनों रो।
सुजोंणदेसर में मंदर थो, नेड़ो हीरानंद रो घर थो।
हीरानंद ध्योन नित धरतो, दोनूं टैम आरती करतो।
कर आरती भगत संज्यारी, आम्बासर जांवण री त्यारी।
पोंच उठै सत संगत करतो, रैय रात, झोंझरकै टुरतो।
तड़कै वो सुजोंणदेसर में, आय, आरती कर मंदर में।
दिन रा रै सुजोंणदेसर में, रात बितावै आम्बासर में।
रंवै रातों वो भगती में, बाबै रो नैचो थो जी में।

दोहा—दियो गोंव वालों नही, गुरु-गायो नै नीर।
अन-जल छोड्यो गुरु, कयो तजसूं इयों शरीर॥4॥
मालम हीरानंद नै, पड़ी पोंचियो जाय।
गुरु सिरीसो पण लियो, अन जल वो नंहि खाय॥5॥

चौ.—दोनूं भगतौ जब दुख पाया, यायौ प्रगट सौमनै आंया।
सतरै सै चौवत्तर संवत, दे दरशण, बाबै राखी पत।
झाल्या वौ दोनों चरणों नै, बाबै हुकम दियौ झट वौनै।
खोदौ खाडौ, ठौड़ बताई, खोद्यौ, जल री धारा आई।
भगत खुशी था गायौ पावै, पौणी री छेड़ौ नहिं आवै।
निवियौ गौव, देखियौ परचौ, पौणी बौनै मिल्यौ निखरचौ।
खाडौ नीचौ हुयग्यौ तर-तर, बणियौ कूवौ वै जागा पर।
कुवै दे पौणी घर-घर में, आज तलक है आम्बासर में।
दोहा—बाबै रा दरसण हुया, हीरानँद हरखाय।
बचन-सिद्धि वैनै मिली, बाबै रा गुण गाय॥ 6॥
चौ.—सुजौणदेसर बीकोणै रै, बीच हुँतो खेजड़लो वैरै।
खेजड़लो बद्री भैरूंरौ, बजतौ, नौम उठै थौ पूरौ।
सूक खेजड़ौ, ठूंठ हुय गयौ, हरौ पतौ नहिं एक भी रयौ।
पौच्यौ हीरानँद वै जागा, तौना कुछ लोगों रा लागा।
याद भगत बाबै नै करियौ, सूकौ ठूंठ हुयगयौ हरियौ।
जणै समझ लोगों रै आई, हीरानँद री वचन सिधाई।
थाप पगलिया थौन बणांयौ, भगत उठै तपियौ, जस गायौ।
खुद बणाय वौ बौणयौ गावै, बाबै री मैमा फैलावै।
दोहा—शोभा हीरानंद री, फैल गई चौफेर।
बाबौ मैर करै, मिलै, मौन रती नहिं देर॥ 7॥
चौ.—जोरावरसिंह बीकौणै री, राजा बड़ौ भगत बाबै रौ।
थी बोलवा कियौड़ी वैरी, जात देवणीं रौणेचै री।
गुदरै टैम जाय नहिं सकियौ, पछतावै, चिन्त्या सूं थकियौ।
मन में कुछ ऐसौ डर वैनै, छोड सकै नहिं बीकौणै नै।
असमंजस में राजा पड़ियौ, सोचै, पण नहिं फिकर निवड़ियौ।
शोभा हीरानँद री जौणी, वैसूं सला करण री ठौणी।
गढ़ में वैनै तुरत बुलायौ, राजा खनै भगत तब आयौ।

राजा री चिन्त्या वे जोंणी, भगत बोलियो इमरत वाँणी।

दोहा-बावै गृं अरदास कर, पूछ बतामूं बात।
रौणेचं जायो बिना, कोंकर फलमी जात॥ 8॥

चौ.—हीरानंद पाछो घर आयो, बैठो, प्रभु रो घ्यौन लगायो
दूजे रे दुल दुनो दोसियो, भगत प्रभु नै ग्रायों सरियो
हुलस्यो हीरानंद दरसण कर, राजा रो प्रभु मेट दो फिकर
बायो कै हीरानंद जायर, राजा नै कंदे समभायर.
सुजोंणदेसर में वो ग्रावै, ग्रठै थौन में धोक लगवै।
जात रणेचै री फल जासी, सुजोंणदेसर मे जब ग्रासी।
जदे राजा नै नैवो ग्रासी, वैरी जात ग्रठै फल जासी।

दोहा-वात भगत री मौनकर, खुद सुपनै में जाय।
बावै राजा नै कही, सारी वात बताय॥9॥
सुपनै में दरसण किया, राजा जोंणी बात।
ग्रोंख खुलां वैरी, नहीं, मन में खुशी समात॥ 10॥

चौ.—वे बावै रो हुकम बजायो, सुजोंणदेसर राजा ग्रायो।
पूरी हुई बोलवा सारी, जात उठै फलगी राजा री।
सुजोंणदेसर रौणेचै में, बावै भेद न राख्यो वैं मे।
राजा दो हजार भगतौ नै, देग करी जोमाया वौनै।
छतर चढायो वै सोनै रो, मोल सवासो रुपिया वैरो।
जितो टैम रौंणेचै जायो, लगतो, उतो उठै बीतायो।
उतो खरच वे कियो उठेई, जात फली, वैरी पत रैई।
रौणैचै जो जाय न पावै, सुजोंणदेसर में वो ध्यावै।

दोहा-राजा बीकानेर रै, गजसिंह दियो बणाय।
सुजोंणदेसर में वड़ो, मदर शोभा पाय॥ 11॥
मंदर ने सुन्दर कियो, गगासिंह महाराज।
है विशाल, मेलो लगै, माघ-भादवै ग्राज॥ 12॥

सोरठा-भगत देवसी एक, हीरानँद रै सुत हुयो।
बौणी रची ग्रनेक, गावै हरखावै भगत॥ 13॥
भगतौ रा प्रतिपाल, हीरानँद नै तारियो।
मैणादे रा लाल, बूलै रो हेलो सुणो॥ 14॥

ॐ

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

इक्कीसवां चरण

बगसै खाती नै परचौ

छंद— उमा-सुग्रन-पद कर वंदन, शारदा मनाऊं ।
ध्यान धरूं गुरु-पद, वरदान ज्ञान रो पाऊं ॥
धजाबंद-धारी नै सिवरुं, मैमा गाऊं ।
बगसै खाती नै प्रभु परचौ दियो बताऊं ॥ 1 ॥

दोहा— पैल परीक्षा भगत री लेवै कृपा निधौन ।
पावै भक्ति अनन्य जब, दे परचौ भगवौन ॥ 2 ॥

चौ.— भगत भरोसै प्रभु रै रैवै, सब दुख विपदा हँसता सैवै ।
प्रभु रै नैचै जे हठ धारै, हेलो करते आप पधारै ।
करुण टेर कर भगत बुलावै, लीलूड़ै चढ़ बाबौ आवै ।
करै अनन्य भक्ति बावै री, योग-क्षेम री चिन्त्या वैरी ।
रैवै प्रभु करुणा निधान नै, थिर राखै भक्त रै मान नै ।
वचन, काय, मन प्रभु नै ध्यावै, वै रै दुख नैड़ा नहिं आवै ।
नैचौ जे न भगत रौ टूटै, तौ बावै रौ धीरज छूटै ।
एकै हेलै बाबौ आवै, दे परचौ भक्त नै बचावै ।

दोहा— भगती में बाधा पड़ै, भगतौं रौ दुख एक ।
दे परचौ बाधा हरै, राख भगत री टेक ॥ 3 ॥

चौ.— बगसौ खाती निरधन गैरौ, सच्चौ भगत हुँतौ बावै रौ ।
नहीं गरीबी सूं दुख वैनै, आठ पौर भजतौ बावै नै ।
पाट पुराय, कलश वौ थापै, सत संगत करतौ नहिं धापै ।
इकतारै पर वीणी गावै, भगत मोकला सुणनै आवै ।
जागण जिठै हुँतौ बावै रौ, उठै पौंचणौ निश्चै वैरौ ।

इक दिन खुद रै घर में करियो, जम्मो, घर भगतों सूं भरियो।
पाट पुराय, कलश थरपायो, जोत जगाई, मन हरखायो।
हाथ लियो बगसै इकतारो, कैयो अब आरती उतारो।

दोहा—बेटो बारै बरस रो, बगसै रो तत्काल ।
स्वर्ग सिधायो, हुय गया, म्हातण रा बेहाल ।। 4 ।।

चौ.— बगसै रो मन लीन भजन मे, बात दूसरी एक न मन में।
घर में मचियो कूका-रोलो, भगत समझियो बात न भोलो।
खातण खनै रोवती आई, बगसै नै वै बात बताई।
पति तूं मनै रोज समझावै, जम्मे में बाबो खुद आवै।
आज जमो है घर 'में थारै, बाबो थारो क्यों न पधारै।
हुवै जमो, मरियो सुत म्हारो, किठै गयो अब बाबो थारो।
मालक थारो किठै निसरग्यो, भगतो भूलो, तनै बिसरग्यो।
थे कैवो वै मु.आ जिवावै, उल्टो थारो सुत मर जावै।

दोहा—मनै जमो फलियो नही, मरग्यो म्हारो पूत ।
मालक थारो है किठै, करमों री करतूत ।। 5 ।।

चौ.— बगसो कै सुण भोली खातण, हुई बावली तूं किण कारण।
रामदेव री नैचो म्हारै, दुख भगतों रा तुरत निवारै।
स्वारथियै नै नाथ जिवायो, माता रो दुख सैय न पायो।
अमरसिंह नै जीवण दीनो, सुगनो रो सकट हर लीनो।
निश्चै सुणसी हेलो म्हारो, धरती पर धरियो इकतारो।
जे नहि बजवासी इकतारो, जमो अधूरो रैसी थारो।
अन-जल त्याग भगत मरजासी, थोरी मरजादा मिट जासी।
भाभी-गाय बड़ो दुख पायो, आया, वछड़ो आप जिवायो।

दोहा—पड़सी अब कै राखणो, म्हारी पत भगवान ।
बिरद सँभालो दो, प्रभू, सुत नै जीवण दान ।। 6 ।।

चौ.— सतसंगी सारा दुख पावै, खातण कलपै, लखी न जावै।
रुदन सुणयो, बस्ती रा सारा, आया, लोक दुखी बेचारा।
बगसो चुप बावै नै ध्यावै, आँख्यों में आँसू नहि आवै।
खातण रोवै, तौना देवै, बगसो ध्योन-मगन नहि वेवै।
बावै री फोटू थी सोमैं, लीन भगत री मन थी वी में।
थो अटूट नैचो बगसे री, हेलो सुणनो पड़ियों वैरो।
खोली आँख, हुयो सुत वैठो, देख, हुयो सबनै सुख सेंठो।
उठ बेटै, कैयो बगसै नै, बापू म्हैं देख्या बावै नै।

दोहा—बाँध पाश में लेयग्या, पैल मनै जम-दुत।
नरग दिखायो, था उठै, सजा पांवता भूत ॥7॥

चौ.— बधियोड़ा ताते खंभों सूं, जीव डंड पावै पापों सूं।
राध-खून री नदियों वैवै, पापो डूब, जातना सैवै।
तन सस्तर सूं वौंरा काटै, रोवै तो गण वौंनै डाटै।
मन्दर आंयो धरमराज री, लेखो सबरै कौम-काज री।
रैवै, लेखो मनै बतायो, परालबध म्हारो समझायो।
दूत तुरत बावै रो आयो, वौं सारों सूं मनै छुड़ायो।
राम-धाम वौं साथै आयो, बावै री दरबार दिखायो।
बावै हुकम दियो ले जावो, खाती नै दरगा पौंचावो।

दोहा—दरगा में दरसण किया, बावै रा म्हैं जाय।
फेर दियो दूतों मनै, घर में झट पौंचाय ॥8॥
देखो ऊभा सामनै, बाबो थौंरै आय।
बापू थे दरसण करो, जनम सफल हुय जाय ॥9॥

चौ.— बगसो सुख-दुख भूल्यो सारो, हाथ लियो पाछो इकतारो।
करो आरती सबनै कैयो, बेसुध, भजन गांवतो रेयो।
हुवै आरती सब सुख पावै, बगसो मस्त आरती गावै।
छूटी बगसे री मो-माया, बाबो प्रगट सौमनै आया।

बगसो देख पद थी-चरणां में, आ विपदा क्यां आई म्हांरे।
कसर पड़ी भगती में म्हारी, आई विपदा नाथ निवारो।
देवी निरमल भगती रो फुर, आद कृष्ण थोने तैतलवर।
सेवूं चरण कमल नित थोरा, कटजावे बंधन करमां रा।

दोहा—भगती रो वर दे दियो, निरभय दीनानाथ।
गाय रयो बगसो भजन, ले इकतारो हाथ ॥10॥
बगसे ने परचो दियो, दोनों सुत जीवाय।
भक्त रो हेलो सुणो, रोणेचे रा राय ॥11॥

॥ श्री रामदेवाय नमः ॥

श्री रामदेव-चरित-मानस

बाईसवां चरण

सिरोही रे राजा सूरे देवड़े नै परचा

छंद— ध्याऊं अपर्णा-तनय, सिवरूं गिरा, गुरु-पद सिर धरूं।
उर धार दीनानाथ-पद, परचा रसू लिखबो करूं ॥
यो तुर्क शाहंशाह दिल्ली रो भगत नै दुख दियो।
परचा दिया, निविया, भगत नै छोड़, खुद जम्मो कियो ॥ 1 ॥

दोहा— राजा सारस देवड़ो, हुतो सिरोही भूप।
वैरे सूरो देवड़ो, बेटो हुयो अनूप ॥ 2 ॥
भजियो सूरे देवड़े, बाबे नै चित लाय।
कष्ट पड़्यो, परचा दिया, विपदा काटी आय ॥ 3 ॥

चौ.— सारस नाम, देवड़ो जाती, भूप सिरोही रो, थी ख्याती।
सभी तरह सूं जीवण सुख रो, एक बड़ो कारण थो दुख रो।
सारस राजा सुत नहिं पायो, मन में थो भारी दुख छायो।
थान पुजिया, देव मनाया, जप-तप, जिग कर विप्र जिमाया।
किया उपाव तंत्र-जंत्रां रा, विफल प्रभाव हुया मंत्रां रा।
अचाचूंक इक साधू आयो, वैं नै मन रो कष्ट सुणायो।
साधू नै सुण, करुणा आई, राजा नै तरकीब बताई।
कैयो जे हरि किरपा करसो, गोदी थारी सुत सूं भरसो।

दोहा— सेवो बंबी नाग री, निश्चै मिलसी पूत।
दे शिक्षा पाछो गयो, वो साधू अवधूत ॥ 4 ॥

चौ.— सिरदारां नै भूप बुलाया, साधू रा उपदेश सुणाया।
खोजो बंबी जायर सारा, पूजूं मनोरथ पूरूं म्हारा।
चाकर एक भूप नै कैयो, बंबी सदा देखतो रैयो।
रोज संभालू जाय बाग नै, देखूं बंबी खनै नाग नै।
निश्चै नाग चमत्कारी है, फण विशाल, लंबो, भारी है।

जल्दी भूप निगै करवाई, बंबी उठै नाग री पाई।
राजा रो मन सुख सूं भरियो, बंबी पूजण रो पण करियो।
जमी उठै री साफ कराई, बालू रेत उठै बिछवाई।

दोहा—बंबी रै मूंडै खनै, कूंडो दियो रखाय।
सांझ सवेरै दूध सूं, दे वैनै भरवाय ॥ 5 ॥

चौ— नाग आप नहिं आयो बायर, छव महिनों वे छोड़ यो नहिं घर।
बाल संपोला चेला वैरा, था सोखीन बार फिरनै रा।
आया बार नाग छोटकिया, बालू-कूंडो उठै दीसिया।
बाल संपोला सुख सूं हेरै, नेड़ा पोंच गया कूंडै रै।
दूध पियो, लुटिया रेतो में, खुशी भर गई वोरै जी में।
रोज संपोला सांझ दिनूगै, बंबी बार खुशी सूं पूगै।
इयों मास छव खेल्या किलक्या, मोटा हुयग्या चैरा चिलक्या।
बासक नाग देखिया वोनै कारण वे पूछ्यो चेलों नै।

दोहा—चेला बोल्या नाग रा, बंबी पूजे भूप।
दूध पियो छव मास म्हों, चिलक्यों जणै सरूप ॥ 6 ॥
लुटिया बालू रेत में, मोटा हुयग्या डील।
छव महिनों सेवा करी, राजा करी न ढील ॥ 7 ॥

चौ.— बासक नाग सुणी सब कोणी, बंबी क्यों पूजे नहिं जोणी।
राजा म्हारी बंबी पूजे, बदलै में क्या दूं नहिं सूजे।
चेलों नै दी सीख बतायर, पूछो थे राजा नै जायर।
क्यों बंबी पूजे, क्या चावै, जे दुख वैनै हुवै, बतावै।
बार सरप आया, पण टोवै, कूंडै रो न दूध वे पीवै।
घड़ी पलक में राजा आयो, कूंडो भरियो लख चकरायो।
राजा मन में बात बिचारी, हुई आज गलती क्या म्हारी।
देख उठै बैठा सांपों नै, राजा दुख सूं पूछ्यो वोनै।

दोहा—आज कई गलती हुई, दूध पियो नहिं आप।
क्या मिलसी बरदीन री, लागो मनै सराप ॥ 8 ॥
कैयो सब सलपोटियों, थोंरी गलती नांय।
असली कारण आप नै, देवों म्हें समझाय ॥ 9 ॥

चौ.— बंबी में रै गुरुजी म्हौंरा, समाचार वौं जोंण्या थौंरा।
वै पूछे है क्या दुख थौंनै, कारण तुरत वतावौ म्हौंनै।
बंबी पूज करी थौं सेवा, मिलसी थौंनै वैरा मेवा।
पूजण री कारण बतलावौ, क्या दुख थौंनै, क्या थे चावौ।
पौसौ दूध वतायौं कारण, करवासौं म्हे कष्ट निवारण।
पूंजूं बंबी बेटौ चाऊं, थौंनै मन री वात बताऊं।
सुणी वात सरपौं राजा री, मन री इच्छया जौणी सारी।
दूध पियौ बंबी में वडिया, जाय गुरु रा चरण पकड़िया।
दोहा—वासक नै चेलौं कयौ, दी कौमना वताय।
राजा रैं बेटौ नहीं, पुत्र आप सूं चाय ॥ 10 ॥
सच्चै मन सेवा करी, निष्फल कदे न जाय।
वासक बोल्यौ, हरि खनै पूछू जाय उपाय ॥ 11 ॥
चौ.— वासक विष्णु लोक में आयौ, हरि नै नृप रो कष्ट वतायौ।
की अरदास पुत्र दी वैनै, मिलै लाभ सेवा करतै नैं।
दे सतोन कौम ब्रह्मा री, जाय मनोरथ नृप रो सारी।
हरि री इज्ञा लेय सिधायौ, वासक ब्रह्मलोक में आयौ।
ब्रह्मा हाल सुण्यौ जब सारो, परालबध देख्यौ राजा रो।
संतति रो न जोग राजा रै. सुत देवणौ न म्हारै सारै।
आस छोड़ वो पाछौ आयौ, वासक रै मन फिकर समायौ।
वासक बोल्यौ चेलकियौं सूं, कौम वण सकं केवल थौंसूं।
दोहा बंबो पूजो देवड़ै, कर म्हारो विसवास।
चेलो कोई भेज सूं, कर सूं पूरी आस ॥ 12 ॥
पुण्य पुरवलै जनम रा, देख छौंटियौ एक।
चेलो वासक भेजियौ, राखण नृप री टेक ॥ 13 ॥
चौ.— वासक चेलौं नै समझाया. वै बंबी सूं बायर आया।
देख सँपोलौं नै हरखायौ, राजा खनै दौड़तो आयौ।
कयौ नाग रै चेलो वैनै, मन-चिन्त्या, आशा करतै नैं।
फली आश पूजा बंबी री, करो वंद सेवा बंबी री।
पूत प्रतापी थौंरै आसी. हुसी भगत. कुल नै दीपासी।

दूध पियो, वंबो में घुसिया, तन-मन नृप रा खूब हुलसिया।
मन प्रसन्न, राजा घर आयो, रौंणी नै सब हाल सुणायो।
गरभ हुयो, राजा सुख पायो, वखत कूख खुलणं रो आयो।

दोहा – राजा रै धेनड़ हुयो, हरखै सारो मेर।
पूरी करदी कामना, थी वासक री मेर ॥ 14 ॥

चौ — चन्द्रकला ज्यों वढ़ियो तरतर, भर्‌यो हरख सूं राजा रो घर।
लगन, घड़ी-पल गणकों लखियो, नाम देवड़ो सूरो रखियो।
सुन्दर त्यागतवर तन वैरो, शील निधान चिलकतो चैरो।
असवारी ऊंठों-घोड़ों री, सीखो, ली सिख्या शस्त्रों री।
दसूं दिशाओं में जस छायो, सारी परजा कँवर सरायो।
एक दिवस ऊंठों रै माथै, सूरो टूरियो मित्रों साथै।
गाँव खनै देखे धोरों नै, रमता वे देख्या छोरों नै।
घर-घोलिया रेत रा छोरा, था वणावंता, मन में सोरा।

दोहा—छोरों किया घरोलिया, मंदर बीच वणाय।
सूरो वानै दीसियो, लुकिया डरता जाय ॥ 15 ॥

चौ.— मित्रों साथै सूरो आयो, मंदर ऊपर ऊंठ चलायो।
देख्यो छोरों मंदर पड़ियो, वांरै मन में क्रोध उमड़ियो।
तोड़ दियो मंदर बावै रो, डंड इयै नै मिलसी वैरो।
बालक बोल्या, औ डंड पावै, ऊंठ इयै रो झट मरजावै।
सुणियो सूरै, तुरत उतरियो, वै पलाण नै नीचै धरियो।
मरग्यो ऊंठ, पसर रेती में, रोस उठो सूरै रै जी में।
छोरों नै वै तुरत बुलाया, डरता बालक नैड़ा आया।
थांरै कैणै सूं औ मरियो, पाछो जे नहिं जीवित करियो।

दोहा—थांरै कैणै सूं मर्‌यो, ऊंठ, सुण्यो म्हैं कान।
या तो तुरत जिवाय दो, नहिं तो लेसूं ज्यान ॥ 16 ॥
डरता छोरा बोलिया, बाबा सुणो पुकार।
जे न जिवायो ऊंठ थाँ, म्हानै देसी मार ॥ 17 ॥

चौ.— तुरत जोयग्यो हुयग्यो बेठो, हरख हुयो सूरे नै सेंठो।
मरम न जोंण्यों सूरे वीरो, चमत्कार देख्यो छोरों रो।
भेद पूछियो वै छोरों नै, वै कंवै नहि मालम म्हौंनै।
मंदर थौ तोड़यो बावै रो, चमत्कार श्रो सिगलो वैरो।
बाबो कूण, पूछियो सूरे, एकूकै खोंनी वै घूरे।
पूछो म्हांरे मा-बापों नै, बावो कूण बतासी थौंने।
सूरो छोरों साथ सिधायो, मा-बापों रे पासे आयो।
वो थौ गौंव मेघवालों रो, बावै रै सच्चे भगतौं रो।

दोहा— बाबो म्हौंरो रौमदे, बोल्या भगत गँवार।
पच्छम घर में परगट्या, अजमल घर अवतार ॥ 18 ॥

चौ.— असर पड़यो सूरे पर भारी, वै बावै रो भगती घारी।
सूरे कयो सिरोही रो हूं, राजा थौंनै इज्ञा देऊं।
छोरों दूर बणायो मंदर, बिखरयो ऊंठ चल्यो वै ऊपर।
बावै परचो तुरत दिखायो, वै कारण हूं पूछण आयो।
लेवो रुपिया जिता जरूरी, इंछ्या म्हारी करदो पूरी।
मंदर सागो ठौड़ बणावो, वण जावै जद मनै बुलावो।
धन री कमी पड़ै मँगवाया, मंदर पण पूरो करवाया।
प्रतमा थाप, जमो करवासूं, जीवण भर बावै नै ध्यासूं।

दोहा— दे धन सूरो चालियो, कह्यो सिरोही आय।
जम्मो मनै करावणो, जव मंदर बण जाय ॥ 19 ॥

चौ.— मंदर वो बणाय कैवायो, सूरो साधन लेय सिधायो।
हरखायो सूरो झट आयो, मंदर में जम्मो करवायो।
रयो ध्यांवतो वौ बावै नै, मन में सच्ची नैचो वैनै।
लोग सिरोही रा से ध्यावै, सालो-साल रुणेचै जावै।
तुरक बादशा दिल्ली रो थो, खरणो सद्य कवी वैरो थो।
खुश हुय बुलावतो खरणै नै, कविता कैणो पड़ती वैनै।
कवि खरणो थो डूम जात रो, पण विचार नहि इयै वात रो।
गुणी देख बादशा रीझियो, दे धन कवि नै सोरो करियो।

दोहा—बादशाह खुश एक दिन, खरणें ने बुलवाय ।
सुणिया दूश्रा तीन सो, साठ तुरत बणवाय ।। 20 ।।
खुशी बौत हुय बादशा, कैयो खरणा मोग ।
सुण खरणें री मोंग वौं, चकरायो क्या सोंग ।। 21 ।।
देवो मैंमद मौलियो, सिरो पाव दो साथ ।
पोंचू देवो कापड़ा, पोंचू सस्तर हाथ ।। 22 ।।

चौ.— कयो बादशा सोच न कैवें, जात डूम ऐ चीज्यों लेवें ।
अन, धन, घर, घोड़ी जे चावें, ओर्वें, देऊं सैन सरावें ।
खरणें कैयो लेमूं ऐ ई चीज्यों, देवो मती भलेंई ।
सुणो कडौण, बादशा कैयो किसे गुमर में ढ़ाढी रेंयो ।
जो चीज्यों थें मोगो म्हें सूं, लाय बतासी जदी किठे सूं ।
तो बादरी जोण सूं थारी, वरना डींग फालतू सारी ।
खरणै कैयो लाय बतासूं, मिलियों चीज्यों, दिल्ली आसूं ।
आ कै खरणो घरे सिधायो, दिल्ली छोड़, सिरोही आयो ।

दोहा—दौंतण सूरो देवड़ो करतो वैठो बार ।
खरणो, पोंचयो सोमनै, निजियो, करी पुकार ।। 23 ।
कदरदोन गुण रा सुण्या, आयो मन में धार ।
अड़ो तुर्क सूं कर तज्यो म्हे दिल्लो दरबार ।। 24 ।।
खरणें तुरत बणाय कर, दूश्रा दिया सुणाय ।
हरखायो सूरो, कह्यो, मोग जिको मन चाय ।। 25 ।।

चो — खरणें रो डर सूं मन डोले, खड़ो रयो चुपको, नहिं बोलें ।
गुम-सुम देख, देवड़ कैयो, खरणा क्यों तूं चुपको रेंयो ।
क्या संको मोंगें क्यों नहिं तूं, चीज हुयों, न नटूं, निश्चै दूं ।
मनरी क्यों नहिं बात बतावें, क्यों गुम-सुम, क्यों संको लावें ।
आप कहो ज्यों बादशा कयो, तुरक मोंग सुण तुरत नट गयो ।
ये कारण म्हें शंका धारो, सुणसो मोंग आप जब म्हारो ।
देखो या थे भी नट जासो, नटियों उल्टो पड़सो पासो ।
कयो बादशा लाय बतायें, सागी चीज्यों, मनें दिखायें ।

दोहा— वैरे बोलों सूं तजो, दिल्ली म्हें सरकार ।
आयो आशागीर सुण, सूरो है दिलदार ।। 26 ।।
सागी चीज्यों लेयकर, पाछो दिल्ली जाय ।
दिखलाऊं जे तुरक नै, दूं अभमोन मिटाय ।। 27 ।।

चौ— फेर देखसीं सूरे कैयो, कुछ दिन डूम सिरोही रैयो ।
याद टाबरों री संताई, घर जावण री मन में आई ।
जाय विदा मोंगी सूरे सूं, चीज्यों सागी लेणी वैसूं ।
सूरे कयो मोंग क्या चावै, भौंय संकतो, डूम बतावै ।
दो मैंमद मोळियो शीस रो, सिरोपाव देणो न बीस रो ।
कपड़ा थे पौंचू पैरावो, पौंचू सस्तर हाथ दिरावो ।
सूरे कयो बात मोमूली, फेर मोंगले जे कोई भूली ।
एक अड़ौंस इयें में आसी, वैनें तूं कौकर निमटासी ।

दोहा— तुरक खनै तूं जायसी, करसी जाय सलोम ।
तूं निवतै साथै निवै, चीज्यों बणै न कोम ।। 28 ।।

चौ.— निवै कापड़ा सस्तर म्हारा, रामदेव रै आगे सारा ।
निवै न और कोई रै आगै, निवै जावै तो बट्टो लाग ।
तूं तो बादशाह सूं डरसी, नांक-निवण वै आगै करसी ।
निवसी तूं ऐ चीज्यों पैरर, देऊं ऐ चीज्यों हूं कौकर ।
छोड़ो फिकर बोलियो चारणो, मनें सलोम क्यों है करणो ।
खोल राख सूं चीज्यों सारी, काया पछै निवैली म्हारी ।
चीज्यों सैन तुरक रै आगै, निवसी नहीं, न बट्टो लागै ।
तुरक जबरदस्ती जे करसी, बाबो निश्चै बाधा हरसी ।

दोहा— थोरे म्हारे बीच में, साखो बाबो आप ।
हूं बावे री आण लूं, पलट्यों मिले सराप ।। 29 ।।
गाभा, मैंमद, मोळियो, सिरोपाव पैराय ।
दे सस्तर, हाथी दियो, खरणो दिल्ली जाय ।। 30 ।।

चौ— यों विसवास तुरक नै वेसी, कूण डूम नै चीज्यों देसी ।
निगै रखो कयो फौज्यों नै, डूम आंवतो दीसै थोंनै ।

म्राय जिके दरवाजे खरणो, मनें सचेत पेल है करणो।
म्रास न सागी जिनस्यों लासी, देखूं बात कितीक निभासी।
सारें दरवाजों पर डरता, चौकस वे निगरोणी करता।
दिखणादे दरवाजे बायर, दीख्यो डूम खबर दी जायर।
हाथी चढ़ियो खरणो म्रावें, सुद हाथी चढ़ सोमो जावें।
खरणे रें हाथी पग धरियो, दरवाजे में तुरक टकरियो।

दोहा— देख लियो थो दूर सूं, डूम, बादशा म्राय।
वस्तर, सस्तर धर दिया, हवदें मोय सजाय ॥ 31 ॥
सोमें मिलते उतरियो, खरणो नोचें म्राय।
डील उगाड़े सूं कियो, घें सलोम सिर माय ॥ 32 ॥

चौ. बादशाह हँस सोनो दोनो, किठे कडोए गई, क्या कीनो।
केंई जिवयों न जिनस्यों लायो, कपड़ों बिना उगाड़ों म्रायो।
लायो तो वें चीज्यों सारी, पेर न सकूं इसी लाचारी।
कर सलोम निवणो थों म्रागें, वे चीज्यों न निव सकें सागें।
खोली वें धरदी हवदें में, देखो म्राप पड़ी है वें में।
जदी निवाऊं थोरें म्रागें, वें चीज्यों ने बट्टो लागें।
केवळ निवें, रामशा सोमें, मरजादा ऐसी है वों में।
भूप देवड़े सूरें दीनो, इयें शरत सूं, जद म्हें लीनो।

दोहा— बावें रो सच्चो भगत, म्रा वेंरी मरजाद।
राज सिरोही में करें, है सूरो म्राजाद ॥ 33 ॥

चौ.— बात डूम री तुरक सुणी जब, मन में क्रोध जोर मार्‌यो तब।
हवदें सूं सब चीज्यों लावो, पेरावो, डूम नें निवावो।
देखूं चीज्यों निवे न कोकर, सुणते तुरत दौड़िया नौकर।
हवदें सूं सब चीज्यों म्राई, खरणे नें सारी पेराई।
कयो झुक म्रब म्रागें म्हारें, निवसी चीज्यों सागें थारें।
माथें पर जो चीज्यों धारी, उड़गी वें म्रकास में सारी।
हाफें कपड़ा फाट उतरिया, शस्त्रों सागें म्रागा गिरिया।
निवियों डूम उगाड़ो हुयकर, तुरक समझ नहिं सकियो चक्कर।

दोहा— चौज्यों हुई अलोप भट, तुर्क न सक्यो मंगाय।
पारो माथै रो, तुरक. रो अकास चढ़ जाय ।। 34 ।।
बादशाह के डूम सूण, देसूं तनै बताय।
कपड़ो सूधो देवड़ो, सूरो फूकसी आय ।। 35 ।।

चौ.— बीड़ो नागर बेल पौन रो, बणवायो बढ़िया समोन रो।
बादशाह बीड़ो फिरवायो, जोधों में ऐलोन करायो।
है होमत सूरै नै लावै, कोई बीड़ो लेय चबावै।
बादशाह रा जोधा जो था, नहीं अकल रा था वै मोथा।
कपड़ों रो परचो वौ परतक, देख्यो थो ओंख्यों सूं अपलक।
डरै, न सूरो तावै आसी, बीड़ो चावणियो पछतासी।
वैरै साथै सगती जबरी, जोंणी, हीमत हारी सबरी।
कोई वीर न आगै आयो, देख किरोध तुरक रै छायो।

दोहा— ओंख्यों हुयग्यो लाल वै, देख्या सबनै घूर।
सै डरिया, सै सिरकिया, बादशाह सूं दूर । 36 ।।
साळो शाहशाह रो, बाबलखान पठान।
पोपायो, हीमत करी, आय चबायो पान ।। 37 ।।

चौ— बादशाह रौ मन हरखायो, बावल खां नै गळै लगायो।
शस्तर, फौज्यों जितरो चावै, बावल खां साथै ले जावै।
पकड़ जीवतो लावै वैनै हाजर अठै करै सूरै नै।
लाखूं फौज्यों, पूरा सस्तर, बड़ो तोपखोनो भी लेकर।
कर सलोम बावल खां टुरियो तुरत सिरोही पौंचण भुरि
थो विसवास, न कोम कठिन थो, अबस सिकंदर वैरो दि
वैरी फौज्यों तुरत हरासूं, पकड़ देवड़ै नै ले आसूं।

दोहा— पासूं शाहंशाह सूं, जद मोकळो इनोम।
पद ऊंचो दरबार में, मिलसी करियों कोम ।। 38 ।।

चौ.— पौंच सिरोही डाल्यो डेरो, चौतरफो लगाय कर घेरो।
घेर सिरोही च्यारूं पासी, चौतरफी तोप्यों थी खासी
हुकम तोपच्यों नै फरमाया, गोळा वौ चौतरफा चलाय

तोप्यों सूं तौ गोळा छूटै, भुरजों बायर पड़ै न फूटै।
च्यारूं पासी, भुरजो आगै, साबत गोळों रा ढिग लागै।
जिता सैर रा भुरज कंगूरा, हुया न खोंडा, सावत पूरा।
तीन रात दिन गोळा छूटा, गोळा सिगळा वैरा खूटा।
परजा देखै समझ न आवै, बार नगर सूं जाय न पावै।

सोरठा -सूरो घरियों ध्यान, बैठो मैल निसंक थो।
भगती रै परवान, बाबै ने वैरी फिकर ॥ 39 ॥

चौ.— मैलों में तब परजा आई, राजा नै हालत समझाई।
तीन दिनों सूं छूटै गोळा, हुवै सैर रै बायर रोळा।
भुरज कंगूरा, साबत थौंरा, बायर ढिग लागै गोळों रा।
कष्ट रती न सैर-परजा नैं, अड़बी पड़ी बार जाबानै।
बणो समस्या आप सुधारो, लो मोरचो, दुष्ट नैं मारो।
जाय घूमियो वो भुरजाँ पर, पड़्यो फौज रो घेरो बायर।
बाबै नैं यो तुरत पुकारै, धोती रो पल्लो फटकारै।

दोहा— साबत गोळा जो पड़्या, हाफै उल्टा छूट।
तुरकों री फौज्यौं जिठै, वौं पर पड़िया फूट ॥ 40 ॥
बाबल खां री फौज पर, हुय गोळौं री मार।
हाफै फौज खतम हुई, बाबल खां लाचार ॥ 41 ॥

चौ — देख मौत बाबल खां भागो, काफी दूर पौंचियो आगो।
ओली ठोड़ देख कर झुकियो, बूंठों लारै, बैठो लुकियो।
घुड़सवार दीसियो आवतो, कौंकर भागै किठै जावतो।
लीलै चढ़िया, बाबो आया; बाबल खां नै बार बुलाया।
बाबल खां घबरायो धूजै, करूं कई वैनै नहि सूजै।
क्यों न लड़ै तूं, क्यों नहि झूंजै, पीपळ रै पत्तै ज्यों धूजै।
कर सूं थारो हुलियो आछो, कर कुरूप, लौटासूं पाछो।

दोहा— सूरत थारो देखसो, हुसी तुर्क बेहाल।
देसी खूब इनाम वो, तनै बगस सी माल ॥ 42 ॥

चौ.— एक तरफ री पटी काटियो, मुख काळे रंग सूं पाटियो।
डाढ़ी मूंछ एक पासे री, दी मुंडवाय सफाचट वैरी।
माथो वैरो सो मुंडवायर, जूतो वंधवायो वै ऊपर।
पोट रेत री एक भराई, वैरे माथै पर वँधवाई।
चाबक दो मार्‌या शरीर पर, टोर्‌यो आ चेतावण देयर।
सोधो जा दिल्ली मत ठैरे, राखे ऐ सब चीज्यों पैरे।
बादशाह रे सौमे जाए, सागी ऐ सब हाल बताए।
जे कुचाल मारग में करसी, तो निश्चै वे आई मरसी।

दोहा— लारो करसूं ठेठ हूं, सकसी नहीं लुकाय।
जूतो पोट उतारते, मारूंला तड़फाय ॥ 43 ॥

चौ— बदमूरत, वे हाल सिधायो, सागी हालत डरतो आयो।
टैम मोकळो गई न आयो, बादशाह रे फिकर समायो।
बावल खां रे मन में थो डर, दिल्ली पौंच गयो सीधो घर।
हाल सुधारण री तो धारे, घुड़सवार जे आवै लारे।
डरे न जूतो पोट उतारे, घोड़े वाळो आय न मारे।
तुरक उडीकै बड़ी आस में, खरणो बैठो हुतो पास में।
फिकर तुरक रै मन में सैंठी, खरणो के, पठोण घर बैठो।
सुणियो तुरत भेज खरणे नै, कैयो लाव बुलायर नै।

दोहा— बावल खां रै घर गयो, खरणो मन मुसकाय।
बादशाह रो हुक्म वे, दीनो जाय सुणाय ॥ 44 ॥
बायर जाय परोर तूं, खरणा ध्यान लगाय।
घोड़े वाळो मूरखो, आवै तो बतळाय ॥ 45 ॥

चौ.— घोड़े वाळो तो नहिं आयो, डर पठोण रे मन में छायो।
जूते-पोट समेत सिधायो, बादशाह रे सौमे आयो।
तुर्क हाल देख्या चकरायो, बावल खां सब हाल सुणायो।
आग बबूलो तुर्क हुय गयो, बावल खां नै तुरत वै कयो।
फौज चौगणी जा तूं लेयर, सूरे नै हाजर कर लायर।
अब के जदी हार कर आसी, घोर सजा बावल खां पासी।

खरेरोई वात मुगो हँस कंयो, गुमर फौज रो अब भी रैयो।
बेगुनाह फौजी मरवासो, सूरे नै हराय नहिं पासो।

दोहा— जोर-जवर करियों नहीं, सूरो दिल्ली आय।
सोरी इक तरकीब है, लो वैने बुलवाय ॥ 46 ॥
आखा लै असवार इक, जावै सूरै पास।
जम्मे में आवो, कह्यो, है आवण री आस ॥ 47 ॥

चौ— वादशाह रो माथो ठण्डो, हुयो समभियो वो हथकंडो।
चाल पसंद तुरक रै आई, त्यागत सूं आछी चतुराई।
दे आखा असवार पठायो, सूरै पास सिरोही आयो।
आखा दे नैत्यो सूरै नै, है आवणो जमें में वैनै।
बावे रै जम्मे रो नैतो, पाप हुवै इन्कार करै तो।
घात कर सकै वैरो वैगो, पण सवाल प्रभु रै जम्मे रो।
आखो रो न अनादर करनो, चावे पड़ जावे जे मरनो।
आखा ले सूरै कं दीनो, दिल्ली पोचण रो पण कीनो।

दोहा— माता नै मालम पड़ी, सूरो दिल्ली जाय।
हूया अपशकुन मोकळा, वैरो मन घबराय ॥ 48 ॥
मा बुलाय करियो मना, तुरक दोगली जात।
तनै दिल्ली नहिं जावणो, है धोखे री बात ॥ 49 ॥

सोरठा- भेजी फौज्यों काल, आज भलो कीकर हुयो।
आखो री है चाल, धोखे सूं वो मारसी ॥ 50 ॥

चौ.— तूं साचो है सूरै कंयो, हूँ बावै रै नंचे रैयो।
फौज्यों, तोप्यो कई बिगाड़्यो, बावल खा नै नाथ पछाड़्यो।
तोई तनै न नैचो आवे, जोण वूझ कर भी घबरावे।
रामदेव बावै रो शरणो, फेर मनै वैसूं क्या डरणो।
वो तिरलोकी रो है मालक, बावो भगतों रो प्रतिपालक।
हाथ भालियो म्हारो बावै, हूँ न तुरक रै आऊं तावै।
चावै वो त्यागत अजमावै, घात करै, धोखो करजावै।
म्हारो कुछ बिगाड़ नहिं पासी, जे धोखो करसी पछतासी।

दोहा— जग्मे रा आखा दिया, म्हैं करिया मंजूर।
चावै सतरौ भी हुवै, जासूं उठै जरूर। 51 ॥
देख्यौ नैचो पुत्र रो, वावै रौ विसवास।
इजा दी, डर निवड़ियौ, मन में बँधगी आस॥ 52 ॥
अपशुकनों रा कर लिया, पालण सूरे सोच।
मन री सा शंका गई, मिटिया सब सकोच॥ 53 ॥

चौ.— मासी रो बेटौ थौ भाई, सालौ नाम खबर वै पाई।
साथै जासूं साले कयौ, सूरे मना कियौ नहिं रंयौ।
सूरे आछो ऊंठ कसायौ, दोनूं बैठा, तेज चलायौ।
पौंच्या वै दिल्ली रे वायर, कानों पड़ी अवाज्यों आयर।
सुण्या धमीड़ा घण कूटे ज्यों, शंका हुई विचार्यौ दोनौं।
दोनों बात समझ नहिं पाई, छोरा चुगती डोकर आई।
पूछी बात बताई डोकर, मन में कुछ दुखियारी होकर।
पगबेड़ी, हथकड़ी गळै रो, तोक, टोप घड़सी माथै रो।

दोहा— आसी सूरौ देवड़ो, दिल्ली धोखौ खाय।
या निवसी, या मारसी, वैनै कैद कराय॥ 54 ॥

चौ.— सुणी बात आ सालै भाई, कैद बात डोकरी सिधाई।
सालौ बोल्यौ पाछा चालौ, पड़ियौ है दुष्टों सूं पालौ।
सूरौ कैं हूँ दिल्लो जासूं, वचन दियौ, बेधड़क निभासूं।
सालौ कै जे तिनै मारसी, तो क्यों तुरक मनै उवारसी।
थारौ जी ठंराऊ कैयो, सूरे, सालौ सुणतौ रैयौ।
लै रुपिया, दिल्ली में जायर, मोल मिठाई दे तूं लायर।
सूरे छोणा भेळा करिया, वंजळाय, खीरा ले धरिया।
जोत जगाई. धूप मैकियौ, धर मिष्टान प्रसाद राखियौ।

दोहा— सूरे प्रभू नै याद कर, कीनी आ अरदास।
लौ जे ऊंचे हाथ सूं, भोग, पूरसी आस॥ 55 ॥
सवा हाथ ऊंचौ उठ्यौ, भोग, लियौ खुद नाथ।
सूरे मै नैचौ हुयौ, दोनूं टुरिया साथ॥ 56 ॥

चौ — बड़्या नगर में दोनूं भाई, दीसी फूलां नाम लुगाई।
भाई नै रख फूली रै घर, टुरियो, धन-भोळावण देयर।
अचा चूक दरबार पौंचियो, वैनै कोई नहिं ओळखियो।
खरणो दूआ थो बणावतों, बादशाह नै थो सुणावतो।
सूरो खड़ो, सलाम न करियो, बादशाह लख गुस्सै भरियो।
खरणै वैरो क्रोध निरखियो, पूठै फुर सूरै नै लखियो।
खरणै पूठ तुरक रै खोनी, करदी, शंका रती न मानी।
सूरै नै वो दूआ सुणावै, बादशाह रो गुसो न मावै।

दोहा— तुरक कयो, खरणा तनै, वाली लागै मौत।
हूम पूठ दीनी मनै, करी ढीठता बोत ।। 57 ।।
गुणा कोंकर भूलूं कयो, खरणै शाहंशाह।
थे रोटी दी, बात इण, राखी जहाँपनाह ।। 58 ।।

चौ.— बात न समझ तुरक रै भाई, खरणै सारी बात बताई।
था बुलावता आप जिकै नै, खड़ो सौमनै देखो वैनै।
आखा सूरै लिया जमै रा, आयो वचन निभाया वैरा।
बादशाह कैयो खरखै नै, तूं समझाय देव सूरै नै।
करै सलाम, शरीर निवावै, जमो नहीं, पाछो घर जावै।
बात सुणी, सूरै हँस कैयो, सुणो जिको सूं निवतो रैयो।
मात-पिता, धरती-आभै नै, सूर्य—चन्द्रमा, गुरु, बावै नै।
नाक निवण म्हें करी सदाई, दूजै आग नस न झुकाई।

दोहा— अे कपड़ा, ओ तन नहीं, झुकसी अठै मबार।
मरजादा टूटै नहीं, छूट जाय संसार।। 59 ।।

चौ.— तुरक अकड़ देखी सूरै री, जळो रीस सूं काया वैरी।
कैयो देखूं, झुकै न कोकर, खड़ा पास था फौजी नौकर।
अस्त्र, शस्त्र कैयो ले आवो, वोसूं दरवाजो बणवावो।
खिड़की राखो छोटी वै में, सीधो निकळ न सकै जिकै में।
टेढ़ो निसर्यों गडसी सस्तर, देखूं फेर निवै नहिं कोंकर।
हुकम दियो खिड़की सूं निसरै, सूरो शस्त्रों नै नहिं विसरै।

खिड़की खोंनी देखै सूरो, असमंजस मन में थो पूरो।
खरौसौ गुपत इशारो कीनो, सूरै तुरत समझ वो लीनो।

दोहा— आगै नहिं, लारै भुनयो, पैलो काढ़ या पैर।
बिन निवियों तन निसरियो, थी बावै री मेर॥ 60॥
बादशाह री चाल वा, सूरै की बेकार।
तुरक न पीछो छोड़ियो, लागो करण विचार॥ 61॥

सोरठा-सोचै शाहंशाह, यों निवसी, या मार सूं।
वैनै नहिं परवाह, सूरो निघड़क, मस्त थो॥ 62॥

चौ.— चिड़ियो तुरक, कयो ले जावो, लोहे रा गैणा पैरावो।
वौंरा भार सैय नहिं सकसी, भूखो-तिसो अंत में थकसी।
या तो हार मौन निवजासी, नहिं तो तड़फ-तड़फ मरजासी।
आंठू पौर राखिया पैरी, भार न तन सूं, उतरै वैरी।
हाथ हथकड़ी, पग पगवेड़ी, भारी इती, हिलै नहिं छेड़ी।
भारी तोक गळै पैरायो, माथै भारी टोप धरायो।
चीज्यों थी लोहे री सारी, वै सारी थी बेहद भारी।
हूवा न, हुबसे वै कमरै में, बंद कियो सूरै नै वेंमें।

दोहा— ताळा जड़िया बारनै, था निगरोणीदार।
खड़ा सचेत निगै रखै, हाथ लियो तलवार॥ 63॥
सूरै सोच्यो भार सूं, अब मरसूं बेमौत।
बाबा क्यो इमरत्येन लो, करो न देरी बौत॥ 64॥

चौ — तुरत गळै री तोक टूटियो, पड़ियो आगो, गळो छूटियो।
टोप उठ गयो करामात सूं, सिर सूं हट चिप गयो छात सूं।
च्यारूं कर पग धर्‌या जमी पर, भार न वौरो थो शरीर पर।
शीतल-मद-सुगंध सुहाई, हाफें हवा नाक में आई।
सोरो करियो वैनै बांबै, नहीं तुरक रै आयो तांबै।
घड़ी बतीस देख कर बीती, तुरक बात आ मन में चींती।
काफी टैम हुई वो मरग्यो, निश्चै वैरो प्रोण निसरग्यो।
कह्‌यो सिपायो नै अब जावो, लाश बार कमरै सूं लावो।

दोहा— हिन्दू है फेंकाय दो, जमना में ले जाय।
करी अकड़, परलीम वै, पाया ज्यौन गमाय ।। 65 ।।
मिल्यो सवायो जीवतो, सूरो शांत, सचेत।
कियो अचंभो सैं जणौ, शाहंशाह समेत ।। 66 ।।

चौ— पास एक थी गुफा अँधारी, वैं में था जहरीला भारी।
अजगर, नाग, जीव बौतेरा, रैवै वौरा उठै बसेरा।
गुफा मौत री सैन कैंवता, नर-भक्षी था जीव रैंवता।
कयो बादशा अब सूरै नै, फेंको जाय गुफा में वैनै।
पदम नाग वै में थो घुसियो, देख आंवतो भगत हुलसियो।
अजगर नैं वैं तखत बणायो, बीच भगत वै पर बैठायो।
करै आरती नागण वैरी, बड़ी खातरी की सूरै री।
नाग, सँपोळा, विच्छू चौंपे, सूरै रा पग किरपा वौं पैं।

दोहा— बावै री किरपा हुई, हरखै सारा जीव।
जिकी गुफा थी मौत री वैं में सुखी अतीव ।। 67 ।।
बंद करायो बादशा, थी ऊपर लौ द्वार।
जोण्यों जादूगर जदी, आय न जावै बार ।। 68 ।।

चौ.— हुयो दिनूगो तुरत जागियो, फौजयों नै पूछणै लागियो।
बायर नहीं गुफा सूं आयो, पोरों पूरी रात लगायो।
रयो गुफा में चार पौर तक, खतम हुय गयो हुसी अब तलक।
उत्तर जब वै साचो पायो, जद मैंतर नै पास बुलायो।
जावो हाड बच्या जे पावो, लंबे चिमटै सूं खींचावो।
हाड़ काढ़ जमना में डालो, पड़ियो थो मूरख सूं पालो।
नौकर गया गुफा में जोवै, अजगर माथै सूरो सोवै।
जीव गुफा रा करै चाकरी, वात तुरक रै वणी नाक री।

दोहा— अजगर सिर बैठावियो, ऊंचो चढ़ियो आप।
सूरो बायर आवियो, चैंरै नहि संताप ।। 69 ।।
स्वस्थ, सलौमत देखियो, बढ़ो तुरक री रीस।
अब कर सूं तरकीब जो, फळसी विसवा वीस। 70 ।।

चौ.— कयो बादशा अब लोहे री, कोठी एक बणावो वैरी।
चौतरफा, ऊपर अरु नीचै, भाला जड़ ऊभावो बीचै।
जेतखड़ो रैवै तन सीधै, थोड़ो हिलते भाला बींधै।
वैं कोठी में ऊभो करदो, ढक कोठी भट्टी पर धरदो।
कोठी-भाला ज्यों-ज्यों तपसी, सोरी मौत मिलै न तड़पसी।
निवणो मोनै, मारै हेलो, तो निकाळ झट बायर मेलो।
कपड़ो सूधो झुकै सोमनै, म्हारै, तो मंजूर है मनै।
सारा थे देख सो नींवतो, पाछो घर भेज सूं जींवतो।
दोहा— कैणं माफक तुरक रै, कोठी की तैयार।
सूरै बावै नै कह्यो, थोंरै ऊपर भार।। 71 ।।
सोरठा— म्हारो थौनै सोच, मनै न मरनै रो फिकर।
कियो न कुछ संकोच, हुयग्यो कोठी में खड़ो।। 72 ।।
चौ.— तुरक तुरत कोठी ढ़कवाई, भठ्ठो रै ऊपर रखवाई।
भठ्ठी में झट आग जलाई, च्यारूं पासी लपट्यों छाई।
लाल हुई जब कोठी तपकर, तुरक अचँभो कियो सोचकर।
सूरै तो हेलो नहिं करियो, सोच्यो तुरक मोय जळ मरियो।
कोठो भट्टी सूं हटवाई, पोणी सूं ठडो करवाई।
तुरक कह्यो कोठी खुलवावो, हाड जदी बचियोड़ा पावो।
मंतर बायर हाड निकाळै, जाय हाड जमना में डाळै।
मूरख म्हें सूं बिरथा अड़ियो, हठ नहिं तजियो, मरनो पड़ियो।
दोहा— कोठी मे ठंडो करी दीनी नोकर खोल।
देख सवायो जींवतो, सूरो, हुया अबोल।। 73 ।।
भालों री जागा मिल्या, खस-टाटा चौफेर।
सै इचरज सूं देखता, था कोठी नै घेर।। 74 ।।
चौ —बादशाह तो होश बिसरियो, सूरो हाफे बार निसरियो।
तुरक कयो है ओ जादूगर, देसूं मार, फैल जादू कर।
जादूगरी इयै री ढासूं, दूजी चाल कोम में लासूं।
धरो कैद में थे सूरै नै भूखो-तिसो राखिया वैनै।

तीखी गूळयो त्यार करावो, तखत पर चोंनें लगवावो।
गूई सिरख्यों तीखी धार्यो, ऊपर वैठ्यों गड़सी सार्यो।
चढ़सी सूळी, गूरो मरसी, आदू देखूं मब मया करसी।
हुकम दियो सूळी चाढ़ण री, मन में भाव वैर काढ़ण री।

दोहा— खांवे पर थो तोळियो, सूरे करियो याद।
वै में थो, घोड़ो बंध्यो, बावै री परसाद ।। 75 ।।

चौ — घर मूंडे परसाद चाखियो, हाथां में तोळियो राखियो।
फेंक्यो वैनें सूळ यो माथै, हकली वे सूळ यो सब साथै।
सीधो सूळयों माथै पड़ियो, हुयग्यो कड़्डो, खूब अकड़ियो।
सूरो जाय वैठग्यो वै पर, सूळ यो नीची मुड़ियों तर-तर।
जीर्ण भगत तखत पर बैठो, रती न दुख पावै, सुख वैठो।
भार हुयो बेथाग भगत रो, रूप तोळियै लियो तखत रो।
सूळ यो मुड़ियों, भार न सैयो, तुरक अचंभो करतो रैयो।
हार भगत पाछो उतारियो, नवो तरीको अबै धारियो।

दोहा— कयो सिपायों नै तुरक, इयो न तावै आय।
अब उपाव ऐसो करूं, निश्चै वो मर जाय ।। 76 ।।

चौ.—बणवाई वै बड़ी कड़ाई, भट्ठी माथै लाय चढ़ाई।
तेल घाल पूणी भरवाई, लकड़ यों भर, भट्ठी सुळगाई।
हाथ भगत रा बांध्या लारे, खड़ो कियो भट्ठी रे सारे।
तपियो तेल, उकाळा खाया, दिल्ली रा से लोग बुलाया।
देखो थे तेल में सीजतो, तेल उकळतै में तळीजतो।
पलंग पास में ऊंचो सेठो, बिछवायो, खुद ऊपर बैठो।
पास बद तबू तणवायो, सभी बेगम्यो देखण लायो।
आटे रो बणवायो मोटो, लियो हाथ में खुद रै रोटो।

दोहा— नौकर नै रोटो दियो, दे धीरे सिरकाय।
रोट उबलतै तेल में, जे रोटो तल जाय ।। 77 ।।

सोरठा— पूरो उकल यो तेल, औ सबूत पक्को हुसी।
जद सूरे नै ठेल, देवो तपतै तेल में ।। 78 ।।

दोहा— रोटी तेल तलीजियो, हुयग्या सैन सचेत।
घोड़ो दीस्यो आंवतो, झट असवार समेत ॥ 79 ॥

चौ.— परजा जिती देखरण आई, औंधी हुयगी, जद घबराई।
तंबू उखड़्यो, उडियो आगो, खड़ो बेगम्यों नै डर लागो।
हुयो पलंग तुरक रो ऊंधो, उलट्यो आप पलँग रै सूधो।
घोड़ा दौड़े च्यारूं पासी, सब रै लाग्यों लागै खासी।
सै औंधा, कूकै, नहिं सूजै, खड़ा, पड़्या सब रोवै धूजै।
चिल्लावै बेगम्यों, न सारो, भगत खड़ो, मुल्कै बेचारो।
पास पौंचिया धर्णी जगत रा, हाथ खुल गया तुरत भगत रा।
सुख-दुख वों पूछ्यो सूरै रो, चरण पकड़ मन हुलस्यो मैरो।

सोरठा— थोंरो माथै हाथ, कूण बाल बोंको करै।
सोंम्यो दीनानाथ, क्या मजाल है तुरक री ॥ 80 ॥

चौ.— खड़ो बेगम्यों सब चिल्लाई, बूढ़ी एक अचानक आई।
कै डोकर बचसो नहिं रोयों, सिगलयों, बुढ़िया खोनी जोयों।
तूं बताव, म्हौनै क्या करनो, नहिं तो निश्चै दीसै मरनो।
पग पकड़ो सूरै रा जायर, माफी मांगो, भक्त मनायर।
थों तो जुलम किया है काफी, भक्त रहमदिल, देसी माफी।
सारा बच जासो मरनै सूं, औ उपाव जल्दी करनै सूं।
गयों बेगम्यों, पैर पकड़िया, भगत उठायो, ओंसू झड़िया।
बावै तुरत समेटो माया, औंधों सिगलो नेतर पाया।

दोहा— पाछो सीधो हुय गयो, तुरक समेत पलंग।
तेल भठी ठंडा हुया, गरभ हुय गयो भंग ॥ 81 ॥
उतर पलँग सूं बादशा, पड़ियो पैरों जाय।
माफी मौंगी भगत सूं, भगत खड़ो मुसकाय ॥ 82 ॥
माफ करै बाबो, कह्यो, भगत, न म्हारी ताब।
वै तिरलोकी नाथ नै, ध्यावो आप जनाब ॥ 83 ॥

चौ.— जमो जरूर अबै करवासूं, कह्यो तुरक बावै नै ध्यासूं।
मंदर एक बिसाल बणासूं, परजा में हेलो फिरवासूं।

हुसी भगत वाचै रा सारा, घ्यासी, ग्याल हुसी वं चारा।
वैई रात जमो करवायो, भाई रै संग सूरो आयो।
दोनों भार्यो भजन सुणाया, सुणनै वाला से हरखाया।
सूरै नै आदर सूं करियो, विदा बादशा, शरमों मरियो।
सूरो सालो पाछा आया, आय सिरोही हाल सुणाया।
परचा सुणिया, मा सुख पायो, खेमे-कुशल सूरो आयो।

दोहा— कड़ी परीक्षा भगत री, लीनी नैची जाच।
सूरै री नैचो नहीं, डिगियो, मन में साच ॥ 84 ॥
भगतों री भगती तणा, परचा दै भगवान।
परचो सूं सुगरा हुवै, नुगरा, मिट अज्ञान ॥ 85 ॥

सोरठा- परचा देवै ज्ञान, द्वापर में गीता दियो।
कलजुग क्रूर महान, परचों सूं भगती बढ़े ॥ 86 ॥
परचा दिया कमाल, सूरै रो नैचो अटल।
मैणादे रा लाल, वूलै रो हेलो सुणो ॥ 87 ॥

ॐ

।। श्री रामदेवाय नमः ।।

श्री रामदेव-चरित-मानस

तेबीसवां चरण

सारूंडे री बाई सूजों नै परचौ

छंद— ध्याय हिमालय-सुता-सुम्रन नै गिरा मनाऊं ।
गुरु-पद-धूरि धरूं माथै, गुण प्रभु रा गाऊं ।।
देवादास साध-सुत गोवर्धन थो बासी ।
सारूंडै रो, वैरी घी पर श्राफत खासी ।। 1 ।।

सोरठा— सूंजो बाई नौम, बेटी गोर्धनदास री ।
हुयो डील बेकौम, बाबै री शरणों लियो ।। 2 ।।
गलिया हाथ र पैर, घावों में कीड़ा पड़्या ।
फैलण लागो जैर, डील हुयो श्रधगावलो ।। 3 ।।
संग रुणेचै जाय, गोद डीकरी ले टुरी ।
भगतो दी छिटकाय, डरै एकली रुदन कर ।। 4 ।।
प्रगट्या दीनानाथ, बाँय झाल बैठी करी ।
प्रभु रो लागो हाथ, काया सा कंचन हुई ।। 5 ।।

चौ.— यो वो बासी सारूंडै रो, गोर्धनदास नौम थो वैरो ।
सस्तीवाड़ो, पण छीदा वै, नादारी में कौम चलावै ।
तंगी में तावै नहिं श्राया, पण बेटा-बेटी परनाया ।
वैरी बेटी, सूजों बाई, नाथूसर वैनै परनाई ।
रोग लागियो, श्रोगण केरो, पोचो परलब्ध थो वैरो ।
हुया दुखणिया हाथ पगो में, बढ़िया, घाव पड़गया वोमें ।
छोटो गौव, इलाज नै बैठो, रोग श्रसाध्य हुयगयो सैंठो ।
कर-पग वैरा गलिया, सड़िया, धीरै-धीरै कीड़ा पड़िया ।

दोहा— पीड़ घणी, चौसट घड़ी, कीड़ा काया खाय ।
खारो लागै, सासरै, वालो नै नहिं स्वाँय ।। 6 ।।

चौ.— भार हुई वा सासरलो पर, कोम न हुवै, खिलाफ हुयो घर।
करै कूंण खरचो इलाज पर, रोग अयाग बढ़ गयो तर-तर।
छोरी एक हुई सूजों रै, वैसूं नहि हिवास घररों रै।
आयो अंत, कलै घर वाढी, छोरी दे सूजों नै काढी।
किठै जांवती सूजों बाई, पीवर लेय डोकरी आई।
देख दुखी मां-बाप बिचारा, करम फूटियो, कैरा सारा।
राखी वों घर में सूजों नै, प्रेम हुंतो बेटी पर वोंनै।
दोरा-सोरा कुछ दिन बीत्या, पड़सो विधो फेर, नहि बीत्या।
दोहा— ठाली, वों पर भार थी, कद तक सँई जाय।
अणखै भाभी रात-दिन, खारा बोल सुणाय ॥ 7 ॥
माय-बाप रो बस नहीं, कोंकर सकै निभाय।
भाई-भाभी री चलै, वोंनै दया न आय ॥ 8 ॥
चौ.— आफत घणी न खूटै खाई, कोंकर सँवै सूजों बाई।
हुया जुलम जब हद सूं बायर, सैय न सकी, हुई वा कायर।
ले छोरी वा घर सूं भागी, दर-दर टुकड़ा मोंगण लागी।
गलै मेखली, हाथ ठीकरी, गोदी में रेवती डोकरी।
सारूंडै में घर-घर जावै, पेट भरै, वा मोंगै खावै।
दुनिया में कोई नहि वैरी, नैचो वै धरियो बावै रो।
जींवण सूं थकगी, ना हारी, रोणेचै जावण री धारी।
पैंडै रै लायक नहि तन थो, पण गुडियो बावै में मन थो।
दोहा— सँग वालो नै ठा पड़ी, सूजो चालो चाय।
दीवीं ऊंधी सीख, पण सकिया नहीं डिगाय ॥ 9 ॥
चौ.— हालत तन री वैंनै साली, पण सत चढ़ियों साथै चालो।
पग गलियोड़ा, दोरी-सोरी, चालै थी गोदी में छोरी।
सँग वालों सूं मोंगै, खावै, होमत तणी, चालती जावै।
सँग थो बावै रे भगतों रो, पण न कालंजो कंवलो वोंरो।
पंगली, वा वे हद दुख पावै, पण केई नै दया न आवै।
बिना बात वे उफत्या वेसूं, थी लाचार चलै बस कैसूं।

था कुछ कुबधी, सला विचारी, सूजों नें छोड़ण री धारी।
रात-बिसोई की, सूता सब, संग रे साथे सूय गई तब।

दोहा— थी पंगळी, हारी, थकी, आई नींद निसंग।
तक मोको, संग टोरियो, साथो हुयग्यो भंग ॥ 10 ॥
टेप मोकळी वाद वा, उठी, तकें चौफेर।
संगवाळा दीस्या नहीं, हुई उठण में देर ॥ 11 ॥
साथे नोनी डीकरी, पंगळी हीमत हार।
बावे नें कर याद वा, लागी करण पुकार ॥ 12 ॥

चौ— म्हेंसूं वेसी कुण दुखियारी, बाबा एक आस है थारी।
दुनियावाळा सें दुरकारे, दुखियारी पर दया न धारे।
दलित, दुखी, रोग्यों री खातर, थों अवतार लियो काया धर।
पेलो भगत अनेक तारिया, सुण पुकार दुख सूं उबारिया।
अबके वारी म्हों दोनों री, विरद सँभाळो. सुध लो म्होंरी।
अबला और बालकी मरसी, दुनिया वाला फिकर न करसी।
थोंने तो सुणियोई सरसी, थे सुणसो, जद भगत उबरसी।
जोंणूं रस्तो नहीं, भटकसूं, रोंणेचे पोंचूं न, अटक सूं।

दोहा— म्हारा, म्हारी धीव रा, हुया किसा वे हाल।
व्यापक सिगले आप हो, अजमल जी रा लाल ॥ 13 ॥
म्हारे शरणो आपरो, कोंकर फेर अनाथ।
हेलो म्हारो सोभलो, झेलो म्हारो हाथ ॥ 14 ॥

चौ.— दीनानाथ बिरद संभालो, आय आपदा म्हारी टालो।
तन वेरी, दुनिया सा वेरी, करूं आस दूजे री केरी।
पोंचण दूरी आपरे द्वारे, भगत छोड़ग्या, केरे सारे।
जिके दुखो ने सब दुरकारे, वेरी खातर नाथ पधारे।
अशरण शरण आपने मोने, थोंरो विरद नहीं है छोने।
अबला और बालकी रोवे, दूजो कोइ सोमो नहिं जोवे।
लीलूड़े चढ़ नाथ पधारो, काटो दुख अबला रो सारो।
म्हारा औगण प्रभू बिसारो, थोंरो बाबा विरद विचारो।

दोहा— सुणली दीनानाथ झट, वैरी करुण पुकार।
रामदेवजी प्रगटिया, लीलूड़े असवार ॥ 15 ॥

चौ.— सूजो रही ताकती बोनें, उठ न सकै, देखै धणियों नै।
उतर दे दियो काया वैरी, मैर हुई वै पर बावै री।
बांय झाल बैठो प्रभु कीनी, देखी वैनैं भगती-भीनी।
हाथ लागियो जब बावै रो, तन कंचन सो हुयग्यो वैरो।
घाव अलोप, हाथ-पग साबत हुयगी बावै री शरणागत।
पैर झालिया सूजों बाई, तन पुलकै, आंख्यों भरिआई।
बात प्रभू सूजो नै कैई, थारी फलगी जात अठैई।
थारै दुख नेड़ो नहिं आसी, साचे मन म्हारा गुण गासी।

दोहा— घिरजा पाछी, जाव घर, दीनो प्रभु आदेश।
बै इशा माथै धरो, दुख न रयो लव-लेश ॥ 16 ॥
दे इशा बाबो हुया, पल में अन्तर धौन।
अंतर रा पट उगड़िया, सूजो पायो ज्ञौन ॥ 17 ॥
राम कँवर री छावली, बाई सूजो गाय।
बूलै रौ हेलो सुणौ, रौणेचे रा राय ॥ 18 ॥

श्री रामदेवाय नमः

श्री रामदेव-चरित-मानस

चौवीसवां चरण

बाबै रा उपदेश और आदर्श

छंद— मोदक-प्रिय, मूषक-सवार, शिव-नन्दन ध्याऊं ।
वीणा-धारणि, कमल-विराजणि, वाणि मनाऊं ।।
गुरुवर-पद-नख-ज्योति निरख, मन जोत जगाऊं ।
बाबै रा उपदेश और आदर्श बताऊं ।। 1 ।।
पैलो है चरण, शेष कलजुग रा खेल हलाहल भी चलसी ।
प्रभु नै माया-मरजाद मेटणी नहीं, न बंदा संभलसी ।।
भैरूं रै जुलमों अजमल री भगती रै हित अवतार लियो ।
चलते कळजुग, कोकर बंदा रै सकै सुखी, उपदेश दियो ।। 2 ।।

दोहा— ज्ञान, जोग, जिग कर्म री, रैई नहिं औकात ।
दी शिक्षा व्यवहार री, मिटै पाप उतपात ।। 3 ।।

चौ.— जग री है दुखालय नाम, सुख री आशा है बेकाम ।
साधारण दुख जो बंदों रा, काळ, करम, स्वभाव, गुण, वौंरा ।
हेतु कुदरती है सारों रा, नहीं परस्पर दोषी वौंरा ।
नेम हुवै कुदरत रा ऐसा, सब पर लागू एकै जैसा ।
राज-समाज-पंथ बण पड़िया, नेम जिकौंरा बंदों घड़िया ।
बंदों रै अधीन है पालन, वो नेमों री, पण गंदा मन ।
वौंरै तणा हुया अन्यायी, बंदा, जिकौं शक्ति हथियाई ।
निर्बल, निर्धन, दलित शिकार, वौंरा, बेबस से वै भार ।

दोहा— रचण, निभावण नेम में, पक्षपात आ जाय ।
भेद-भाव जब नेम में, क्यों न हुसी अन्याय ।। 4 ।।
प्रकृति, प्रभु रै नेम री, पालन है अनिवार्य ।
नर-कृत नियमों री हुवै, पालन स्वैच्छिक कार्य ।। 5 ।।

प्रभु रो, बंदों रो किसो नेम ? समझणौ सार।
पालन बेबस, स्वैच्छिक, कैवे स्पष्ट प्रकार ॥ 6 ॥
नेम-सनातन-ईश रा, बदळ सकै नहिं कोय।
बंदों रा बदळयों सरे, भिन्न परिस्थिति होय ॥ 7 ।
धर्म-नेम तो ईश रा, पंथ-नेम नर कार्य।
पंथ-नेम स्वैच्छिक हुवे, धर्म-नेम अनिवार्य ॥ 8 ॥
सोरठा— मानव रचियो नाथ, सृष्टी रै सरुआत में।
धर्म दियो थो साथ, आतमा रै उद्धार हित ॥ 9 ॥
दोहा— आदि सृष्टि सू एक ही, चालै धर्म अबाध।
वो परलै तक चालसी, दूजो सकै न लाध ॥ 10 ॥
धर्म-ग्रंथ तो वेद है, शास्त्र धार्मिक ग्रंथ।
वेद बतावै धर्म नै, शेष बतावै पंथ ॥ 11 ॥
स्रोत वेद रो ईश है, धर्म प्रभू री चीज।
नर-कृत धार्मिक ग्रंथ है, कर लो सही तमीज ॥ 12 ॥
छंद— विद्या रा भेद परा-अपरा है, पण नहिं अपरा विद्या है।
विद्या है केवळ ब्रह्म-ज्ञान, अपरा सा शेष अविद्या है ॥
है धर्म परा विद्या, अपरा, मोनो आधार सब पंथों रो।
दे आतम-ज्ञान वेदान्त, विषय अपरा है धार्मिक ग्रंथों रो ॥ 13॥
दोहा— अंतर धर्म-अधर्म रो, दुनिया जोणै नाय।
प्रसग बुद्धि अज्ञान दे, कल्पित पंथ चलाय ॥ 14 ॥
अपरा तणो अधर्म है, परा धर्म रो मूल।
अतर धर्म-अधर्म रो, समझ सुधारो भूल ॥ 15 ॥
दृढ़ निश्चय सूं जोणलो, धर्म एक, प्रभु एक।
हुया प्रकट अज्ञान सूं, कल्पित पंथ अनेक ॥ 16 ॥
गुण ही समझो डार है, बांधै मन व्यवहार।
गुणातीत हुय जाय तो, निश्चै बेड़ो पार ॥ 17 ॥
गुणातीत है आतमा, पण मोनै संबंध।
कर्म गुणों रा, आपरा मोनै, युद्धो ग्रंथ ॥ 18 ॥

सोरठा— आर्यों सत्य विवेक, भेद असत्-सत् रो खुलै।
मुक्ति मार्ग बस एक, सत्-सरूप आत्मा लखै ॥ 19 ॥
केवल ज्ञान अबाध्य, साधन सच्चो मुक्ति री।
ज्ञान कर्म रो साध्य, साध्य ज्ञान री मुक्ति है ॥ 20 ॥
आत्मा रो उद्धार, हुवै प्रयोजन धर्म रो।
जीवन रा आचार, सुख री खातर पंथ दै ॥ 21 ॥
तत्व-ज्ञान, अरु कर्म, अंग धर्म रा दोय है।
ब्रह्म-ज्ञान है धर्म, कर्म-संहिता पंथ है ॥ 22 ॥
धर्म और सत्कर्म, सहयोगी है परस्पर।
धर्म तत्व रो मर्म, पंथ बताते कर्म नै ॥ 23 ॥
दोहा— तत्व सृष्टि रो, ब्रह्म रो, है अनन्य, है एक।
धर्म एक है; कामना माफक कर्म अनेक ॥ 24 ॥
प्रकट धर्म तो कर्म है, गुह्य धर्म है ज्ञान।
बाह्य, गुह्य दो धर्म रा, रूप दिया भगवान ॥ 25 ॥
गुप्त आतमा रो हुवै, प्रकट देह रो धर्म।
गुह्य ज्ञान कैवल्य है, प्रकट धर्म है कर्म ॥ 26 ॥
मूल तत्व दो सृष्टि रा, जड़—चेतन कै संत।
आयु जिन्दगी देह री, जीव अनादि अनंत ॥ 27 ॥
सोरठा— जड़ है जग अरु देह, चेतन सबरी आतमा।
काया रो जग गेह, जीव अंश है ब्रह्म रो ॥ 28 ॥
सदाचार रा नेम, नैतिकता है, धर्म नहिं।
तन रो योग-क्षेम, करै, न साधन मुक्ति रा ॥ 29 ॥
है स्वरूप रो ज्ञान, साध्य, कर्म साधन हुवै।
भक्ति तणो भगवान, ज्ञान आप दै भक्त नै ॥ 30 ॥
साधक भगती पाय, करियों निष्ठा ज्ञान री।
ज्ञान स्वतः मिल जाय, हरि-आश्रित हुय; भक्त नै ॥ 31 ॥
दोहा — क्रिया, पदारथ, काल, दिक, तत्व सृष्टि रा चार।
वाक्, प्राण, मन आतमा नै कर दै लाचार ॥ 32 ॥

चौ.— एक ब्रह्म दूजो नहिं कोई, आत्मा अंश ब्रह्म रो हाई।
प्रकृति असत जड़ है, माया है, चेतन आत्मा पर छाया है।
कर तादात्म्य आतमा जड़ सूं, निज स्वरूप भूलै गड़बड़ सूं।
जीव ब्रह्म नै देख न पावै, माया रो पट आडो आवै।
हुय स्वरूप दरशण आत्मा नै, जीव मिलै झट परमात्मा नै।
सारै गर्ज धर्म आ एक, पंथ जिन्दगी करदे नेक।
धर्म, पंथ रा क्षेत्र भिन्न है, बिना समझियों जीव खिन्न है।
पंथों रे फंदों में अटकै, लख चौरासी जूण्यों भटकै।
सोरठा— बंदौं दीना पंथ, प्रभु दीनो वो धर्म इक।
न्यारा-न्यारा ग्रंथ, न्यारा-न्यारा पंथ है ॥ 33 ॥
दोहा— पंथों दुख पैदा किया, भेद-भाव फैलाय।
नारि, अछूत, दलित दुखी, करै समाज अन्याय ॥ 34 ॥
चौ.— चेतन वस दो ब्रह्म-जीव है, जड़ता रो सा सृष्टि सींव है।
जग, काया, जीवन अरु कर्म, है जड़ सारा समझो मर्म।
करै व्यवस्था जड़ कर्मों रो, पथों री संज्ञा है वाँरो।
करनो मुक्त आतमा रो है, विषय धर्म रो ओ न्यारो है।
भेद अन्याय न हुवै धर्म रा, जुलम सैन पंथ रा, कर्म रा।
धर्म मिल्योड़ो है ईश्वर सूं, जनम हुया पंथों रा नर सूं।
पंथ-नेम अल्पज्ञों घड़िया, वदळी टेम, वदलना पड़िया।
नेम धर्म रा दीना ईश्वर, शाश्वत है, नहिं बदळ सकै नर।
दोहा— अहंकार, मन, बुद्धि, चित, दस इंद्रियों समेत।
प्राण, कोष, गुण, चक्र है, जड़ तन रातो चेत ॥ 35 ॥
तत्त्व-ज्ञान जग-जीव रो, जो बतलाय, वो धर्म।
सदाचार सीखाय जो, पंथ हुवै, ओ मर्म ॥ 36 ॥
सोरठा— आतमा चेतन, शांत, नहीं क्रिया, न करम करै।
जो थोपै, सो भ्रान्त, कर्म देह रा जीव पर ॥ 37 ॥
दोहा— आप अकरता ईश है, माया सृष्टि रचाय।
माया रै वश मोनतो, धर्म-भ्रष्ट हुय जाय ॥ 38 ॥

मारग भटक्यो मोनखो, बिसर्‌यो धर्म र पंथ।
त्रेता में मरजाद दी, द्वापर गीता-ग्रंथ ॥ 39 ॥
कळजुग है तामस प्रमुख, प्रगटै दोष अनेक।
दी समता व्यवहार री, रखी धर्म री टेक॥ 40 ॥

छंद— है पंथ-भेद री, ऊंच-नीच री रोग जगत में लाइलाज।
दलितों, अबलाओं पर अन्याय है, छुआ-छूत री पाप आज॥
है भेद-भाव दूजा अनेक, जग में दुख रा, जुलम रा मूल।
उपदेश मोन समता री, गिजिया धर्म मोन सुधरसी भूल॥ 41 ॥

सोरठा— जब जब छीजै धर्म, प्रभु लेवै अवतार तब।
कर दै नष्ट अधर्म, करै धर्म री थापना ॥ 42 ॥

चो.— तरै तरै रा दोष कळू में, लागा पैदा हुवण सरू में।
राज, समाज, पंथ में ऐसा, भेद जग्या न कदे था जैसा।
भेद-भाव री कलह लड़ाई, पाखड्‌यों जग में फैलाई।
कल्पित पंथ अनेक प्रगटिया, लड़नै सारू सीमा डटिया।
हाथ-हाथ नै खांवण लागी, भाई-चारो जग सूं भागी।
ऊंचा, नीचा रहै न रळिया, ऊंचोड़ों नीचों नै दळिया।
रचिया प्रभू सिरीसा बंदा, माया भाव कर दिया गंदा।
जुलम करै बंदै पर बंदो, अधरम इसो फैलियो गंदो।

दोहा— प्रकृति में विकृति हुयों, सृष्टी-रचना होय।
धर्म कियो बंदों विकृत, भक्ति-मुक्ति दी खोय॥ 43 ॥
भैरू राखस री मच्यो, मरुधर में आतंक।
वस नहिं चालै, सै दुखी, परजा, राजा, रंक॥ 44 ॥

चो.— मुसळमोन भारत में आया, पंथ-भेद रा दुख फैलाया।
ऊंच-नीच रा, धोव-पूत रा, जात-पंथ रा, छुआ-छूत रा।
वेद धर्म नहिं जोंणें अनपढ़, देश हुय गयो अधरम रो गढ़।
असर अठीनै नहीं ज्ञोन री, ऊपर सूं डर मुसलमोन री।
हिन्दू जाती छीजण लागी, धर्म-आस्था वोंरी भागी।
था अनेक दुख, जुलम कळू रा, संत, विप्र, आतंकित पूरा।

अजमल री भगती रंग लाई, प्रभु रै मन में करुणा आई।
वचन दियो अजमल नै आसूं, थारै घर, दुख जुलम मिटासूं।

सोरठा— राम लियो अवतार, कोप समंदर पर कियो।
सागर करी पुकार, शर मार्यो उत्तर दिशा ॥ 45 ॥
पच्छम आर्यावर्त, शर-शापित मरुधर हुयो।
दो जुग अध रै गर्त, में संतप्त, ग्रसित रहयो ॥ 46 ॥
कळजुग में भगवान, अजमल री बिनती सुणी।
प्रगट्या कृपा-निधान, शाप-मुक्त मरुधर कियो ॥ 47 ॥

दोहा— प्रगट पालणें में हुया, अजमल रै घर आय।
चन्द्र-कळा ज्यों आसतै, ऊमर बढ़ती जाय ॥ 48 ॥
दुख रा जग में मूळ दो, भेद-भाव अरु धर्म।
दोनूं दुख कींकर कटै, प्रभू बतायो मर्म ॥ 49 ॥

चौ— अज्ञौनी, तोमसो जणों नै, ज्ञौन सदै नहिं, परचो मोनै।
भगती साधन एक धरम रो, कळजुग में सिद्धांत मरम रो।
कलजुग में विरक्ती रो फोड़ो, तोमस घणो, रजोगुण थोड़ो।
विरला कळ में सतोगुणी है, जिकों ज्ञौन री वात सुणी है।
भक्ति सकाम घणाखरा करसी, भगती बढ़ियों धरम सुधरसी।
भक्ति सकाम हुवे देवों री, देव-ध्यावना है वंदों री।
रामदेव लीनो प्रभु नाम, भक्ति बढ़ावण सारू राम।
राम रूप सुमिरै निष्कामो, ध्यावै समझै देव सकामो।

दोहा— सबरी भक्ति कबूल है, बाबै नै कलिकाल।
ज्यों सुमिरै ज्यों भक्त नै, दै फल अजमल लाल ॥ 50 ॥
भगती भूल, गया भटक, कलजुग में नर-नार।
बाबै रै उपदेश सूं, हुयो भक्ति विस्तार ॥ 51 ॥

छंद— चौरासी लाख भटक जूंणयो, यें राम-कृपा नर-तन पायो।
हुयग्यो कृतघ्न, भूलग्यो राम नैं, मोहित माया भरमायो।
ज्यों लूण विना फीका व्यंजन, है राम बिना जीवण फीको।
भज राम-नाम, भज राम-नाम, नर-जनम पावणो जद नीको ॥ 52 ॥

दोहा— सृष्टि चराचर जगत में, व्यापै दीनानाथ।
जीव सभी है राम-मय, प्रेम करो सब साथ ।। 53 ।।
जड़ प्रकृति में खुद कियौ, चेतन ब्रह्म प्रवेश।
नाम-रूप री चेतना, जड़ में व्याप्त महेश ।। 54 ।।
जिता रूप देखो, जिता सुणौं सृष्टि में नाम।
नाम रूप सब ब्रह्म रा, ब्रह्म रूप श्री राम ।। 55 ।।
सरजन, पालन, हनन हित, नाम, रूप, अरु वेश।
एक राम रा तीन है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।। 56 ।।
ध्यावौ केई रूप नै, सुमिरौ कोई नाम।
सा उपासना ब्रह्म री, है अभेद श्री राम ।। 57 ।।

सोरठा- थारा-म्हारा नांय, जीव चराचर राम रा।
राम-चरण रति पाय, प्रेम करै, तज मोह तौ ।। 58 ।।

चौ.— नारी, नर री सबसूं गंदौ, भेद-भाव भुगतै हर बंदौ।
पुरुषों रै साएरै नारी, रेवै, जोंणै दुनिया सारी।
गिण न सकौ उपकार नार रा, मूळ जिन्दगी रै अधार रा।
पंथों ऐसा किया कायदा, सिरफ पुरुष नै मिलै फायदा।
अबला पर अन्याय करै वै, घड़ा पाप रा खूब भरै वै।
पंथों रै पंडों सूं डरता, शासक जुलम दीसिया करता।
हालत नहिं सुधरै अबला री, सैन भोगसी बारी, बारी।
सुख-सम्मान दियों नारी नै, ईश सुखी करसी धरती नै।

दोहा— राम-भक्ति देवै शिव, मिलै भक्ति सूं मुक्ति।
शिवोपासना मुक्ति री, एक मात्र है युक्ति ।। 59 ।।
जड़ प्रकृति में व्याप्त शिव, जीव वसै जड़ देह।
शिव-शक्ती सम आतमा, प्राण, नहीं संदेह ।। 60 ।।
पति-पतनी रै तनों में, आतमा निज री होय।
बदळै प्राण परस्पर, अर्द्धांगी हुय दोय ।। 61 ।।
प्रति तन में है आतमा, निजरी, पर रा प्राण।
दोनूं पति है, पत्नि है, दोनूं स्पष्ट प्रमाण ।। 62 ।।

दोनूं पति है, पत्नि भी, दोनूं है, दे ज्ञान ।
बावे धेनड़-धीव रो, दरजो कियो समान ।। 63 ।।

सोरठा— नारी पर अन्याय, करे समाज पतित हुवे ।
विश्व सुखी हुय जाय, नारी री सम्मान कर ।। 64 ।।

दोहा— माता, भगिनी, भार्या, नारी रूप अनेक ।
करुणा, कोमलता, प्रणय, है साकार हरेक ।। 65 ।।
नर-तन पति, नारी-तन, पतनी जग कहलाय ।
देह-भेद रा धर्म व्रत, दीना श्रुती बताय ।। 66 ।।
पति-व्रत पाळे पत्नि ज्यों, पतनी-व्रत पति पाल।
पाळे व्रत पारस्परिक, दोनूं हुवे निहाल ।। 67 ।।
आधो-आध जियें, मरे, साथ, उभय, श्रुति कैय ।
प्राण एकरा, एकरो, जीव सदा सँग रैय ।। 68 ।।
नेतल जैसी पोंगळी, रो सगपण स्वीकार ।
रोग भयानक फैलसी, दी बावे सनकार ।। 69 ।।
सगपण रा आधार वो, पैल दिया समझाय ।
खीन मिलण री रोग-दुख, वे मोन्यों मिट जाय ।। 70 ।।
डाली सायर धी वजी, पण वैरी न विचार ।
परम-भक्त री दे दियो, दरजो खुद करतार ।। 71 ।।

चौ.— ली स्वतन्त्रता भारतवर्ष, वैसूं पैल पाँच सौ वर्ष।
बावे वे बात्यों समझाई, संविधान में जो अपनाई ।
छुआ-छूत ने प्रभू मिटाई, संविधान वैने अपनाई ।
सर्वपंथ - समभाव पढ़ायो, संविधान वैने अपनायो ।
मत-निरपेक्ष राज यो वीरो, पंथ-निरपेक्ष विधान अपीरो।
जन-जन री समता प्रभु दीनी, संविधान में वा रख लीनी।
जात-पंथ रा भेद मिटाया, संविधान वाने अपनाया ।
धर्म हुवे निजिया प्रभु केयो, सामूहिक मोन्यो दुख सैयो।

दोहा— निजरो मतलब जीव है, नहीं देह रो धर्म ।
धर्म आतमा रो हुवे, जड़ काया रा कर्म ।। 72 ।।

धर्म सदा है जीव रो, दीनो है करतार।
काया रो मोन्यो धरम, भटक गयो संसार ॥ 73 ॥
जड़ काया रो मौनियो, धर्म बिगड़ियो रूप।
निजिया सामूहिक हुयो, धर्म, पड़्या तम-कूप ॥ 74 ॥
न्यारी, न्यारी आतमा, हुय न सकै समुदाय।
धर्म जीव रो विषय, क्यों सामूहिक कहलाय ॥ 75 ॥

सोरठा– तन-जीवन रा पंथ, है. सामूहिक वै हुवै।
सदाचार रा ग्रंथ, लिखै सुधारै जिन्दगी ॥ 76 ॥
मूल कलह रो एक, भेद-बुद्धि रो मूढ़ता।
प्रगट्या पंथ अनेक, मौनै भेद अभेद में ॥ 77 ॥
पथों रा मत-भेद, दुनिया में दीसै जिता।
हठ-धर्मी, औ खेद, है वै बेबुनियाद सब ॥ 78 ॥

दोहा— पंथ, धर्म नै जो करै, सेळ-भेळ, वै मूढ़।
तत्व-ज्ञान, आचार रो, भेद न जांणै गूढ़ ॥ 79 ॥
काया तो नश्वर हुवै, घेरो कइँ उद्धार।
नैतिकता रा नियम है, जीवन रा सुख-सार ॥ 80 ॥
प्रलय-नर्क-भय, स्वर्ग-सुख, पंथों रा हथियार।
भय-लालच सूं भक्त रो, धर्म करै उद्धार ॥ 81 ॥
भय-लालच साधन हुवै पंथों रा प्रत्यक्ष।
अभय, अकामी भक्त हुय जावै, धर्म-समक्ष ॥ 82 ॥

चौ.— पंथ चलावै कपटी बंदा, असर डाळ मूढ़ों पर गंदा।
धर्म ईश री साधै वै लय, स्वर्ग-नर्क रा पैदा कर भय।
खुद रा ग्रंथ अनाड़ो लिखिया, पट जावै मूरख नौसिखिया।
कल्पित पंथों रा ढिग लागै, खुद रो ठप्पो थोपै सागै।
स्वर्ग, नर्क, प्रभु रो त्रिशूल कर, धूल आंधणी ओख्यों में भर।
ओधो, ओधै री लकड़ी नै, झालै तो ले जासी कीनै।
भय-लालच नै कर लै साधन, मूढ़ो रा करलै गुलाम मन।
सत्य धर्म खुद भी वै त्यागै, टोळ हुवै मूढ़ों रा सागै।

सोरठा— धर्म साध्य है एक, पंथ सैन साधन हुवै ।
कोकर धर्म अनेक, देवणियो प्रभु एक है ।। 83 ।।
दोहा— धर्म दियोड़ो ईश रो, ईश्वर मोनो एक ।
धर्म एक है, हुय सकै, कदे न धर्म अनेक ।। 84 ।।
धर्म एक है, हुय सकै वैमें नहिं मत-भेद ।
पंथों, करमों में हुवै अंतर, उपजै खेद ।। 85 ।।
सोरठा- देवै प्रभु संदेश, उपदेशक वाहक हुवै ।
दर्जो नहीं विशेष, कौम डाकियै रो करै ।। 86 ।।
पत्र या समाचार, हुवै डाकियै रा नहीं ।
भेजणियो करतार, दोनों रो मालक प्रभू ।। 87 ।।
दोहा— धर्म प्रभू रो एक है, थारो-म्हारो नाय ।
पंथों रा नेता रया, बंदों नै भटकाय ।। 88 ।।
थारा-म्हारा धर्म जो कंवै ठेकेदार ।
वै पाखंडी, स्वारथी, करै अधर्म प्रचार ।। 89 ।।
ठेकेदार बजै धरमरा, वो रो नहिं धर्म ।
धर्म दियो परमात्मा, वो मालक, औ मर्म ।। 90 ।।
पंथ झाल, छोडै धरम, वणग्या ठेकेदार ।
उल्टा दै उपदेश वै, लड़ मरजाय गँवार ।। 91 ।।
अलग किताब्यों, पण लिखै एक सिरीसा कर्म ।
मत-भेदों रा मूळ है, पंथ-गुरू बेशर्म ।। 92 ।।
चौ.— प्रखर बुद्धि रो कुप्रभाव है, कोणा आंधी मोंय राव है ।
चमत्कार बौद्धिक विलास रो, मूढ़ों रो मूढ़ता आस रो ।
सिद्ध जाय वण अज्ञोन्यों में, कपट-बुद्धि रो स्वागत वों में ।
शस्त्र-शक्ति, तन-शक्ति लगावै, दै भय-लालच मूंढ़ पटावै ।
ताळा बुद्धी रै लौकिक दे, आड-ईश रा बोना लेवै ।
कल्पित पंथां रा प्रचार वै, करै आस्था-धर्म मार वै ।
पठित मूरखों रा गुट साधै, आप जिसा अनुयायी लाधै ।
खेल कळजुगी वै करजावै, खुद भटकै, जग नै भटकावै ।

सोरठा—किसा धर्म रा ग्रंथ, किसी किताब्यों पंथ री ।
जीवन री दी पंथ, आत्म–ज्ञान री धर्म दो ॥ 93 ॥

दोन इल्म बारीक, देवै रब रो, रूह रो ।
करै जिन्दगी ठीक, सम्प्रदाय दे कायदा ॥ 94 ॥

करनो बिरोध भूल. दोनूं पूरक परस्पर ।
तत्व–ज्ञान रो मूल, जीवन पावन कर मिलै ॥ 95 ॥

नहि पंथों में भेद, पाखड्यों पैदा किया ।–
कैवै पंथ अभेद. सदाचार सब एकसा ॥ 96 ॥

दोहा- प्राणी, पंथ समान सब, भेद–भाव दो छोड़ ।
धर्म एक है क्यों मची. ऊंच–नीच री होड़ ॥ 97 ॥

राज-नीति रा मल्ल खल, कपटी दाव लगाय ।
पंथो रा पैड़ा पटै, बिरथा कुजस कमाय ॥ 98 ॥

कठमुल्ला.धर्मान्धता, कट्टरता फैलाय ।
नेता–पंड़ा मूरखों में दंगा करवाय ॥ 99 ॥

चौ, — धर्म एक परबत है जोणौं, चोटी पर प्रभु मिलै पछोणौं ।
है अनेक परबत रा पासा, सोमै न्यारी-न्यारी आसा ।
परबत रै चौतरफो घेरो, भगती रो, प्रण एकूकै रो ।
करनो भगती चढ़णो परबत, चोटी पर पोंचों सब सहमत ।
पासों री प्रतिकूल दिशायो, मरमइयैरो समभ न आयो ॥
आप आपरै पासै खोनी, सूं चढणो, आ सारी मोंनी ।
दिशा विरोधी दीसै चढ़ते, एकूकै नै आगे बढ़ते ।
पंथ बणया मारग चढ़णें, भेद सोमनै आया गैरा ।

दोहा — पासा परबत रा जिता, उता रूप, रंग, पंथ ।
धर्म मोंनियो पंथ नै, रचिया न्यारा ग्रंथ ॥ 100 ॥

बिसर्‌या परबत धर्म नै, कह्‌यो पंथ नै धर्म ।
ईश्वर जो दीनो धरम, भूल्या वैरो मर्म ॥ 101 ॥

सोरठा - धर्म सांचै भेद, पूरै परबत चारिंरी ।

देशकाल नहिं भेद, ज्ञान नपारैस्वारैरो ॥

चौ. — प्रभु तो दियौ धर्म थौ, एक पंथ धर्म बणगया अनेक।
एक चढ़ै उत्तर सूं दक्खण, दूजौ दक्खण सूं उत्तर पण।
प्रतिकूलता सामने आई, पंथों में हुय गई लड़ाई।
चोटी लक्ष्य भूलग्या सारा, लड़ पड़िया पथ में वेचारा।
जग में अणपढ़ भगत घणखरा, लाभ न समझै मूढ़ आप रा।
पंथों रा पाखण्डी नेता, वौंनै निज स्वारथ रा चेला।
भोदै भगतों नै भड़काया, उल्टा दे उपदेश लड़ाया।
ईश्वर धर्म दियौ जन-जन नै, आत्मा रौ उद्धार करन नै।

सोरठा— हुवै व्यक्तिगत धर्म, नहिं सामूहिक विषय औ।
सोचो निज रा कर्म, वर्जित दूजौ क्या करै ॥ 102 ॥

पावै फळ प्रत्येक, खुद रै करियै कर्म रा।
काम न आवै एक दूजै रौ करियौ करम ॥ 103 ॥

दोहा — निज रौ मसलौ धर्म है, है आ निजिया बात।
सामूहिक समझै इयै नै, उपजै उतपात ॥ 104 ॥

चौ. — निजिया धर्म, धर्म नहिं न्यारौ, रूप धर्म रौ निजिया धारौ।
कौकर पाळै आप धरम नै, सिरफ समझणौ इयै मरम नै।
कौकर धर्म दूसरौ पाळै, इयै ख्याल नै मन सूं टाळै।
उजर विरोध करै नहिं वैरौ, फिकर न, कई धर्म दूजै रौ।
धर्म परायै रौ हरगिज रौ, टंटौ नहिं बस जौणौ निजरौ।
रूप धर्म रौ निजिया औ है, समझै सच्चौ धरमी बौ है।
निज स्वरूप नै जे खुद जौणौं, दर्शन प्रभु रा हुसी पतौणौं।
निजिया धर्म न न्यारौ कोई, रूप धर्म रौ निजिया होई।

सोरठा— निजिया धर्म बताय, धर्म-विवाद खतम किया।
पंथ-कलह मिट जाय, सर्व पंथ-समभाव सूं ॥ 105 ॥

सर्व पंथ-समभाव, जे मन सूं मोनै नहीं।
सजा मिलै नहिं काव, धर्म न निजिया मोनियौं ॥ 106 ॥

छंद — प्रत्येक पाळो, धर्म खुद, उद्धार आतमा रो करो।
दूजो धरम पाळै, न पाळै, ध्यौन मत मन में धरो।।
जे जुद्ध-झगड़ा, धर्म रै कारण करो तो पाप है।
ओ रूप निजिया है धरम रो, खोय दै संताप है।। 107 ।।

सोरठा—प्रेम शांति निभ जाय, सब पंथोरी प्रजा में।
रोड़ा नहिं अटकाय, पंथों रा पंडा जदी ।। 108 ।।
धर्म तत्व समझाय, ब्रह्म, जीव, जग, कर्म रा।
पंथ प्रक्रिया वताय, जीवन कोंकर जींवणो ।। 109 ।।
तात्विक स्थूल स्वरूप, हुवै सृष्टि अरु करम रा।
पंथ स्थूल दै रूप, तात्विक समझावै धरम ।। 110 ।।

दोहा — विधि, निदान, उपचार अरु ओषध धर्म बताय।
पंथ सख्त परहेज दै, मिल भवरोग मिटाय ।। 111 ।।

सोरठा—धर्म प्रभू रो एक, गुंजायश नहिं भेद री।
यद्यपि पंथ अनेक, सीख सिरीसी भेद नहिं ।। 112 ।।
थोथा भेद वताय, भोदों नै भड़काय दे।
धर्म सटै लड़वाय, पाप करावै, खुद करै ।। 113 ।।

दोहा — न्यारो न्यारो पाळनो, सबनै निजिया धर्म।
सांझेदारी है मना, फळ दै खुदरा कर्म ।। 114 ।।
एक पंथ-निरपेक्षता, दूजो समाजवाद।
समता और स्वतन्त्रता, सबरी बिन अपवाद ।। 115 ।।
शासन रो करियो अपो, वरण रूप गण-तंत्र।
इच्छित चयनित प्रजा रा, शासक प्रजा स्वतन्त्र ।। 116 ।।
संविधान में मान्यता प्राप्त जिका सिद्धान्त।
वर्ष पाँच सौ पूर्व हो, प्रभु थरपिया नितान्त ।। 117 ।।

चौ. — जात-पंथ रा, छुआ-छूत रा, ऊंच-नीच रा, धीव-पूत रा।
बावै सारा भेद मिटाया, रोणेचे में कर दिखलाया।

जिका कौम खुद करिया बावै, नहीं देश रै आया तावै।
संविधान, कौनून बणाया, शून्य नतीजा सौमे आया।
फौज, पुलस, कौनून हारिया, नेताओं स्वारथ सुधारिया।
नेम निभै दरगा में वैरा, भक्त सिरीया सब बाबैरा।
मन सूं भगत निभावै समता, थकी भिन्नता, मन में ममता।
स.ल पाँच सौ सूं मंदर नें, भेद न कोई है नर-नर में।

दोहा — सब आतमायों में हुवै, समता सहज सुभाय।
पैदा बदों में हुवै समता कियों उपाय ॥ 118 ॥
जड़ में प्रगटै असमता, चेतन तो सम सैन।
भेद-भाव जड़ जगत रो, मिटियौं मिलसी चैन ॥ 119 ॥
राज, समाज'र पथ में, करी व्यवस्था आज।
समता री, असफळ हुई, नेता धोखेबाज ॥ 120 ॥
नहीं व्यवस्था तंत्र सूं, समता जग में आय।
समता आयौ भाव री, साम्य सफळ हुय जाय ॥ 121 ॥

सोरठा—सारा जग रा पंथ, समता री उपदेश दै।
पढ़ै पंथ रा ग्रंथ, पण समता आई नहीं ॥ 122 ॥
क्षमता में है भेद, हुवै न समता द्रव्य री।
वै शिक्षा आ वेद, लावौ समता भाव री ॥ 123 ॥
केवळ धर्म समर्थ, भाव सुधरसी जीव रा।
बाकी साधन व्यर्थ, समता आसी धर्म सूं ॥ 124 ॥

दोहा — मिलियों शिक्षा धर्म री, उपजै समता भाव।
भौतिक शिक्षा सूं नहीं, उपजै साम्य लगाव ॥ 125 ॥
ध्यावै सारी जात रा, सं मौनै उपदेश।
भक्त सिरोसा है सभी, भेद-भाव नहिं लेश ॥ 126 ॥
आयत खुदी कुरान री, है मजार पर एक।
सब देखे न विरोध है, पूजे जात हरेक ॥ 127 ॥
भक्ति-भाव मन में वसै बाकी वात्यौ गौण।

देव, पीर, परब्रह्म नै, लेवै भक्त पछौंण ॥ 128 ॥
आप आपरै तरीकै सूं ध्यावै, सब संग ।
एक दूसरै नै नहीं पूछै वैरो ढंग ॥ 129 ॥
निजिया मोनै धर्म नै, भ्रो ज्वलंत दृष्टांत ।
है विरोध नहिं परस्पर, भक्ति करै मन शांत ॥ 130 ॥
सारै पंथों रा भगत, ध्यावै रामा पीर ।
असर न निजरै पंथ पर, छोडै नहीं लकीर ॥ 131 ॥
भाईचारो जगत रै सब पंथों रै बीच ।
बावै री भगती कियों, बढ़ै प्रेम, जळ सींच ॥ 132 ॥
एक दूसरै नै नहीं सकसी पंथ मिटाय ।
पंथ-भेद मिटियों, सुखी, सब ळ जगत हुय जाय ॥ 133 ॥
प्रभु रा रूप अनेक है, मन माफक सब ध्याय ।
बावै री माया अकथ, बरनी कदे न जाय ॥ 134 ॥

छन्द— भगती भोना सब पंथों रा, दरगा में साथै ध्यावै ।
पूजे खुद रै पंथ मुजब, ना कोई पूछै, ना बतळावै ॥
एकूकै री उजर नहीं, सब प्रेम भाव सूं सुख पावै ।
रूप धर्म री निजिया मोनण री मिसाल सौमैं आवै ॥ 135 ॥

चौ.— हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, दरगा में सब भाई-भाई ।
एक दूसरै नै सब देवै, बावै रै प्रसाद सब लेवै ।
पीरों दी पीर री उपाधी, बावै लीनी जणै समाधी ।
बावों हिन्दू पीर कहावै, सब पंथो रा वौनै ध्यावै ।
सारै पंथों रै लोकों री, मिलै एकता सच्ची वौंरी ।
भारत री अखण्डता साधै, वै बातों मदर में लाधै ।
दीन, दुःखी, रोगी, दलितों री सेवा खुद की बाबै वौंरी ।
वावै री जिन्दगाणी सादो, सच्चो शासन समाजवादी ।

सोरठा— निरभय, सुखी, समान, दलितों नै बाबै कियां ।
समाजवाद महान, सच्चो बाबै थरपियो ॥ 136 ॥

दोहा— परजा रा इच्छित, प्रिय, शासक रामापीर।
लोक-तन्त्र री वरण गई, आ सच्ची तसवीर ।। 137 ।।

सोरठा— जन-जन री आवाज, इच्छा रो आदर कियो।
रक्षित, सुखी समाज,, ओ सच्चो गणतन्त्र थो ।। 138 ।।

दोहा— दे मिटाय अन्याय नै, ओ क्षत्री रो काम।
मेटै जिको अभाव नै, वैश्य हुवै सरनाम ।। 139 ।।
लड़ै जिको अज्ञान सूं वो है सच्चो विप्र।
सेवा जो सब री करै, है वो शूद्र पवित्र ।। 140 ।।

चौ.— परब्रह्म री अद्भुत माया, चलतो दरखत है नर काया।
साधारण दरखत रो नीचै, जड़ धरती में दुनिया सींचै।
तणो, डाळ, पता, फळ ऊपर, रै सीधो दरखत धरती पर।
नर-शरीर है दरखत ऊंधो, मूळ, तणो, शाखा, फळ सूधो।
ऊपरलो सिर, मूल तळो है, नीचै पग, अंग ऊपरलो है।
सिर है ब्राह्मण, भाग नीचलो, हिस्सो क्षत्री, वैश्य बीचलो।
नर-तन री शाखा ऊपरली, धरती पर पग ओर पगथळो।
पग है शूद्र भाग ऊपरलो, ऊंधै दरखत, लखो नीचलो।

दोहा— डाळ आखरी पर लगै, फळ अरु फूल हमेश।
बाकी दरखत दे सकै, लाभ नहीं लव-लेश ।। 141 ।।

सोरठा— देणा फळ अरु फूल, सेवा दुनिया री हुवै।
तीनूं वर्ण फजूल, आ सेवा नहिं कर सकै ।। 142 ।।
शूद्र गिणो मत हीण, अंग ऊपरलो विरख रो।
ब्राह्मण ज्ञान-प्रवीण, दरखत रो अग नीचलो ।। 143 ।।

दोहा— पग छूयो ऊंचा हुवै, अंग ऊपरलो जोय।
सिर छूयो नीचा हुवै, अधो-भाग सिर होय ।। 144 ।।
करतब सेवा, शूद्र रो, सब सूं ऊंचो कर्म।
सेवा कर, नर भव तिरै, है सर्वोत्तम धर्म ।। 145 ।।

सोरठा– शूद्र सदा सिरमोर, जग में हुवै समाज रो।
करो बुद्धि सूं गोर, सेवा कर दरजो बढ़ै ॥ 146 ॥

दोहा— करै नौकरी राज री, जन सेवक कहलाय।
दरजो वाँरो शूद्र रो, पण वै ईजत पाय ॥ 147 ॥
वर्णाश्रम री व्यवस्था, करै समाज महान।
ऊंचो-नीचो है नहीं, च्यारुं वर्ण समान ॥ 148 ॥

सोरठा– शूद्रों नै सम्मान, देवण पुजवाया चरण।
सारा वर्ण समान, दुर्बुद्धियों नै सीख दी ॥ 148 (क) ॥

दोहा— सेवा दरखत री करै, बाकी तीनूं वर्ण।
शूद्र करै संसार री, सेवा दै फळ-पर्ण ॥ 149 ॥
सेवा, सूदर रौज दी, आदर करै समाज।
तो विकास, उत्थान हुय, सुखी हुवै सब आज ॥ 150 ॥

सोरठा– पूज्य ठोकर्‌यों खाय, पूजै जिठै अपूज्य नै।
तीन उठै आ जाय, दुर्भिक्ष, मरण, भय ॥ 151 ॥
मरण है अज्ञान, कै दुर्भिक्ष अभाव नै।
तीन तत्व लो जान, भय सूचक अन्याय रो ॥ 152 ॥

दोहा— जब अन्याय, अभाव अरु बढ़ै घोर अज्ञान।
सेवा-भाव मिटै, कपट, स्वारथ-ढ़ोंग प्रधान ॥ 153 ॥
स्वारथ बढ़ै अभाव सूं, कपट करै अन्याय।
बढ़ै ढ़ोंग अज्ञान सूं, सेवा-भाव मिटाय ॥ 154 ॥

छंद — सेवा-धरम री सीख दीनी भरत वा आदर्श है।
सेवा करणियों री करै अभिमान भारतवर्ष है।
सेवा धरम सूं बडो कोई धर्म है दूजो नहीं।
औ पाप है सेवा करणियों नै जदी पूजो नहीं ॥ 155 ॥

दोहा— सेवक/सेव्य विचार बिन, राम-भक्ति नहिं पाय।
सेवा-सेवक नै गिणै, हीण, नर्क में जाय ॥ 156 ॥

करनी सेवा सृष्टि री, है जीवन रो सार।
सेवा रूप अनन्त है, कियौं हुसी उद्धार ॥ 157 ॥

चौ. — वर्ण-भेद सब कौमों रा है, जात-भेद बस नौमों रा है।
हुयग्या दोषों रा निपटारा, बाबै रै शासन में सारा।
वौं अन्याय, अभाव मिटायौ, की सेवा अज्ञान नसायौ।
सब वर्णों नै मार्ग बताया, सिरफ न कैया, कर दिखलाया।
जीत लियो मन वौं परजा रो, भक्त हुयो रौंणेचो सारो।
राम-राज्य री छटा दिखाई, सोरी थी परजा सुखपाई।
हुयो बिछोड़ो जब बाबैरो, दुख सेवणों नहीं तावै रो।
ज्ञान दियो बाबै दे-ढाढस, जी ठैरायौ, वींरौं नहि बस।

दोहा— लियौं समाधी बाद भी, परचा भक्ति बढ़ाय।
बाबै री भगती सदा, दिन-दिन बढती जाय ॥ 158 ॥

माया थौरी अकथ है, हे नेतल रा कंत।
माया तन साकार भी, हुयो अनादि-अनन्त ॥ 159 ॥

औं परचौ सब सूं बड़ो, मिलै न और मिसाल।
परचौ सूं भगती बढ़ै, थौरी दीनदयाल ॥ 160 ॥

सोरठा— अजमल करियौ राज, बाबै नैं प्रिय पोकरण।
छोटो कसबो आज, ना महत्व, नहिं मौनता ॥ 161 ॥

दोहा— बाबै री प्रेरणा सूं, पास पोकरण ज्ञात।
हुयौ भटाको बंब रौ, हुयग्यौ जग विख्यात ॥ 162 ॥

परचौ परतक, प्रभू री, औ है सब नैं ज्ञान।
बिन प्रयास पोकरण नै, दी प्रसिद्धि भगवान ॥ 163 ॥

छंद — माया-भक्ति राम री दोनूं, पण है एक बड़ो अन्तर।
माया दासी, भगती पुत्री, प्रेम घणों प्रभु नै वै पर।
प्रभु रै डर सूं, डरै भक्ति सूं, माया वार करै कौंकर।
कियौं कसूर भक्त री, प्रभु कोपै, माया धूजै थर-थर ॥ 164 ॥

सोरठा— चावै कोई कार, चावै कोई पद हुवै ।
सब समान नर-नार, जात, पंथ, स्थिति कुछ हुवौ ।। 165 ।।
वडो न छोटो कोय, ऊंचो या नीचो नहीं ।
सैन सिरीसा होय, दुनिया रा मौणस जिता ।। 166 ।।
अन्यायी धनवैन, शासक जब शोषक हुवै ।
जुलम करै बलवैन, नेता करै अनीत जब ।। 167 ।।
करुणा बिना न धर्म, न्याय बिना शासन नहीं ।
जुलम करै बेशर्म, लाज नहीं, अंकुश नहीं ।। 168 ।।

दोहा— राज, समाज'र पंथ रा, नेता दुख रा मूळ ।
वै न सुधरियों, ना मिटै दुख, सै जतन फजूल ।। 169 ।।

सोरठा— कैवो नेता कूंण ? राज, समाज'र पंथ रा ।
वौंरी किसी'क जूण? क्या नीती ? क्या आचरण ? ।। 170 ।।

दोहा— नैतिकता, निस्वार्थता, न्याय, नीति, नृत, नेम ।
दूजो खातर, आप रो, वौं बिन योग-क्षेम ।। 171 ।।
आ मोनै, वोनै गिणो नेता निशिचर घोर ।
राज, समाज'र पंथ में, वो पर चलै न जोर ।। 172 ।।
नेता जूंण निकृष्ट है, जनता जौणै नांय ।
वौ नै जे दुत्कार दे, दुःख सारा मिट जाय ।। 173 ।।
सेवा-भावी में तथा नेता में है फर्क ।
सेवा-भावी स्वर्ग में नेता जावै नर्क ।। 174 ।।

सोरठा— नैतिकता, आचार, पर अंकुश सरकार रो ।
बेहक ठेकेदार, पंथों रा रोळा करै ।। 175 ।।

दोहा— आत्मा पर शासन कदे, कर न सकै सरकार ।
तन, जीवन, आचरण पर, शासन रो अधिकार ।। 176 ।।
धर्म पारमार्थिक, दखल दे न सकै सरकार ।
काया रै आचरण पर, अंकुश रो अधिकार ।। 177 ।।

सोरठा– शोषित, दलित पुकार; करै करुण, असहाय हुय ।
प्रभु लेवै अवतार, जुलम मेट, थरपै धरम ॥178॥

दोहा– परम पुरुष प्रगटै, रखै दीन, दलित री लाज ।
निरबल रा बल वै हुवै; बजै गरीबनिवाज ॥179॥
जब-जब हरि अवतार ले, हरयौ भोम रौ भार ।
दलित, पतित, शोषित सदा अपनाया करतार ॥180॥

सोरठा– सबरी तारी राम, कर निषाद, वानर सुखी ।
कुबजा तारी श्याम, ग्वालो री उद्धार कर ॥181॥

दोहा– माया, काया प्रभू री, हुवै अनिर्वचनीय ।
लीला वपु धारै करै, लीला अनुकरणीय ॥182॥

सोरठा– पच्छम धर रौ शाप, बावै प्रगट निवारियौ ।
धरा हुई निष्पाप, दलित, दुखी करिया सुखी ॥183॥

दोहा– करुणा, समता, प्रेम अरु सेवा, पर उपकार ।
भाव लोक–कल्याण रा, राग-द्वेष दै मार ॥ 184 ॥
राग–देष तज आतमा, हुय जड़–विमुख, विरक्त ।
हुवै ईश–सम्मुख, हुवै राम–चरण अनुरक्त ॥ 185 ॥
तत्व-ज्ञान सत्-असत रौ, है मुकती–सोपान ।
असत, अविद्या कर्म रौ, बंधन है अज्ञान ॥ 186 ॥

छंद— तीन जुगों में आर्य–संस्कृति, देव-संस्कृति नै खतरौ ।
पैदा हुंवतौ रयौ राक्षसो री अनीति रौ स्वागत रौ ॥
पतन हुयौ देवों, आर्यों रौ, छोड़ दियौ मारग सत रौ ।
माया तन-धर, मार निशाचर, अंत कियौ प्रभु दुरगत रौ ॥187॥

दोहा– निर्बल, दीन, दलित, अपढ़, है अछूत लाचार ।
पंथ परायों रा हुवै, वो पर प्रथम प्रहार ॥ 188 ॥
वाँरी आस्था धर्म री, बिन भगती डिग जाय ।
बाबै समता, भक्ति दी, म्लेच्छ न सक्या डिगाय ॥189॥

छंद— राम, श्याम अरु रामदेव है, एक अभिन्न, विष्णु अवतार।
है सागी पैलाद तारियो, हुय नर-हरि हिरणाकुश मार॥
है सागी दस कंठ, कँस नैं, मार हरयो धरती रो भार।
है सागी अवतार धार, भैंरूड़ो मार कियो उपकार॥190॥

दोहा— रामेश्वर तीरथ दियो, त्रेता में श्रीराम।
द्वापर में श्रीकृष्ण दो, पुरी द्वारकाधाम॥191॥
बाबै मरुधर नैं दियो, रौणेचो कलि-काल।
तीर्थराज, धोकै भगत, जीवन करै निहाल॥192॥

छंद— सत-सरधा दे, भगती भीना, रौणचै पैदल आवै।
पुण्य मिलै पावन धरती रा, बाबै रा दरशन पावै॥
धार मनोरथ, करै बोलवा, सच्चै नैचै सूं ध्यावै।
आवै रौणेचै तो मनोकामना पूरी हुय जावै॥193॥

सोरठा—मेलो सालो-साल, माघ, भादवै में भरै।
टूठें अजमल लाल, भक्ति भाव नैचै तणा॥194॥
पीर, देव या राम, जिकै रूप ध्यावै भगत।
है सकाम, निष्काम, भगती दीनानाथ री॥195॥
सब री भक्ति कबूल, बाबै नैं कलि-काल में।
माफ करै सब भूलें, नैचो जे सच्चो हुवै॥196॥

दोहा— कोई आडंबर नहीं, घणी खमा, जय बोल।
दरशण करै प्रसाद धर, भगतो रा संग टोल॥197॥

चौ.- मारवाड़, गुजरात, मालवो, उमड़ै मेलै साल-साल वो।
भारत भर रा, परदेशों रा, सब पंथों रा, सब वेशों रा।
दुखी शरण बाबै री आवै, सच्चै नैचै प्रभु नै ध्यावै।
भाव-भक्ति नै बाबो मोने, करदें सुखी भक्त सारों नै।
कलजुग रा कलश जो सारा, भुगतै मौणस सब दुनिया रा।
क्या है कारण वौं कष्टों रा, बाबै भेद बताया वौंरा।

भगतों री वाँसू निस्तारो, कोंकर हुसी, बतायो सारो ।
समता, निजिया धर्म बतायो, पंथो रों सम भाव सिखायो ।
सोरठा– मेट भेद रा भाव, समता दो व्यवहार री ।
इण में रती न काव, नहिं मोनै वै दैत्य है ॥198॥
बावै रा उपदेश, मंदर में मोनै नहीं ।
पावै घोर कलेश, माफी मोंग्यों दुख कटै ॥199॥
कारण श्रौर उपाय, कल रै दुख अन्याय रा ।
भक्तों नै समझाय, बावै सुख री सीख दी ॥200॥
छंद— धर्म-पंथ रै मतभेदों सूं बचो, भक्ति प्रभु री धारो ।
समता, सर्व पंथ-समभाव, धर्म निजिया साधन सारो ॥
प्रभु-सम्मुख हुय, जड़ सूं विमुख हुवो, छोडो थारो-म्हारो ॥
करो लोक-कल्याण, विरक्त हुयाँ करसी प्रभु निस्तारो ॥201॥
सोरठा–हुवै भक्त जो पात्र, बावै रै मारग चलै ।
साधन केवल मात्र, राम-भक्ति रो शिव-भजन ॥202॥
बावै रा उपदेश, भक्ति कियाँ धारण हुवै ।
टूठै जदी महेश, राम भक्ति तव मिल सकै ॥203॥
ज्ञान-स्रोत महादेव, ज्ञान बिना मुगती नहीं ।
शिवरी करियो सेव, ज्ञान श्रातमा नै मिलै ॥204॥
छंद— काग भुपुंडी, मारकण्डेय, अमर करिया शिवदाता है ।
जमरी पाश काट दै ज़ाबक, भक्तों रा भय-त्राता है ॥
शिव सच्चिदानन्द परब्रह्म, सदाशिव विष्णु विधाता है ।
कर त्रिशूल डमरूधारी, भव पिता, भवानी माता है ॥205॥
दोहा— शंकर-भजन बिना नहीं राम भक्ति नर पाय ।
श्रौर रहस्य श्रीराम रो, प्रभु खुद दियो बताय ॥206॥
नरसी पर शिव की कृपा, दिखलायो गो लोक ।
मिली भक्ति गोपाल री, कृष्ण चरण अवलोक ॥207॥
पुरी द्वारका री करी, जात्रा सालो साल ।
शिव री कृपा बिना नहीं, फल पायो अजमाल ॥208॥

काशी पौंच अरज करी, विश्वनाथ आदेश।
दियो आखरी जातरा, फळगी कट्यो कलेश ॥ 209 ॥

छंद — महा पातकी री जिन्दगी, करे पावन शिव पूठी है।
आशुतोष, अवढ़र दानी, शिवजी री कृपा अनूठी है॥
जिके कियो अपमान रुद्र रो, राम-भक्ति भी रूठी है।
शिव नै ध्यायो, शंकर टूठ्यो, राम-भक्ति झट टूठी है॥ 210 ॥

दोहा— जोड़ो शंकर-उमा रो, नर-नारी नै मोन।
दोनूं करो परस्पर, दोनों रो सम्मोन॥ 210 ॥
आत्मा है गिरिजापती, प्राण उमा रा रूप।
वदळै प्राण परस्पर, हुय अर्द्धांग स्वरूप॥ 212 ॥

छंद—जीवन सारो शिवोपासना, इयों समझ में आसी रे।
आत्मा शिव है, प्राण पारबति, रैवै शिव री दासी रे॥
नर-शरीर घर है शिवजी रो, भोग सैन शिव पूजा है।
बोल जिता बोलो जीवन में, शिव स्तोत्र नहिं दूजा है॥
कर्म करो जीवन में सारा, आराधना सदा-शिव री।
नर-जीवन संगम हर-गिरिजा रो है, प्रीति पत्नि-पिव री॥ 213 ॥

दोहा— आदि धर्म ईश्वर दियो, वोई चलै हमेश।
कोई परिवर्तन कभी, कर न सकै लव-लेश॥ 214 ॥
सत्य रूप जो धर्म रो, दीवो प्रभू बताय।
जब लेवै अवतार प्रभु, नयो न धर्म चलाय॥ 215 ॥
राम-बाण रै ताप सूं, मुक्त कियो मरु-देश।
प्रगट्या, की करुणा, करी लीला, दे उपदेश॥ 216 ॥
ब्रह्मा रै कयों रची, रामायण वाल्मीक।
तुलसी नै शिव सीख दी, मानस लिख्यो सटीक॥ 217 ॥
रामदेव-चरित-मानस, बोल लिखायो नाथ।
बूलो तो लिखतो गयो, ज्यों बोल्या, ज्यों साथ॥ 218 ॥

छंद — राम-चरित मानस री लय में, बोल लिखायो मन में बस।
चोपायों दोहों में बावै, रामदेव-चरित-मानस ॥
पढ़सी, गाय सुणासी भगतों नें, वो पासी भगती रस।
चढ़ चौबीस चरण पगोंथिया, राम-धाम जासी मौणस ॥ 219॥

दोहा— पंथ-धर्म रा, दूसरा जो सारा मतभेद।
पाठ इयें रा कर मिटै, मिट जावे सब खेद ॥ 220 ॥

मो लघु-भगती-काव्य है, ग्रंथ धार्मिक होय।
भक्त इयें नें नहि कहै, ग्रंथ धर्म रो कोय ॥ 221 ॥

रामदेव-चरित-मानस, पढ़ै, सुणै मन लाय।
दीनानाथ कृपा करै, भक्ति, मुक्ति नर पाय ॥ 222 ॥

छंद — पाट पुराय, कलश थांपे, करजोत&, धूप, आरती करै।
पाठ अखण्ड करै, जागरण करै, तो निश्चै काज सरै ॥
कर दै कचन रोगी काया, निरधन रा भंडार भरै।
पूत निपूतों पावै, भक्ति भाव, सच्चै मन ध्यान धरै ॥ 223 ॥

सोरठा— छायो भौतिकवाद, जड़ तन नें सब कुछ गिणें।
सत स्वरूप नहि याद, आतमा नें न महत्व दे ॥ 224 ॥

दुख जुल्मों री मूळ, आइज जड़मति आज है।
कोंकर सुधरै भूल, नहि विवेक सत-असत रो ॥ 225 ॥

ज्ञान सृष्टि में एक, आत्मा-परमात्मा तणों।
कर्म विभिन्न अनेक, जिस्म-जिन्दगी रा हुवै ॥ 226 ॥
धर्म जिकै सूं एक, भेद असम्भव धर्म में।
प्रगट्या पंथ अनेक, पण है शिक्षा एक सी ॥ 227 ॥
आत्मा रै विज्ञान, री शिक्षा अनिवार्य है।
गिणसी जणै महान, आत्मा नें जड़ देह सूं ॥ 228 ॥
उगटै जे मत-भेद, पंथ गिणो नहि धर्म है।
तत्व ज्ञान दै वेद, पंथ-धर्म रै भेद रो ॥ 229 ॥

दोहा— का पंथा: रै प्रश्न रो, उत्तर कैवे सार।
धर्म-पंथ रै भेद रो, समभो सब नर नार ॥ 230 ॥

सोरठा— भारत ऐसो देश, धर्म-पंथ सारा अठै।
संस्कृति इसो विशेष, सर्व-समन्वय सहज है ॥ 231 ॥

नेता पंडा क्रूर, करै एकता में विघन।
वौनै राखो दूर, हुसो सुखी सब एक हुय ॥ 232 ॥

नहिं धर्म में समूह, नेता हुवै न धर्म रा।
धर्म सुधारै रूह, विषय व्यक्तिगत धर्म है ॥ 233 ॥

सामूहिक नहिं मुक्ति, हुवै साधना व्यक्तिगत।
सत्य सर्वथा उक्ति, धर्म सदा निजिया हुवै ॥ 234 ॥

समभो सच्चो मर्म, सामूहिक तो पंथ है।
मुगती साधन धर्म, धर्म हुवै निजिया निपट ॥ 235 ॥

सुणो जिताई धर्म, न्यारे-न्यारे नाम रा।
ज्ञान और सत्कर्म, दोय भाग प्रत्येक रा ॥ 236 ॥

ज्ञान-भाग है धर्म, सकर्म भाग सब पंथ है।
समभो सच्चो मर्म, धर्म-पंथ रै भेद रो ॥ 237 ॥

ज्ञान और सत्कर्म, मिलिया पौंणी दूध ज्यों।
दोनूं बाजे धर्म, पण है तात्विक भिन्नता ॥ 238 ॥

धर्म रो विषय ज्ञान, कर्म विषय है पंथ रो।
ज्ञान मुक्ति सोपान, कर्म सफळ जीवन करै ॥ 239 ॥

मुगती-साधक ज्ञान, कर्म मुक्ति बाधक हुवै।
कर्म स्वय अज्ञान, पण है साधन ज्ञान रो ॥ 240 ॥

दोहा— गौंठ वौंधलो, सीख दो, समता री प्रभु आप।
भेद-भाव छोड़ो, करो भक्ति, कटै सब पाप ॥ 241 ॥

जड़ सृष्टी में समभलो, समता कदै न होय।
देखो चावो, रूह में, रब में देखो जोय ॥ 242 ॥

अधि भौतिक, अधिदैविक, अध्यात्मिक ऐ तीन ।
दृष्टिकोण समझो, इसो तात्विक ज्ञान प्रवीन ।। 242 (क) ।।

सोरठा– प्रभु लेवे अवतार, दीसै जग में व्यक्त सा ।
माया अपरंपार, लीला भापै प्राकृत ।। 243 ।।
सरल समझणो सार, निर्गुण रो ज्ञानी लखै ।
अगम रूप साकार, समझै विरला भक्त ही ।। 244 ।।

दोहा— बाबै रै उपदेश पर, चालै जे संसार ।
तो सोरो, सोरो मिलै, सब नै दुख रो पार ।। 245 ।।
परचा दीनानाथ रा, देखै सारा भक्त ।
नुगरा भी सुगरा हुवै, हुय भगती आसक्त ।। 246 ।।
राम-रूप परब्रह्म है, सुमरै मुगती पाय ।
देव-पीर ध्यायों, मनोकाम सफळ हुय जाय ।। 247 ।।

सोरठा– गई लिखीज किताब, क्योंकर ? खुद हैरान हूं ।
म्हारी इसी न ताब, औ है परचो प्रभु रो ।। 248 ।।
नेता या सरकार, रो न अठीनै ध्यान है ।
थोथो करै प्रचार, दूजै स्थानों रा वृथा ।। 249 ।।

दोहा— फैल रयो पाछो जुलम, खाय हाथ नै हाथ ।
बूलै रो हेलो सुणो, आवो दीनानाथ ।। 250 ।।

॥ ॐ ॥
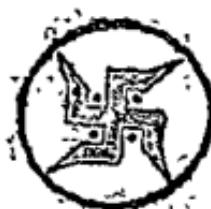
श्री रामदेवाय नमः

परचा-पचीसी

(1)

आरत-भारत आहि पुकारत, आप उबारत दीन दुखारो ।
च्यारं दिशायों सूं खम्मा घणी, करतो संग भक्तों रो आय अपारो ॥
छूत-अछूत रो, ऊच रो-नीच रो, जातो रो-पंथ रो भेद निवारो ।
को नहिं जानत हैं जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारों ॥ 1 ॥

(2)

बोजड़ो के अणख्यो अजमाल ने, कीयो किसोणों अनादर भारी ।
भक्त लियो हठ द्वारिका जाय के, कूद्यो समन्दर, आन उबारो ॥
सायर रो, अजमाल रो मेटियो, बोझपणो, बर दीनो सुखा रो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु द्वारिकानाथ प्रताप तिहारों ॥ 2 ॥

(3)

बाळक पालणे देखिया दोय, मैणादे अपार अचंभो बिचारो ।
दोनूं थणों सूं ईं दूध री धार्यों चली खुद, दोनों रे मूंडों में डारो ॥
पालणें पोढियों बांय पसार, उफणते दूध रो ठोंव उतारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पोर प्रताप तिहारो ॥3॥

(4)

बाळपणै हठ भाल मंगायो, घोड़ो कपड़े रो सुंवांवणो प्यारो ।
बैठत अश्व अकाश उड्यो, डरिया, दरजीड़े ने कैद में डारो ॥
घोड़े समेत जमीं पर आय, दुखी दरजीड़े रो संकट टारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥4॥

(5)

बाळकनाथ सराप दियो, भयो भैरूंड़ों राखस घोर हित्यारो ।
सांतळमेर रो बारें कोसों में भैंरूंड़े इलाको उजाड़ियो सारो ॥
ले अवतार, भैंरूंड़े नें मार, कियो करतार उधार धरा रो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥5॥

(6)

बोय तो पाय आदेश, गयो परदेश, बौपार अति विसतारो।
माया अथाग ली ज्याज में लाद, तोफान में मौत रो दीस्यो नजारो॥
टेर सुणी प्रभु खेलते चौपड़, खींचियो ज्याज, बोरखो धारो।
को नहिं जानत है जग नें प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो॥6॥

(7)

अमृत सो जळ जौंभा सरोवर, रो हुयो आपरे कौवते खारो।
जौभे जी आय के राम सरोवर पौंणी रे तोड़े सूं कीनो वंकारो॥
काढ़ पताळ रो पौंणी दियो जणे, जौंभा सरोवर आप सुधारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो॥7॥

(8)

स्वारथियो लुकियो डर पीरों सूं, सौंप लियो डस स्वर्ग सिधारो।
पीर जीवाय नहीं सकिया, दियो हेलो बाबे उठ जींवण धारो॥
सिद्धी सूं पीर हैरान हुया जणे बाबे ने पीरों रो पीर उचारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो॥8॥

(9)

बाळध लेय भरी मिसरी रो रौणंचे में आयो लाखो बंणजारो।
दौंण मारण ने लूंण बतायो, बाबे कियो माल ने लूंण सो खारो॥
लूंण रो पाछो करी मिसरी, कियो माफ, लाखे रो कियो निस्तारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो॥ 9॥

(10)

दंभ कियो पड़िहारों, राईके ने टेर कूए में दियो दुख भारो।
मेलों सूं टेर करी सुगनो, रतने बिरलाय कुए सूं पुकारो॥
पूगल् पौंच परास्त किया, पड़िहार राईके रो कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो॥ 10॥

(11)

पीवर जात लियो सुत साथ कियो सुगनो हठ सासू उचारो ।
जांवते गोदी भरी बहू आंवते खाली हुसी कियो बज्र प्रहारो ॥
भोंणू शरीर तज्यो, कलपी सुगनो, दियो जीवण दीन जियारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 11 ॥

(12)

मोंगी कन्या हिंगलाज देवी सूं, सोढे दलजी तप कीनो अपारो ।
रुक्मण री अवतार कन्या हुई, थी पण पोंगली, थी दुख भारो ॥
नेतलदे वर पायो बावे नै, हुयो तन कंचन छूवत सारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 12 ॥

(13)

नेतलदे री सहेल्यों ठठो कियो, मूंई बिल्ली ढ़क थाल संवारो ।
थाल उगाड़ते दौड़गी बिल्ली, मैंलों में बिल्लयों कियो शोर अपारो ॥
साल्यों करी बिनती वर सूं, जणे माया समेट हरयो डर भारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 13 ॥

(14)

वीरमदेव री गाय सुंवांवणी, थो बछड़ो इक सुन्दर प्यारो ।
प्राण दिया बछड़े कलपी गऊ, वीरमरोंणी बावे नै पुकारो ॥
आय जीवाय दियो बछड़ो, पण लेसो समाधी, लियो व्रत भारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 14 ॥

(15)

डाली थी भक्त अनन्य बाबेरी, समाधी खोदावते बोल उचारो ।
दोनूं समाध्यों में नीकली चीज्यों डाली री कैयोड़ी अचंभो अपारो ।
भक्तरी लाज रखे भगवान बावे दियो डाली नें गौरव भारो ।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 15 ॥

(16)

आप समाधी ली राखिया साथै तीनूं नग लोकों आंख्यों सूं निहारो।
चीर गेडियो, रतन कटोरो, अभय अंचलो ले हरखू थांरो ॥
आयो रुणेचै में, देखते सैन हैरान हुया, मन संशय भारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 16 ॥

(17)

दे दरसण भाटी हरजी नै, दी अक्षय झोली अभाव निवारो।
च्यारूं दिशायों में गांवती मैमा बाबैरी जोधोंणै में भक्त पधारो ॥
हाकम कैद कियो हरजी नै, दियो परचो प्रभु संकट टारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 17 ॥

(18)

सेठ-सेठोंणी करी सुत कामना, बोलवा बोल थोंरो व्रत धारो।
कामना पूरी हुई सुत पाय, रोणेचे नै मुंडन सारू सिधारो ॥
सेठ नैं मारियो डाकू, पधारिया आप, जिवाय के कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 18 ॥

(19)

पोंचसौ साल आगूंच बतायो, बाबै पथ हिन्द नै मंगलकारो।
छूत-अछूत रे, ऊंच रे-नीच रे, जाती रे-पंथ रै, भेद नै टारो ॥
नेम निभै दरबार में बाबै रै देश निभाय न सकियो सारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 19 ॥

(20)

राज कियो अजमाल पोकरण में, इयै खातर बाबै नै प्यारो।
बाबै रो प्रेरणा सूं विस्फोट हुयो उठै, आज जोंणे जग सारो ॥
देश-विदेश में फैलियो नोंव, पोकरण गौरव पायो अपारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥ 20 ॥

(21)

धर्म है एक, सै पंथ सिरीसा, बाबै उपदेश दियो हितकारो।
पीरों रै पीर री पाई उपाधी, समाधी लेवण री सार विचारो ॥
एकता हिन्दू मुसलमोनों री पढ़ायके बाबै कियो उपकारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥21॥

(22)

रोगी गरीब दुखी दलितों री सेवा में बीतायों थों जींवण सारो।
आदर्श शासन साचो समाजवादी र पंथ-निरपेक्ष थो थांरों।
तीनू मिटाया अन्याय, अभाव, अज्ञान आनंद री बाज्यो नगारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥22॥

(23)

धर्म री लोप, अधर्म री कोप, प्रजा दुख दर्द सूं त्राहि पुकारो।
भक्त उद्धारण, दुष्ट संहारण कारण, बाबै लीला-वपु-धारो ॥
धर्म जमाय अधर्म गमाय, थौं पच्छम भोम री भार उतारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥23॥

(24)

द्वारकानाथ रा थे अवतार, लीलूड़ो गरुड़री है अवतारो।
डाली नेतल राधा रूकमण है, सोदरा सुगनो री तन धारो ॥
अजमल नंद, मैणादे जशोदा, रोंणेचो है द्वारका मरुधरा रो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥24॥

(25)

खम्मा करै, जै जैकार करै, भरै मेळो भादूड़े में माघ में भारो।
तीरथराज रुणेचो है भक्तों रा तीनूं ई ताप निवारण हारो ॥
भोजक चूली करै अरदास, बाबा भवसागर पार उतारो।
को नहिं जानत है जग में प्रभु रामशा पीर प्रताप तिहारो ॥25॥

ॐ

छावली रामा राजकुमार री

रामा राजकुमार, करो दया रामा राजकुमार, करो दया रामा राजकुमार।
पूरण, परब्रह्म, अविनाशी, परमेश्वर साकार।
द्वारकानाथ, भगत वच्छल, आया-माया तन धार। करो दया रामा...॥1॥
अजमल घर प्रगट्या प्रभु पलने, रामदेव अवतार॥
मेणादे री भरम मिटायो, तपतो ठौंव उतार॥ करो दया रामा......॥2॥
कपड़ो चोर कियो रूपै दरजी घोड़ो तैयार।
चढ उड्डिया असमौन, कैद हुयो, आप कियो उद्धार॥ करो दया रामा...॥3॥
खेच थक्यो, पण देत न पायो वै गुदड़ी रो पार॥
गुरु इज्ञा पाई, बावै कियो भैरू रो संहार॥ करो दया रामा...॥4॥
रातू रात बस्यो रोणैचो, इचरज हुयो अपार॥
मिसरी नमक, नमक मिसरी कर, लाखो लियो उबार॥ करो दया...॥5॥
ब्याज खींचियो, सेठ बोयतै की जब करुण पुकार॥
हाथ उठाय बोरखो लीनो, आप गलै में धार॥ करो दया रामा...॥6॥
राईकै ने आप बचायो, पूगल तुरंत पधार॥
पड़िहारों री दंभ मिटायो, सुगनो रा सुख-सार॥ करो दया रामा...॥7॥
भाणू प्राण दिया, कलपी सुगनो, विलखी बेनार॥
हेलो देय जिवायो भाणू, नैतल रा भरतार॥ करो दया रामा...॥8॥
बछड़ो मुओ जिवा कियो गउ-भाभी रो उपकार॥
बोल किया साचा डाली रा, अमर हुई संसार करो दया रामा...॥9॥
कैद हुयो हरजी, परचो दियो, हाकम मौनी हार।
सेठ दलै ने आय जिवायो, डाकू दीनो मार॥ करो दया रामा...॥10॥
स्वारथियै ने आप जिवायो, पीर हुया लाचार॥
आसण बधियो, ठौंव मंगाया, मक्कै सू करतार॥ करो दया रामा...॥11॥
केसरिया बागो तन सोवै, तुरवै तार हजार॥
कर विच झालो छाजे प्रभु रै, लीलूड़ै असवार॥ करो दया रामा...॥12॥
न्याव भँवर में है बूले री, बोझो पाथर भार॥
हेलो सुणी रुणेचै रा धणियो, करो बेड़ो पार॥ करी दया रामा...॥13॥

॥ ॐ ॥

अरदास

बावै सुणी, सुणै है बावो, बाबो सुणसी हेलो रे।
राम, कृष्ण अरु रामदेव रो शरणों भगतों थे लो रे॥ 1 ॥
वैरी भगती करियाँ माया डरसी, निरखे खेलो रे।
वो तिरलोकीनाथ गुरु बणजावो वैरो चेलो रे॥ 2 ॥
ओर आसरा सैन छोड, वैरे चरणों ने झेलो रे।
दोनूं लोक सुधारण वाळो दीनानाथ अकेलो रे॥ 3 ॥
वैरी भगती कर भगतों, जीवण रो लावो लेलो रे।
केसरिया बागो, लीलै असवार, हाथ में सेलो रे॥ 4 ॥
दुखी सुखी, रोगी निरोग, रंकों रे धन रो रेलो रे।
पूत वाँजड़ा पाय, रखो समता, मत इशा पेलो रे॥ 5 ॥
तिरसो भव-सागर सूं, वैरो नीम हृदय सूं जेलो रे।
बाबो सुणलै, जनम-मरण रो, निश्चै मिटै झमेलो रे॥ 6 ॥
दुनिया रे धन-कंचन नै मानो मिट्टी रो ढेलो रे।
भक्ति सुहागो, सत-संगत सोनो, साधन अलबेलो रे॥ 7 ॥
माया रचियो, मन चंचल, वस में न हुवे बिगड़ैलो रे।
मत बिलमाया माया में, भगतों मत कड़खे मेलो रे॥ 8 ॥
माया मीठी, भगती कड़वी, लागै जिसो करेलो रे।
बूलो बिनवै, भगतो भगती कर माया नै ठेलो रे। 9 ॥

बावै री मैमा

देखो रे दुनिया रा बंदो, बावो दीन दयालो है।
राम रुणेचै वाळो है, घनश्याम रुणेचै वाळो है॥ 1 ॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन्यों रो रखवाळो है।
अल्ला, गोड, ब्रह्म, अरिहन्त, एक ओंकार कृपालो है॥ 2 ॥

वैरी माया, जीव सैन उपजाया, वो प्रतिपालो है ।
सब सूं प्रेम सिरीसो राखै, वो बाबै नै बालो है ॥ 3 ॥
तीन जुगों में एक, अभेद धरम थिर राखणवालो है ।
पंथ-भेद प्रगटिया कलू में बदळगगो सो, ढ़ाळो है ॥ 4 ॥
बढ़िया भेद अनेक पड़यो दुखो, जुलमों सूं पालो है ।
माया तन धर समता रो व्यवहार सिखावण वालो है ॥ 5 ॥
काम-क्रोध री आँख्यों रै आडो माया री जालो है ।
बाबै नै भजलो माया री, पड़दो काटण वालो है ॥ 6 ॥
दीन, दुखी, रोगी, दलितों री सेवा, धरम निरालो है ।
पर उपकारी भगत पुकारै आवै नेजे वालो है ॥ 7 ॥
प्रभु खुद रा कसूर नहिं मानै, माफी देणे वालो है ।
भगतों रा कसूर कर देखो, कदेन देवै टालो है ॥ 8 ॥

॥ ॐ ॥

प्रार्थना

राजा राम हुया त्रेता में, द्वापर में गोपाल हुया ।
रामाराजकुमार कळू में, अजमलजी रा लाल हुया ॥ 1 ॥
पुरी अजोध्या री त्रेता में, ब्रज, गोकल रो द्वापर में ।
मरुधर री कळजुग में, मैमा फैलाई दुनियाभर में ॥ 2 ॥
कोशल्या त्रेता में, द्वापर में देवकी हुई जननी ।
मैणादे माता कळजुग में, हरि-किरपा री पात्र बनी ॥ 3 ॥
त्रेता जुग में दशरथ पायो, द्वापर में पायो वसुदेव ।
अजमल कँवर हुया कळजुग में, पायो हरि रो पुत्र सनेव ॥ 4 ॥
रावण ने मार्‌यो त्रेता में, कंस मारियो द्वापर में ।
कळजुग में भैरू‌ड़ो मार्‌यो, जस विस्तार्‌यो जगभर में ॥ 5 ॥
मारुत सुत त्रेता में पाई, द्वापर मे राधा पाई ।
हरि री निरमल भगती पाई, कळजुग में डाली बाई ॥ 6 ॥

त्रेता में आई सीता, द्वापर में रुकमण देह धरी ।
नेतलदे कळजुग में आई, लीला हरि रे संग करी ॥ 7 ॥
त्रेता में मरजाद, भाव-समता दीनी द्वापर जुग में ।
समता व्यवहार रो द्वारकानाथ बताई कळजुग में ॥ 8 ॥
त्रेता में लीला की, द्वापर में गीता रो ज्ञान दियो ।
कळ. में परचा मूढो ने दे भक्तों रो उद्धार कियो ॥ 9 ॥
त्रेता में रामेश्वर तीरथ, द्वापर में द्वारकापुरी ।
कळजुग में तीरथ रीणेचो तीनूं है धर्म री धुरो ॥ 10 ॥
बूले नै अभमीन एक, हूं सेवक, दीनानाथ धणी ।
चरण-कमल हिड़दे मेंरैवे निरमल भक्ति बणी ॥ 11 ॥
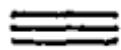
दिया प्रभू ने निजिया धर्म

सत्य तुंही है, ज्ञान तुंही है, तूंही तो प्रभु है आनन्द ।
तूं प्रकाश, सब रूप तुंही, सब नाम तुंही, पर माया फंद ॥ 1 ॥
व्याप्त तुंही, अव्याप्त तुंही है, व्यक्त तुंही, अव्यक्त तुंही ।
दीनानाथ प्राप्त तूंही है, करुणा सागर त्यक्त तुंही ॥ 2 ॥
तैने आँखें दी पर मैंने माया की पट्टी बांधी ।
तैने चेतन शांत रचा, पर मन में ममता की आंधी ॥ 3 ॥
एक देखने योग्य तुंही, पर नहीं देखता मैं तुझको ।
तुंही समझने योग्य एक, पर नहीं समझता मैं तुझको ॥ 4 ॥
आत्मोद्धार हेतु दे धर्म, रचा है तूने तन-मानव ।
धर्मांधता विवश हो उससे बन जाता है नर दानव ॥ 5 ॥
निज की धर्म पालना परखे, कहते इसको निजिया धर्म ।
कौन दूसरा कैसे धर्म पालता, मत देखो यह मर्म ॥ 6 ॥
दे सामूहिक रूप धर्म को, करते हैं अधर्म सारे ।
धर्म ईश का उसको तेरा, मेरा कहते हत्यारे ॥ 7 ॥
करते हैं अन्याय अधर्मी, लेकर नाम धर्म का वे ।
तेरे दिये धर्म से ऐसे कर्म नहीं हो सकते ये ॥ 8 ॥

धर्म एक है, लक्ष्य एक है, पंथ अनेक बताये हैं ।
गुरुओं ने, पर गुरु-पंथी बेसमझ गलत भरमाये हैं ।। 9 ।।
पंथ भेद ने सुख दुःखों के द्वंद्व रचे हैं दुनिया में ।
ठेकेदार धर्म के, उनसे जुल्म मचे हैं दुनिया में ।। 10 ।।
तेने माया-तन धारे, जग को मारग दिखलाने को ।
कल्पित पंथी खुद बन जाते ईश, अधर्म चलाने को ।। 11 ।।
बच नहिं सकते उनसे, मूंढो की दुनिया में ताब नहीं ।
अन्य बात दुनिया में प्रभु इससे है अधिक खराब नहीं ।। 12 ।।
धर्म पहाड़ एक है, चोटी लक्ष्य एक है भक्तों की ।
भिन्न मान्यताएं चढ़ने की पंथों के आसक्तों की ।।13।।
पासे हैं अनेक पर्वत के दशों दिशाओं के सन्मुख ।
घेरे खड़े भक्त परवत को सारे एक लक्ष्य उन्मुख ।।14।।
परबत के अनेक पासे न्यारे रंग, रूप दिखाते हैं ।
ये विभिन्नताएं माया की भक्त समझ नहिं पाते हैं ।।15।।
चढ़ते हैं प्रतिकूल दिशाओं से, प्रतिकूल पंथ लगते ।
प्रतिकूलता इसी के वश, मारने परस्पर वे भगते ।।16।।
दल चढ़ता है दक्षिण से उत्तर को एक दिशा उसकी ।
दूजा उत्तर से दक्षिण को चढ़ता भिन्न दिशा उसकी ।।17।।
भूल लक्ष्य देकर महत्व पंथ को भटकते है सारे ।
लक्ष्य भ्रष्ट हो, मान पथ को धर्म, अटकते बेचारे ।।18।।
ठेकेदार धर्म के दोषी हैं इस अवगुण के जग में ।
दे उल्टे उपदेश, लगाते उनको वे उल्टे मग में ।।19।।
तेरी यह माया कलजुग की, पार न कोई पाता है ।
मक्कारों के फंदे में फंस, जीवन खो पछताता है ।।20।।
अर्ज द्वारकानाथ दयाकर भक्तों को सन्मति देवो ।
उनकी नैया फसी भँवर में, डाड हाथ में ले खेवो ।।21।।
बूला दास अनन्य आपका, हेला बाबा संभालो ।
मैं अक्षम, हूं शरण आपकी, देभगतों फेरा टालो ।।22।।

ॐ

आरती अजमललाल री

ॐ जय अजमल लाला, हो बाबा राम रुणेचे वाला ।
भक्तों के रखवाला कर सोहे भाला ॥ॐ जय अजमल लाला ॥1॥
राजा राम हुय त्रेता में, द्वापर गोपाला ॥ हो बाबा द्वापर गोपाला ॥
रामा राजकुमार पधार्या कलिकाला ॥ॐ जय अजमल लाला ॥2॥
अल्प रजोगुण, घणो तमो गुण छायो विकराला ॥ हो बाबा छायो....॥
लोप सतोगुण, बंदा माया मतवाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥3॥
कलजुग में अज्ञान, सकामी भक्ति करणवाला ॥ हो बाबा भक्ति....॥
दे परचा नुगरो ने सुगरा कर डाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥4॥
जात-पंथ रा, छुआछूत रा भेद हरणवाला ॥ हो बाबा भेद हरणवाला ॥
दे शिक्षा समता री, भय-संकट टाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥5॥
दीन दुखी, रोगी, दलितों नैं सुध ले संभाला ॥ हो बाबा सुध ले सभाला ॥
भक्त सिरोसा करिया, सै फेरे माला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥6॥
सत चढ़िया भक्तों रा मेलै संग आवै पाला ॥ हो बाबा सग आवै पाला ॥
घणी खमा, जय बोलै, छूटै जंजाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥7॥
मंदर में सब राखै समता, पिये प्रेम प्याला ॥ हो बाबा पिये प्रेम प्याला ॥
सब पंथों रा ध्यावै, संग बोलबाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥8॥
अजमल कंवर हुया मैणादे माता रा लाला ॥ हो बाबा माता रा लाला ॥
भक्त तार धरती रा भार हरणवाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥9॥
नेतल रो तन कंचन करियो पैरी वरमाला ॥ हो बाबा पैरी वरमाला ॥
सुगनो दुखियारी री गोद भरणवाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥10॥
ज्याज सेठरी खींच्यों धारी हीरों री माला ॥ हो बाबा हीरों री माला ॥
मिसरी नमक, नमक मिसरी करनै वाला ॥ ॐ जय अजमल लाला ॥11॥
स्वारथियो जीवायो, संकट माता रा टाला ॥ हो बाबा माता रा टाला ॥

पीरों नै दे परचा, पीर बजरणवाला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।12।।
वचन प्रमाण किया डाली रा, अमर करी बाला ।। हो बाबा अमर करी ।।
हरजी नै दी भगती, रची भजनमाला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।13।।
रूपे दरजी कपड़ो चोर्यो, हुयग्यो बेहाला ।।-हो बाबा हुयग्यो बेहाला ।।
उतरया आँगण प्रभु संकट काटणवाला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।14।।
तुंअर वंश रा हुया सूर्य, जग करिया उजियाला ।। हो बाबा करिया ।।
कलजुग में निभणे री, दी शिक्षा आला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।15।।
तन केसरिया बागो, कर में धजा बंद भाला ।। हो बाबा धजाबंद ।।
लीलूड़े असवारी, संतन प्रतिपाला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।16।।
सुगनो बाई करै आरती, ले कर में थाला ।। हो बाबा ले कर में थाला ।।
बूले रा भव बंधन, काटो किरपाला ।। ॐ जय अजमल लाला ।।17।।